स्वप्न-विज्ञान

स्वप्न क्यों और कैसे दिखाई देते हैं, उनका क्या
अभिप्राय होता है और मनुष्य के भावी-
जीवन की घटनाओं से उनका क्या
संबंध है, इन्हीं सब बातों को
इस पुस्तक में अच्छी तरह
समझाया गया है।

लेखक

डा० गिरीन्द्र शेखर

अनुवादक

पं० दुर्गादत्त जोशी

किताब-महल,

ज़ीरो रोड, प्रयाग

प्रथमबार

प्रथम संस्करण, १९४२

प्रकाशक—किताब-महल, ५६-ए, ज़ीरो रोड, प्रयाग
मुद्रक—भक्तसज्जन, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग

प्रिय

श्री स्वरूपनारायणजी, बी० ए०, एल-एल बी०,

रईस तथा फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट, सीकर

के

कर-कमलों में सादर और सप्रेम
समर्पित

—अनुवादक

सूची

पुस्तक-परिचय

लेखक—अध्यापक श्री अमूल्य चरण विद्याभूषण, सम्पादक "बङ्गीय महाकोष"

यह पुस्तक काव्य नहीं है, मनोविकलन-शास्त्र है। यह मनोविकलन शास्त्र के जिस अंग से सम्बन्ध रखती है उसका गिरीन्द्र बाबू ने नया नाम निकाला है—निर्ज्ञान-विद्या। अभी तक स्वप्न केवल कवियों की सम्पत्ति थी। अब इस क्षेत्र में मनोवैज्ञानिकों ने प्रवेश किया है। दखल अच्छा जमा है। आज मनोवैज्ञानिक के अध्ययन में 'अवास्तव, अद्भुत, अजनबी स्वप्न-राज्य'—का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

मनोवैज्ञानिक जगत में डा॰ गिरीन्द्र शेखर का नाम सुपरिचित है। उन्होंने "रुद्ध इच्छा सम्बन्धी सिद्धान्त" (Concept of Repression) लिखकर मनोविकलन के प्रवर्त्तक प्रोफेसर फ्रयेड की दृष्टि आकर्षित की थी। आज वे साइको-एनालिटिक सोसाइटी की भारतीय-शाखा के सभापति हैं और उनके विपरीत इच्छा-विषयक सिद्धान्तों ने मनोवैज्ञानिक जगत् में यथेष्ठ प्रसिद्धि प्राप्त की है।

पुराने मनोवैज्ञानिकों ने केवल मन की सज्ञान अवस्था की क्रिया और क्रिया फल का ही वर्णन किया है। फ्रयेड ने देखा कि मन की जैसे एक सज्ञान अवस्था है वैसे ही एक निर्ज्ञान अवस्था भी है। केवल यही नहीं है, वह सज्ञान अवस्था अनेक प्रकार से निर्ज्ञान अवस्था के द्वारा ही नियन्त्रित है। बहुत जाँच-पड़ताल और छान-बीन के फल-स्वरूप यह मत मनोवैज्ञानिक भित्ति पर सुप्रतिष्ठित हुआ है। मनोवैज्ञानिक जगत् में युगान्तर उपस्थित करने के कारण फ्रयेड का नाम जगत्-विख्यात हो गया है।

स्वप्नों की छान-बीन करने पर हमें इस मानसिक निर्ज्ञान का परिचय मिलता है। इस पुस्तक में गिरीन्द्र बाबू डा० फ्रयेड की स्वप्न-सम्बन्धी गवेषणा और दूसरे कई मनोवैज्ञानिकों के मतामत की आलोचना करके ही नहीं रह गये हैं; उन्होंने अपने मत और मन्तव्य भी स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किये हैं। उन मन्तव्यों का मूल्य कम नहीं है।

पश्चिम के किसी भी देश की तुलना में भारतवर्ष में वैज्ञानिक गवेषणा नहीं के बराबर हुई है। डा० गिरीन्द्र शेखर जैसे विद्वान् को इस कमी को दूर करने के लिए आगे बढ़ते हुए देखकर प्रसन्नता होती है। वह केवल गवेषणा करके ही नहीं रह गये, परन्तु उसे देशी भाषा में प्रकाशित करने का साहस भी उन्होंने किया है। लेखक साहसी है, तभी तो उन्होंने बिना किसी हिचकिचाहट के अधिकांश स्वप्नों के मूल में रहनेवाली कामज इच्छा का स्पष्ट रूप से परिचय दिया है।

इस कामज इच्छा का विश्लेषण करते हुए मनोवैज्ञानिक लेखक ऐसे सिद्धान्तों पर प्रकाश डालता है, जिन का आभास पाकर साधारण मनुष्य सिहर उठेगा, जो अतिरिक्त पवित्रता-धर्मी (Puritans) हैं वे कानों में उँगली डाल लेंगे और जो बोधहीन हैं वे क्रोध से अधीर हो जायँगे।

पहले विद्वान् कहा करते थे कि स्वप्न अमूलक चिन्तामात्र है। आजकल के मनोवैज्ञानिक उसे छोड़ने वाले नहीं, वे अमूलक स्वप्न के मूल की खोज करने में लग कर मन के अज्ञात प्रदेश में जा घुसे है। वहाँ जाकर उन्होंने देखा कि इतने दिन तक सभ्य मानव-समाज यह सोचकर निश्चिन्त हो रहा था कि हमने बलवान प्रवृत्तियों को नष्ट कर दिया है, किन्तु नहीं, वे ही भीषण प्रवृत्तियाँ निर्ज्ञान के अन्धकार मे छिप कर मनुष्य को इस श्रेणी के स्वप्न और कार्यों की ओर प्रेरित करती हैं। स्वाधीन इच्छा का दम्भ वृथा है। मनुष्य प्रवृत्ति का दास है।

गिरीन्द्रशेखर के मत से स्वप्न में हमारी अतृप्त इच्छा चरितार्थ होती है। इस हिसाब से स्वप्न निरर्थक नहीं है। (Free-Association Method) लेखक ने स्वप्न विश्लेषण में फ्रयेड-प्रवर्तित अबाध-

भावानुसङ्ग-क्रम की वर्णना और व्याख्या की है। ऐसा कठिन विषय ऐसी सरलता से समझाना कम बुद्धि का काम नहीं है। इस पद्धति के प्रयोग से मन के गुप्त-भाव व्यक्त हो जाते हैं और उससे स्वप्न का अर्थ भी प्रकट हो जाता है।

लोग कहते हैं कि मन के अनजान में पाप नहीं होता किन्तु मनोवैज्ञानिक प्रमाणित करते हैं कि हमारे मन के बहुत से अगोचर पाप अज्ञात इच्छा के रूप में छिपे हुए हैं। मन की रुद्ध इच्छा ही स्वप्न में काल्पनिक तृप्ति लाभ करती है। सामाजिक, नैतिक आदि कई बाधाओं को पार करके व्यक्त होने के लिए रुद्ध इच्छाएँ रूपान्तरित हो जाती हैं। लेखक ने विस्तार-पूर्वक समझाया है कि ये रुद्ध इच्छाएँ किस प्रकार छद्म वेश धारण करती हैं।

यह छद्मवेश, प्रतीक या Symbol संसार में सब जगह देखे जाते हैं। पुस्तक में इन प्रतीकों के अर्थ भी दे दिए गए हैं।

रुद्ध इच्छा की व्याख्या में लेखक ने डा० फ्रयेड का अनुसरण करके काम-वृत्ति का विश्लेषण किया है। उसे पढ़ कर हम जानते हैं कि मनुष्य के मन के अज्ञात प्रदेश में कितना पङ्क और कितना जंजाल भरा हुआ है! पर यह जान कर सन्तोष होता है कि इन प्रवृत्तियों ने ही तो प्रीति, भक्ति आदि रूपों में प्रकाशित होकर संसार को सम्पूर्ण और समाज को सुन्दर बना दिया है।

विषय कठिन है, कम समझने या आधे समझने में एक आनन्द है, एक प्रेरणा है। भली भाँति समझ लेने पर आनन्द की मात्रा बढ़ जायगी, यह सोच कर लेखक ने विषय को भली भाँति समझाने में कोई बात उठा नहीं रक्खी है।

पुस्तक वैज्ञानिक होने पर भी उपन्यास की तरह चित्ताकर्षक है। कठिन विषय कितने सहज, कितने सरल भाव से समझाया जा सकता है 'स्वप्न विज्ञान' इस बात का उदाहरण है। शैली प्राञ्जल, सुन्दर और मनोज्ञ है।

भूमिका

स्वप्न-तत्व की आलोचना में सर्वप्रथम प्रोफेसर फ्रयेड का नाम उल्लेखनीय है। उन्हें स्वप्न-राज्य का पथ-प्रदर्शक भी कहा जाय तो अत्युक्ति नहीं। मनोविज्ञान के संबंध में आज विद्वानों के समाज में जिस आलोचना की सृष्टि हुई है, उसका मूल कारण फ्रयेड का अपूर्व आविष्कार ही है। प्रोफेसर फ्रयेड कौन हैं और किस कौशल से उन्होंने स्वप्न-राज्य के निगूढ़ तत्व-समूह की छान-बीन की है, यही संक्षेप में यहाँ लिखा जायगा।

सिगमुण्ड फ्रयेड (Sigmund Freud) वियेना शहर के एक चिकित्सक हैं। मानसिक-निदान और चिकित्सा के सम्बन्ध में मौलिक गवेषणा करने के कारण वे जगत्-प्रसिद्ध हो गए हैं। विकास-वाद के सिद्धान्त की खोज से डार्विन ने जीव-विज्ञान में युगान्तर उप-स्थित किया था; बहुतों के मत से वैसे ही फ्रयेड ने भी मनोविज्ञान में एक नये पथ का आविष्कार किया है। विकासवाद भी आरम्भ में वैज्ञानिक समाज में आदर न पा सका था। उस के लिए डार्विन को उपहासास्पद होना पड़ा था। मनुष्य और बन्दरों के पूर्व-पुरुष एक ही हैं, जैसे यह बात सुनने पर आत्म-सम्मान में आघात लगता है, वैसे ही अब फ्रयेड ने यह प्रचार किया कि मातृ-भक्ति, पितृ-भक्ति आदि पवित्र भाव और कामज पाशविक वृत्ति मूलतः एक ही हैं तब कितने ही सभ्य पुरुष क्षुब्ध हो उठे थे। उनका भी लोग उपहास करने लग गये थे। अब भी फ्रयेड के विरोधियों की कमी नहीं, फिर भी फ्रयेड के मत का क्रमशः सर्वत्र प्रकाश होता जा रहा है।

भूमिका

१८८० ईसवी की बात है। तब फ्रयेड की अवस्था २४ वर्ष की थी। उन्होंने वियेना में वायु-विकार अर्थात स्नायु रोगों के विशेषज्ञ के रूप में चिकित्सा करना आरम्भ किया था। वियेना शहर उस समय में जोसेफ ब्रूअर (Joseph Breuar) एक सुचिकित्सक समझे जाते थे और उन का बड़ा मान था। फ्रयेड उन्हीं के सहयोगी के रूप में काम करते थे। उस समय ब्रूअर के हाथ में एक हिस्टीरिया-रोग-ग्रस्ता महिला की चिकित्सा का भार था। योरप के बड़े-बड़े चिकित्सक भी उस रोगिणी को स्वस्थ न कर सके थे। महिला ने एक दिन ब्रूअर से कहा कि सम्भव है, मन की सब बातें कहने से उस की व्याधि का प्रतिकार हो सके। ब्रूअर की सम्मति पा रोगिणी ने अपना इतिहास कहना प्रारम्भ किया। उस के विवरण में कई बेमतलब की बातें रहने पर भी चिकित्सक सब बातें ध्यान पूर्वक सुनने लगे। ब्रूअर के हाथ में अनेक रोगी थे। अतः एक ही रोगी के लिये ज्यादा समय नहीं दिया जा सकता था। रोगिणी की बाते शीघ्र समाप्त न होते देख वे प्रतिदिन थोड़ा थोड़ा सुनने लगे। रोगिणी उन से सब बातें साफ साफ कहने लगी। चिकित्सक की सहानुभूति ने रोगिणी की श्रद्धा में अभिवृद्धि कर दी थी। जिन बातों के सुनने की चिकित्सक को ज़रूरत नहीं, या जिन का कहना असङ्गत है, घर की ऐसी अनेक बातें ब्रूअर को सुननी पड़ी थीं। आश्चर्य की बात तो यह है कि रोगिणी जितना मन खोल कर बातें कहने लगी उतना ही उस का रोग घटने लगा। कुछ दिनों में वह बिलकुल स्वस्थ हो गई। इस अद्भुत ढंग से आरोग्य होने की बात फ्रयेड ने भी सुनी। ब्रूअर और फ्रयेड ने परस्पर परामर्श करने के बाद यह निश्चय किया कि वे भविष्य में इस प्रकार के रोगों की चिकित्सा इसी प्रणाली से किया करेंगे।

प्रायः देखा गया है कि रोगी के बाल्य-जीवन में कई ऐसी घटनाएँ घटती हैं, जिन्हें याद करने से मन में लज्जा और घृणा का सञ्चार होता है। वैसे तो इन घटनाओं की स्मृति रोगी के मन में नहीं होती,

पर चिकित्सक के सामने जीवन-कहानी कहते समय वे धीरे-धीरे रोगी को याद आती हैं। चिकित्सक की सहानुभूति और उत्साह देख कर रोगी लज्जा और कष्ट का अनुभव करते हुए भी चिकित्सक से सब कह सकता है। जैसे खूब रोने-चिल्लाने के बाद मन का रुका हुआ शोक शान्त हो जाता है, वैसे ही चिकित्सक के सामने मन की गुप्त बातें कहने पर रोगी के मन में भी शान्ति आती है और उसका रोग भी थोड़ा थोड़ा करके मिट जाता है। ब्रूअर और फ्रयेड ने देखा कि केवल पुरानी घटनाएँ रोगी की स्मृत्ति में जागृत होने से ही रोग की शान्ति नहीं हो जाती। घटनाओं की स्मृत्ति के साथ-साथ मन में लज्जा, घृणा, दुःख और कष्ट का अनुभव होना भी आवश्यक है। नहीं तो कुछ भी फल नहीं होता। उन्होंने इस प्रकार की चिकित्सा का नाम Cathartic Treatment (रेचन-चिकित्सा) रक्खा है। उन्होंने देखा कि कई दुःख-दायक भाव मन में रुक जाते हैं और उनके रुक जाने से रोग पैदा हो जाता है। इसलिए उन्हें किसी तरकीब से मन से निकाल देने पर रोग मिट जाता है। जैसे खाई हुई बिना पची चीज़ें पेट में जमा हो जाने पर पेट की बीमारी होती है और उन्हें जुलाब दे बाहर निकाल देने पर वह बीमारी मिट जाती है वैसे ही मन के रुके हुए आवेगों को चिकित्सा के द्वारा निकाल देने पर रोगी निरोग हो जाता है। इसलिए उन्होंने इस चिकित्सा का नाम 'मानसिक-रेचन-चिकित्सा' रक्खा है।

कुछ दिन तक इस प्रणाली से चिकित्सा करने पर फ्रयेड ने देखा कि मन की बहुत-सी गुप्त बातें खुद रोगी को भी नहीं मालूम रहतीं; उनके जानने में भी बहुत समय लगता है। इसलिए उन्होंने सोचा कि रोगी को संवेशित (hypnotize) करने पर उसके मन के रुद्ध भाव आसानी से जाने जा सकते हैं। इस प्रकार चिकित्सा करने में भी फ्रयेड को एक असुविधा का सामना करना पड़ा; ऐसे अनेक रोगी आने लगे जिन्हें संवेशित करना असम्भव था, या संवेशित अवस्था

में भी वे सब बातें याद नहीं कर सकते थे। फ्रयेड ने Hypnotism (संवेशन-प्रक्रिया) विख्यात फ्रांसीसी चिकित्सक वेरन् हाइम (Bernheim) से सीखी थी। रोगी संवेशित दशा में जो कुछ करता है, जगने पर उसे कुछ भी याद नहीं रहता। फ्रयेड ने यह देखा था कि जागृत अवस्था में इन भूली हुई बातों को याद दिलाने के लिए वेरन् हाइम एक दूसरे तरीके से काम लेते थे। जिस मनुष्य को भूली हुई बातें स्मरण करानी हों, उसका सिर जरा हाथ से दबा कर यदि बार बार कहा जाय कि संवेशित अवस्था की सब घटनाएँ उसे स्मरण हो जाएँगी, तो वास्तव में विस्मृत घटनाएँ उसे याद आ जाती हैं। यह एक तरह का Suggestion या अभिभाव मात्र है। इसलिए फ्रयेड ने निश्चित किया कि रोगी को संवेशित न कर भविष्य में वेरन् हाइम की प्रक्रिया अनुसार ही बाल्य-जीवन की लुप्त स्मृति जगाने की चेष्टा करेंगे। वे रोगी को सुला कर तथा उसके सिर पर हाथ रख कर बोले, "मैं तुम्हारे सिर को जरा दबाता हूँ, इस स्पर्श से तुम्हें सब भूली हुई बातें याद आएँगी।"

रोगी ने पहले कहा कि उसे कुछ भी याद नहीं आता। फ्रयेड ने कहा, "जो बात भी तुम्हारे मन में उठे उसे सच सच कहते जाओ।" इस प्रकार रोगी से जो जो बातें जानी गईं, उन सब में ही लुप्त-स्मृति का आभास पाया गया है। यही अबाध-भावानुसङ्ग-क्रम (Free Association method) की उत्पत्ति का इतिहास है।

क्रमशः रोगी के स्वप्न की ओर भी फ्रयेड की दृष्टि गई। उन्होंने देखा कि जब गतजीवन की अनेक घटनाओं का आभास रोगी के स्वप्नों में मिलना सम्भव है, तब वे अबाध-भावानुसङ्ग-क्रम प्रणाली से रोगियों के स्वप्न विश्लेषण करने में लग गए।

अबाध-भावानुसङ्ग-क्रम से ऐसे कितने तथ्य आविष्कृत हुए हैं, जिन पर सहसा विश्वास नहीं किया जा सकता। इस के कहने की कोई ज़रूरत नहीं है कि फ्रयेड ने किसी खास मतलब से स्वप्न-विश्लेपण

करना शुरू नहीं किया था। केवल अनुसन्धान करने पर जिन जिन विषयों के उपयुक्त प्रमाण मिले, उन्हीं को उन्होंने ग्रहण किया है। यह बात नहीं है कि उन के आविष्कृत तथ्य केवल रोगियों के स्वप्न-विचार पर ही निर्भर हों—अनेक स्वस्थ व्यक्तियों के स्वप्नों की परीक्षा से भी उनके सिद्धान्त-समूह प्रमाणित और पुष्ट हुये हैं। फ्रयेड कहते हैं कि प्रत्येक स्वप्न में मन की कोई न कोई इच्छा काल्पनिक-रूप से चरितार्थ होती है। इस कथन पर हठात् विश्वास करने की इच्छा नहीं होती, किन्तु किसी बात पर विश्वास करने की इच्छा न होने के कारण ही उसे मिथ्या कहना असङ्गत है। यदि हमें अनुभवों और प्रयोग के बाद आप ही स्वप्न-विश्लेषण कर फ्रयेड के सिद्धान्तों पर आना पड़े, तो उसे न मानने का कोई कारण नहीं है। फ्रयेड के समालोचक गण आयास-साध्य-स्वप्न-विश्लेषण में न पड़ कर उन के तथ्यों को निःसार कहना चाहते हैं। यह अवश्य है कि यदि कोई बहु-संख्यक स्वप्नों का विश्लेषण करने के बाद किसी अन्य सिद्धान्त पर पहुँचे, तो वह ज़रूर माना जा सकता है। ऐसे अनुसन्धानों के कारण ही फ्रयेड ने अब अपना पहला मत कुछ कुछ बदला है। उन का कहना है कि किसी किसी स्वप्न में इच्छा की काल्पनिक परितृप्ति न भी हो सकती है। किन्तु इस विषय में मैं अब भी फ्रयेड के साथ सहमत नहीं हूँ। मेरी धारणा है कि क्या जागृत और क्या स्वप्नावस्था में इच्छा-पूर्ण की चेष्टा का आश्रय लिए बिना वृथा कभी कोई चिन्ता-धारा नहीं चल सकती। कामना ही चिन्ता का मूल है। इसलिये मैं फ्रयेड के पहले मत में रद्दोबदल करने के लायक कोई सङ्गत कारण नहीं देखता। जिस नये पर्यवेक्षण के फलस्वरूप फ्रयेड ने अपना पहला मत बदला है, मेरे मत से उस का दूसरा अर्थ भी हो सकता है। यह विषय कठिन है, इसलिये साधारण जनता के लिये लिखी गई इस पुस्तक में हमने उस की आलोचना नहीं की। फ्रयेड को अनेक स्वप्नों के मूल में कामज इच्छा का पता चला है। इस कथन को मानने में भी

बहुतों को घोर आपत्ति है। इस पुस्तक के प्रबन्ध जब "भारतवर्ष" (बंगला मासिक पत्र) में प्रकाशित हुए थे, तब किसी किसी ने कहा था कि मैंने स्वप्न में कामज इच्छा का प्रभाव अतिमात्रा में वर्णन किया है। दुःख का विषय है कि उन्हों ने यह नहीं कहा, कि उन्होंने कभी स्वप्न-विश्लेषण का कष्ट किया है या नहीं।

पाठक इस बात पर भी आपत्ति करते हैं कि स्वप्न में एक वस्तु दूसरी वस्तु के प्रतीक-रूप में दिखाई दे सकती है। किन्तु जो जरा कष्ट करके स्वप्न-विश्लेषण करेंगे वे ही इसे समझ सकेंगे कि स्वप्न में प्रतीक का बाहुल्य कितना है। पाठकों से मेरा अनुरोध है कि बिना विचारे वे पुस्तक में वर्णित किसी बात को अग्राह्य न करेंगे।

उपक्रमणिका

ऐसे आदमी बहुत कम हैं, जिन्होंने कभी स्वप्न न देखे हों। पूछने पर सम्भव है, कोई कहे कि उसने कभी स्वप्न नहीं देखा, किन्तु स्वप्न की प्रकृति ही यह है कि वह याद नहीं रहता। इसलिए सारी रात स्वप्न देखने पर भी सबेरे यह विचार हो सकता है कि स्वप्न नहीं देखा। ऐसे भी स्वप्न हैं, जो कभी भूले ही नहीं जा सकते। मैं ऐसे आदमियों को भी जानता हूँ, जो तीन वर्ष की उम्र में देखा हुआ स्वप्न छप्पन वर्ष की उम्र में भी नहीं भूले हैं। कभी-कभी स्वप्न-जगत् के साथ वास्तव-जगत् का पार्थक्य इतना अधिक होता है और स्वप्न ऐसे अद्भुत आते हैं कि सभी थोड़ा बहुत यह सोचा करते हैं कि स्वप्न क्या है और क्यों आता है? बहुत बार असभ्य जातियों के मनुष्य स्वप्न देखकर उसके अनुसार काम करते हैं। इतिहास में भी देखा जाता है कि कई राजा स्वप्न देखकर युद्ध-यात्रा करते थे। चित्तौड़ के महाराना लक्ष्मणसिंह ने स्वप्न मे उवर-देवी का आदेश पाकर अलाउद्दीन के विरुद्ध लड़ाई छेड़ी थी। बादशाह जहाँगीर ने स्वप्न में पिता का आदेश पाकर आजिज कोका के महान अपराध को क्षमा कर दिया था। कितने ही आदमी स्वप्न में घोड़े का नाम जान कर घुड़दौड़ में बाज़ी लगाते है। कभी कभी स्वप्न देखे जाने के कारण पाट के भीतरी-बाज़ार में तेज़ी-मन्दी हो जाती है या पाट का भाव घटता-बढ़ता है। किसी धनी व्यवसायी ने स्वप्न देखा कि बाज़ार तेज़ होगा। उसके स्वप्न की बात सुन और पाँच जनों के मन में वही धारणा बँध गई। बाजार सचमुच ही तेज़ हो गया। ऐसी स्थिति में मनुष्य स्वप्न को नितान्त अमूलक चिन्ता नहीं समझते। अधिकांश लोगों की धारणा है कि स्वप्न अमूलक नहीं,

इसका कुछ-न-कुछ आशय अवश्य है। यही कारण है कि हमारे यहाँ सुस्वप्न, दुःस्वप्न और स्वप्न के फलाफल पर इतना अधिक विचार होता है। यद्यपि हम वैज्ञानिक शिक्षा के बल पर स्वप्न को निर्मूल कह कर उड़ा देते हैं, तथापि बहुत समय स्वप्न हमारे हृदय में उत्तेजना उत्पन्न कर देता है, इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता। सुसभ्य पाश्चात्य देशों में भी स्वप्न-विषयक ग्रंथों की कमी नहीं है। उन पुस्तकों में भी भाँति-भाँति के स्वप्न और उनका फलाफल लिखा हुआ है। यह हमारे देश की पुरानी बात है कि स्वप्न में साँप देखने से लड़का होता है। इसी प्रकार स्वप्न में जल से भरा हुआ पात्र देखने पर धन मिलता है, लाल फूल देखने पर कष्ट होता है। इसी प्रकार के अनेक विवरण हमारे संस्कृत ग्रंथों में भी पाये जाते हैं।

आधुनिक पाश्चात्य स्वप्न-तत्व की आलोचना करने पर देखा जाता है कि वैज्ञानिकों में स्वप्न के कारण-निर्णय की दो धाराएँ हैं। एक दल स्वप्न का कारण शारीरिक मानता है और दूसरे का अनुमान है कि स्वप्न का कारण मानसिक-विकार है। निद्रावस्था में मेरे शरीर पर जल का एक बूँद गिरा; मैंने स्वप्न देखा कि वर्षा हो रही है, या मैं स्नान कर रहा हूँ। इस जगह पहले दल के वैज्ञानिक कहेंगे कि शरीर पर जल गिरने की अनुभूति ही मेरे स्वप्न देखने का कारण है, दूसरे दल वाले इस पर आपत्ति करके कहेंगे कि हो सकता है, जल गिरने की अनुभूति ने ही स्वप्न की सृष्टि की हो, किन्तु ऐसी अनुभूति से यह नहीं जाना जा सकता है कि मैं वर्षा होने का स्वप्न देखूँगा, या स्नान करने का। इसका कारण ढूँढ़ने के लिए मन की छान-बीन करनी पड़ेगी। मान लीजिए, कहीं निमन्त्रण में देर से पचने वाली चीज़ें खाकर रात में भय-जनक स्वप्न देखा, किन्तु यह मेरी मानसिक अवस्था पर निर्भर करता है कि मैं स्वप्न में सिंह देखूँ, चोर देखूँ, या भूत देखूँ। इसलिए शारीरिक की अपेक्षा, मानसिक कारण का अनुसन्धान करने पर अधिक फल होने की सम्भावना है।

शारीरिक क्रियाओं को श्रेय देने वाले कोई कोई विद्वान मानते हैं कि हमारे मस्तिष्क के मध्य-स्थित कोष के आभ्यन्तरिक परिवर्त्तन के कारण मानसिक चिन्ता की उत्पत्ति होती है। विभिन्न कोष परस्पर संयुक्त रहते हैं। सोते समय संयोग टूट जाता है, जिससे चिन्ता-धारा की शृङ्खला नष्ट हो जाती है और स्वप्न की सृष्टि होती है। यह आश्चर्य्य की बात है कि विद्वानों के इसी वर्ग का दूसरा दल, ठीक इसके विपरीत बातें कहता है। उसका मत है कि निद्रावस्था में कोषों का संयोग भंग नहीं होता वरन् और भी घनिष्ठ हो जाता है; जिससे स्वाभाविक चिन्ता की विभिन्न धाराएँ मिल जाती हैं, अर्थात् हम स्वप्न देखते हैं। इसके अतिरिक्त किसी किसी के मत से सोते समय हमारे शरीर में ऐसे विषाक्त पदार्थ जमा हो जाते हैं, जिन से कोषों की क्रिया में बाधा पहुँचती है; फलस्वरूप हम स्वप्न देखते हैं। स्वप्न का कारण निर्णय करने के लिए ऐसे कितने ही शरीर-क्रिया-मूलक मत प्रचलित हैं जिनकी गिनती नहीं। यह मोटी बात है कि इन मतों में से कोई भी पूर्णतः सत्य सिद्ध नहीं होगा। किसी ने भी यह संयोग-वियोग या विष-क्रिया आँखों से नहीं देखी और न ऐसे अनुमानों से स्वप्न-तत्व के समझने में कोई सुविधा होती है।

हमारे संस्कृत शास्त्रों में भी स्वप्न की उत्पत्ति के सम्बन्ध में तरह-तरह के विचार हैं। इस विषय में बृहदारण्यक उपनिषद् में दो मत हैं। (१) आत्मा बहिर्जगत् में देखे हुए द्रव्यों के अनुकरण पर नये जगत् की सृष्टि करता है। (२) आत्मा शरीर से निकल कर इच्छानुसार भ्रमण करता है। 'चरक' के अनुसार स्वप्न सात तरह के हैं—दृष्ट, श्रुत, अनुभूत, प्रार्थित, कल्पित, भाविक (भविष्य-निर्देशक)। इनमें से प्रथम पाँच कुछ भी फलाफल सूचित नहीं करते। वेदान्त के अनुसार, स्वप्न में देखा हुआ कोई भी विषय हमारे लिए नया नहीं। इन विचारों में से किसी को भी वैज्ञानिक व्याख्या नहीं कहा जा सकता।

स्वप्न-तत्व जानने के लिए सभी उत्सुक हैं। आश्चर्य्य का विषय यह है कि बहुत कम वैज्ञानिकों ने इसकी आलोचना की है। वैज्ञानिकों का कार्य्य किसी निर्दिष्ट वस्तु से रहता है। इसीलिए जान पड़ता है कि वे अवास्तव, अद्भुत, अजनबी स्वप्न-राज्य में जाने को राजी नही। मनोवैज्ञानिकों ने अन्यान्य मानसिक क्रियाओं के विश्लेषण में जितना परिश्रम किया है, उसकी तुलना में स्वप्न के सम्बन्ध में उन्होंने कुछ भी नहीं किया। यही कारण है कि कुछ दिन पहले हमें इस सम्बन्ध में कुछ भी निश्चित् ज्ञान न था। कोई तीस वर्ष की बात है कि प्रोफेसर सिगमण्ड फ्रूड ने बड़े परिश्रम और अद्भुत बुद्धिबल से स्वप्न का तत्व उद्घाटित किया। उनका अनुसरण करके अनेक मनोवैज्ञानिक विद्वान स्वप्न के अनेक गूढ़ तत्वों का आविष्कार करने में सफल हुए है। अब भी स्वप्न के सम्बन्ध में हमारा ज्ञान पूर्ण नहीं कहा जा सकता। इसमें सन्देह नहीं कि हम अब क्रमशः स्वप्न के रहस्य समझने में अग्रसर हो रहे हैं। इस पुस्तक मे फ्रूड की स्वप्न-सम्बन्धी गवेषणाओं और अन्य मनोवैज्ञानिकों के मतामत की आलोचना की गई है, साथ ही अपने मन्तव्य भी दिए हैं।

स्वप्न-तत्व की आलोचना करने से हमारे मन में कितने ही प्रश्न उठते हैं—स्वप्न क्या है? क्यों आता है? इसका अर्थ क्या है? स्वप्न सत्य है या मिथ्या? क्या यह हमारे भूत और भविष्य की घटनाओं का सूचक है? क्या यह हमें दूसरे जगत् की बात बता सकता है? मृत आत्मीय बन्धुबान्धवों की आत्माएँ, क्या वास्तव में स्वप्न में नज़र आती हैं? कभी कभी स्वप्न में किसी की मृत्यु का पूर्वाभास होता है, सो किस तरह? स्वप्न में किसी अपरिचित स्थान या विषय को देखने के बाद वह कैसे प्रत्यक्ष होता है? इस प्रकार के प्रश्न स्वतः ही कभी कभी हमारे मन में उठते हैं। इनका ठीक ठीक उत्तर देना कठिन है। फिर भी जहाँ तक हो सकेगा, उत्तर देने की कोशिश की जायगी।

स्वप्न क्या है ?

निद्रावस्था मे हमारी मानसिक वृत्तियाँ सर्वथा निस्तेज नहीं हो जातीं। हाँ, जागृत अवस्था में जो शृङ्खला मानसिक वृत्तियों में देखी जाती है, वह अवश्य नष्ट हो जाती है। नाना प्रकार की अद्भुत चिन्ताएँ और दृश्य मन में उत्पन्न होते हैं, यही स्वप्न है। शास्त्रकार जिसे सुषुप्ति कहते हैं, निद्रा की उस प्रगाढ़ अवस्था में स्वप्न दिखलाई नहीं देते। अन्ततः यही हमारी धारणा है, स्वप्न की एक विशेषता है। जागृत अवस्था में चिन्ताधारा में दार्शन (Visual) श्रावण (Audiory), स्पार्शन (Tactual) इत्यादि प्रत्यक्ष के प्रतिरूप (Image) वर्त्तमान होते हैं, किन्तु स्वप्न में दार्शन प्रतिरूप (Visual Imagery) ही अधिक होते है। स्वप्न मे कहने सुनने की अपेक्षा देखने का भाग ही अधिक है। इसीलिए हम बोल-चाल की भाषा में 'स्वप्न-देखना' कहते हैं। स्वप्न की यह विशेषता क्यों है, इस का क्या अर्थ है, यह आगे बताया जायगा।

जागृत और निद्रावस्थाओं के बीच में कोई निर्दिष्ट सीमा नहीं होती। इसी कारण जागृत और निद्रावस्था की चिन्ताधाराओं के बीच में भी सदा सुस्पष्ट पार्थक्य नहीं देखा जाता। कभी कभी ऐसा भी होता है कि जागृत अवस्था में चिन्ता करता हूँ, या स्वप्न देखता हूँ, यह नहीं जाना जा सकता। वास्तविक, सम्पूर्ण जागृत अवस्था में भी कभी कभी स्वप्न की तरह चिन्ताधारा चलती है, इस को हम दिवा-स्वप्न या जागर-स्वप्न कहते हैं। जागृत अवस्था में ऐसा प्रतीत होता है कि हम चिन्ता-धारा को नियन्त्रित करते हैं। यह भी स्वप्न

एक विशेषता है कि स्वप्न अवस्था में चिन्ता धारा हमारी इच्छा-नुसार नहीं चलती। इसी प्रकार दिवा-स्वप्न में भी चिन्ताधारा हमारी इच्छा के बिना चलती है। मैं कई बार स्वप्न की गति को अपनी इच्छानुसार फिरा सका हूँ, मेरी तरह और लोगों ने भी ऐसा किया होगा। यह जान बूझ कर स्वप्न देखने के जैसा है। अनुभूति के सिवा इस अवस्था की धारणा करना कठिन है। उपरोक्त कथन से ज्ञात होगा कि साधारणतया निद्रित और जागृत चिन्ता-धाराएँ पृथक होने पर भी ऐसी अनेक अवस्थाएँ हैं, जहाँ पर जागरण और स्वप्न का अंतर जानना मुश्किल है। स्वप्न में दार्शन (Visual) के अतिरिक्त अन्य प्रतिरूपों का अभाव होता है, पर सुख-दुख-बोध (Feelings) का अभाव नहीं होता। शोक, दुख, सुख, आनन्द, क्रोध, भय, इत्यादि सब प्रकार के मनोभाव स्वप्न में पाये जाते हैं। यद्यपि यह बहुधा नितान्त असंगत होते हैं। जैसे, स्वप्न में सिंह देखा; उस से डरना तो दूर रहा, आनन्द से उसके साथ बातें करने लगा। सम्भव है स्वप्न में किसी परिचित मित्र को देख कर भय उत्पन्न हो। यों ऊपर से देखने पर इन दोनों स्थलों पर मेरा आनन्द और भय असङ्गत लगता है। स्वप्न की झोंक में कोई कोई कभी-कभी बात-चीत करने या उठ कर चलने-फिरने लगते है। इसे 'नीद में बहकना' कहते हैं। मेरे एक मित्र हैं, वे सोते-सोते ही बोलने लगते है। यह कहना भी ठीक नहीं है कि सब समय ही स्वप्नावस्था में चिन्ताधारा विश्रृङ्खल हो जाती है,—बहुतों ने स्वप्न में गणित के कठिन प्रश्न हल किए हैं। यह कोई नई बात नहीं है। अँग्रेजी कवि कॉलेरिज ने स्वप्न में अपनी विख्यात कविता "कुबला खां" लिखी थी। दुःख का विषय है कि यह कविता असम्पूर्ण है। सुनते हैं कि रवीन्द्रनाथ ने भी किसी किसी कविता की रचना स्वप्न मे की है*। कई वैज्ञानिक आविष्कार भी स्वप्न में हुये हैं।

---

* श्रीयुत रवीन्द्रनाथ ठाकुर महाशय के 'राजर्षि' उपन्यास मे वर्णित।

हम स्वप्नों को साधारणतः तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं। (१) जिन स्वप्नों में किसी प्रकार की असङ्गति या अस्वाभाविकता न हो। वाह्यतः साधारण चिन्ताधारा के साथ इस श्रेणी के स्वप्नों का कोई पार्थक्य नहीं देखा जाता। जैसे, स्वप्न में देखा कि मैं पार्क में घूमने गया हूँ। इसमें कोई असम्भव या अस्वाभाविक बात नही है। (२) जिन स्वप्नों में भावों की असङ्गति न होने पर भी जिनका वास्तव-जीवन के साथ कोई मेल नहीं होता। जैसे स्वप्न में देखा कि मैं मर गया हूँ। (३) जो स्वप्न सर्वथा अस्वाभाविक और अद्भुत हैं। जैसे, स्वप्न में देखा कि एक तीन पैर वाला साँप मुझ से बातें कर रहा है। इस प्रकार के स्वप्न नींद टूटने पर अद्भुत जँचते हैं, पर स्वप्न देखते समय उनकी अस्वभाविकता का प्रायः ज्ञान नहीं होता। साधारणतः छोटे बालकों के स्वप्न पहले प्रकार के होते हैं। असभ्य जातियों के वयस्क व्यक्तियों के स्वप्न भी इसी श्रेणी के होते है। मोटे तौर पर कहे जाने पर, हम स्वप्न को निद्रावस्था की चिन्ता-धारा कह सकते हैं। इस चिन्ता-धारा और जागृत अवस्था की चिन्ता-धारा में क्या अन्तर है, उसकी 'स्वप्न की विशेषता' शीर्षक की नीचे आलोचना की जायगी।

हमें स्वप्न क्यों दिखलाई देते हैं ?

वैज्ञानिक ढंग से 'क्यों' का ठीक-ठीक उत्तर देना सम्भव नहीं। विज्ञान आदि-कारण का अनुसन्धान नहीं करता; आदि-कारण का अनुसन्धान करना तो दर्शन-शास्त्र का काम है। पहले ही कहा जा चुका है कि स्वप्न हमारी निद्रावस्था की चिन्ता-मात्र है। क्यों हम सुप्त अवस्था में चिन्ता करते हैं—इसे जानने के लिए हमें जागृतावस्था की चिन्ता का कारण भी जानना चाहिए। किन्तु हम इस प्रश्न का सन्तोषजनक उत्तर नहीं दे सकते। साधारण लोगों का विश्वास है कि हम स्वप्न में भूत-भविष्य का आभास पाते हैं; किन्तु शिक्षित व्यक्ति इस बात को नहीं मानते। उनके मत में स्वप्न अमूलक चिन्ता-मात्र है, स्वप्न का कोई कारण नहीं हो सकता। इस धारणा के कारण कई मनोवैज्ञानिक भी स्वप्न का कारण खोजना नहीं चाहते। हम क्यों स्वप्न देखते हैं, सम्भवतः फ्रयेड ने ही इसका एकमात्र सङ्गत उत्तर दिया है। उनके मत से हमारे रोज़ के अनेक काम और अनेक चिन्ता-धाराएँ पूरी नहीं होतीं; ये असम्पूर्ण चिन्ता-धाराएँ ही स्वप्न में पूरी होने की चेष्टा करती हैं। हमारी जो इच्छाएँ पूरी नहीं होतीं, या जिनके पूरा होने में बाधाएँ हैं, वे इच्छाएँ ही स्वप्न में काल्पनिक-भाव से परितृप्त होती हैं। कोई भी इच्छा या चिन्ता पूरी न होने से मन में जिस अशान्ति का उदय होता है, स्वप्न में कल्पना द्वारा उसकी शान्ति हो जाती है। मन की अशान्ति दूर करने के कारण स्वप्न निद्रा का सहायक है। इसी कारण फ्रयेड ने स्वप्न को निद्रा का अभिभावक कहा है। साधारण लोगों की धारणा है कि स्वप्न देखने से नींद में बाधा पहुँचती है।

किन्तु फ्रयेड का मत ठीक इससे उल्टा है, उनका कहना है कि नींद में विघ्न होने से स्वप्न की सृष्टि होती है और इस स्वप्न देखने के कारण बहुधा अच्छी नींद आ जाती है। जैसे रामबाबू किसी आफ़िस के मुन्शी हैं। काम इतना ज़्यादा है कि करते नहीं बन पड़ता। यदि बहुत-सा काम इकट्ठा हो जाता है तो उन्हें साहब की झिड़की और लाञ्छना सहनी पड़ती है। उनके सोने की चेष्टा करने से क्या हो, आफ़िस के काम-काज की चिन्ता ही बार-बार मन में उठकर उनकी नींद में बाधा डालती है। इस दशा में उन्होंने स्वप्न देखा कि आफ़िस का सब काम उन्होंने कर डाला है, साहब ने खुश होकर उनकी तरक्क़ी कर दी है। ऐसे स्वप्न देखने के फल-स्वरूप रामबाबू के मन में शान्ति आई, अर्थात् उन्हें नींद आ गई। यहाँ हम देखते हैं कि स्वप्न ने नींद की सहायता की है। कड़ी गरमी पड़ रही है, मैं सो गया हूँ; नींद में बहुत प्यास लगी। इससे नींद टूट जाने का डर था; किन्तु स्वप्न देखा कि मैं गट-गट शरबत पी रहा हूँ। फल-स्वरूप काल्पनिक तृप्ति हुई, जिससे नींद में बाधा नहीं पहुँची। हो सकता है कि यह काल्पनिक तृप्ति अधिक तथा स्थायी न हो। इस प्रकार के स्वप्नों से साफ़ ज़ाहिर होता है कि स्वप्न निद्रा का सहायक है। सम्भव है, बहुत से लोग कहें कि ऐसे भी कई स्वप्न हैं, जिन्हें देखने पर नींद मारे डर के हवा हो जाती है। यों ऊपरी दृष्टि से देखने पर इस अवस्था में स्वप्न को निद्रा का विघ्न ही मानना पड़ेगा। भय के स्वप्न के बारे में स्वतन्त्र-रूप से आलोचना की जायगी। अनेक स्वप्नों में हमारी अतृप्त इच्छाएँ स्पष्ट-रूप से चरितार्थ न हों, गुप्त-रूप से परितृप्त होती हैं। जैसे, मन में रसगुल्ला खाने की इच्छा होने से स्वप्न में देखा कि सैर करने के लिए बाग़-बाज़ार* में गया हूँ। इस प्रकार के स्वप्न में विश्लेषण किये बिना यह मालूम न होगा कि कौन-सी इच्छा इस से पूर्ण हो रही है। फ्रयेड कहते हैं कि हमारे प्रत्येक स्वप्न में कोई-न-कोई इच्छा पूर्ण होने की चेष्टा

---

* कलकत्ते का बाग़ बाज़ार रसगुल्लों के लिए प्रसिद्ध है।

रहती है। उनके मत में स्वप्न देखने से हमें लाभ हैं। (१) मन की अनेक असम्पूर्ण इच्छाएँ काल्पनिक-रूप से परितृप्त हो जाती हैं और इससे मन में शान्ति आती है और (२) अनेक-स्थलों पर निद्रा का प्रतिबन्ध दूर हो जाता है।

स्वप्न का क्या अर्थ है ?

स्वप्न के अर्थ के सम्बन्ध में बहुत मतभेद है। पहले ही कहा जा चुका है कि किसी-किसी के मत से स्वप्न बिलकुल निरर्थक है। हमारे देश में कोई-कोई स्वप्न देखकर उसे जोतिषी से कहते है और जोतिषी जी पोथी-पत्रा खोलकर उसका अर्थ बता देते हैं। संस्कृत के कई ग्रन्थों में स्वप्नों के फला-फल लिखे हुए हैं। ऋग्वेद, अथर्वेद और सामवेद के किसी-किसी मन्त्र मे स्वप्न का विवरण आया है। आयुर्वेद के मत से कितने स्वप्न अफल हैं और कितनों का शुभा-शुभ फल होता है। शास्त्रकार कहते हैं कि शुभ स्वप्न देखने पर फिर उस रात में न सोना ही ठीक है। नहीं तो शुभाशुभ फल-नहीं मिलता। अशुभ स्वप्न देखकर नींद उचट जाने पर भी न सोना अच्छा है। घोड़े, हाथी या पहाड़ पर चढ़ने के स्वप्न का फल—धनलाभ। नरमांस खाने का स्वप्न देखने से उच्चाकांक्षा फलवती होती है। स्वप्न में जल से भरा हुआ पात्र देखने पर धन, पुत्र और लक्ष्मी मिलती है। स्वप्न में हँसने से दुःख भोग। भैंसे पर चढ़कर दक्षिण दिशा की ओर जाने का स्वप्न देखने पर मृत्यु सुनिश्चित है। दाँत टूटने का स्वप्न देखने से धन का नाश होता है, इत्यादि।

स्वप्न के इस प्रकार के अर्थ पाश्चात्य देशों में भी प्रचलित हैं। अन्य विलायतों मे भी स्वप्न-तत्व सूचक अनेक पुस्तकें लिखी गई है। इन किताबों में स्वप्नों के अर्थ दिये हुए है। कहने की ज़रूरत नहीं कि वैज्ञानिक दृष्टि से ऐसी आलोचनाओं का कोई मूल्य नहीं।

सब से पहले फ्रयेड ने ही स्वप्न की सङ्गत व्याख्या करने का रास्ता बताया है। उन्होंने स्वप्न-व्याख्या का जो उपाय बताया है वह धीरे धीरे मनोविज्ञान शास्त्रके विद्वानों में आदर पाता जा रहा है। उस उपाय का नाम अबाध-भावानुसङ्ग-क्रम है। स्वप्न देखने वाला जहाँ तक हो सके, जल्दी ही स्वप्न को लिखले। स्वप्न की यह एक विशेषता है कि स्वप्न को हम बहुत जल्दी भूल जाते है इसलिए लिख रखना ठीक है, स्वप्न देखने वाले को निर्जन घर में मुलायम बिछौने पर सुलाना चाहिये। व्याख्या करने वाला उस के सिर के पास कागज़-पेन्सिल ले कर बैठ जाय। पहले, स्वप्न के बारे में वह जो कहे लिखले। स्वप्न में देखी गई कोई घटना वास्तव में घटी थी या नहीं, क्यों स्वप्न दिखलाई दिया है, स्वप्न में दिखलाई पड़ने वाले व्यक्ति कौन है और उनके साथ स्वप्न-देखने वाले का क्या सम्बन्ध है—ये बातें पहले इसी तरह जानी जाएँ। फिर उसे आँखे बन्द कर चुप-चाप सो जाने के लिये कहे। स्वप्न बड़ा हो तो उसे छोटे-छोटे भागों में बाँट लेना चाहिए। उसे शुरू से एक-एक अंश एक के बाद एक सुनावे। हर-एक अंश सुनने पर उस के मन में जो बात, या जो भाव उठे, वह उसे बताना पड़ेगा। उसे विशेष-रूप से कह देना चाहिए कि वह कोई भाव या बात छिपाए नहीं; श्लील-अश्लील, उचित-अनुचित, आवश्यक-अनावश्यक—सभी जैसे मन में आएँ साफ-साफ कहता जाय। व्याख्या करने वाला सब लिख ले। बहुधा स्वप्न-देखने वाले के मन में ऐसे भाव या ऐसी बातें उदय होती हैं जिन्हें ऊपर से देखने पर उन का स्वप्न के साथ कोई सम्बन्ध नहीं जान पड़ता। वह अपने मन से कुछ सोच न सकेगा; जो मन में आएगा, वही कहना पड़ेगा। मन की लगाम बिलकुल ढीली कर देनी चाहिए। मन को इस प्रकार छोड़ देना कितना कठिन है, पाठक उसकी एक बार परीक्षा करके देखें। मन में निश्चेष्टता आए बिना स्वप्न की व्याख्या होना असम्भव है। स्वप्न-देखने वाले के जीवन की सब घटनाएँ जाननी चाहिएँ, नहीं तो

अनेक समय स्वप्न का अर्थ करना कठिन हो जाता है, अतएव स्वप्न की व्याख्या करना सहज काम नहीं है, स्वप्न देखने वाले के सम्बन्ध की सब बातें और स्वप्न का सही विवरण लिख कर, बाद में अबाध-भावानुसङ्ग की सहायता से विश्लेषण करना चाहिए। इस प्रक्रिया में विशेष धैर्य और समय की आवश्यकता है।

सम्भव है, पाठक सोचते हों कि सङ्केत (प्रतीक) जान लेने से स्वप्न का अर्थ किया जा सकता है। इसे छोड़ कर वे स्वभावतः ही ऐसे झन्झट में पड़ना न चाहेंगे। किन्तु धैर्य के साथ कुछ दिन अपने बन्धु-बान्धवों के स्वप्न-विश्लेषण करने पर वे मानव-मन के अनेक नये तथ्यों को जान सकेंगे, यह ज़ोर देकर कहा जा सकता है। स्वप्न विश्लेषण करने में अभ्यस्त होने पर इस कठिन पद्धति की सहायता के बिना भी स्वप्न का थोड़ा बहुत अर्थ जाना जा सकता है, किन्तु उस में भूल होने की अधिक सम्भावना है। दो आदमियों के एक ही तरह के स्वप्न के दो तरह के अर्थ होना कोई विचित्र बात नहीं है।

अबाध-भावानुसङ्ग-क्रम

फ्रयेड कहते हैं कि अबाध-भावानुसङ्ग से हमारे मन के अनेक गुप्त भाव प्रगट हो जाते है तथा उनसे समझदार व्यक्ति सहज में ही मन की धारा और स्वप्न का अर्थ जान सकते है। यह इस उपाय से भली-भाँति विदित होता है कि बहुत छोटे स्वप्न के साथ भी मन की अनेक चिन्ताएँ गुंथी होती है। स्वप्न मे जो देखा जाता है फ्रयेड ने उसका नाम व्यक्त-अंश[1] रक्खा है। तथा स्वप्न के साथ संश्लिष्ट मन की जिन चिन्ताओं और गुप्त भावों का आभास मिलता है, वह स्वप्न का अव्यक्त-अंश[2] है। इस अव्यक्त-अंश का पता लगाए बिना स्वप्न का अर्थ नहीं किया जा सकता।

अब मैं एक सच्चा उदाहरण देकर इस अबाध-भावानुसङ्ग क्रिया तथा स्वप्न के व्यक्त और अव्यक्त अंश को समझाता हूँ।

"क" बाबू मेरे एक मित्र है। वे चित्रकार और फ्रोटोग्राफर हैं। उनके पिता धनवान हैं। "क" बाबू को रुपए-पैसे कमाने की चिन्ता नहीं करनी पड़ती। काम वे केवल मनोरञ्जन के लिए करते हैं—फ्रोटोग्राफ़ उतारना और चित्र बनाना। उनकी एक चित्रशाला है। "क" बाबू का स्वभाव अत्यंत सुन्दर है। वह साधु-व्यक्ति है। मैंने उन्हें कभी क्रोध करते नहीं देखा। उन्होंने एक दिन बातों ही बातों में मुझसे अपना एक स्वप्न विश्लेषण करने के लिए कहा। "स्वप्न क्या था?" पूछनेपर बोले, "इन दिनों कोई स्वप्न देखा हो, सो तो याद नहीं आता। पर

---

1 Manifest Content.

2 Latent Content

हाँ, कोई तीन महीने पहले एक बार स्वप्न देखा था। उसमें से थोड़ा-सा अब भी याद है। नीचे स्वप्न और उसका विश्लेषण देता हूँ। किन्तु यह विश्लेषण अधूरा है। सम्भव था कि विशेष-रूप से विश्लेषण करने पर स्वप्न के और भी कई अर्थ प्रगट होते। "क" बाबू ने पहले कभी अबाध-भावानुसङ्ग-क्रम का अभ्यास नहीं किया। अतएव, प्रथम चेष्टा में उनके मन के गम्भीर प्रदेश के भावों को ठीक-ठीक समझना एक प्रकार से असम्भव था।

स्वप्न[1]—"तीन तल्ले की स्टुडियो का पश्चिम-भाग टूटकर गिर पड़ा"।

स्वप्न बहुत ही छोटा है; इसलिए विश्लेषण करने में भी सुविधा होगी। स्वप्न का यह अंश ही व्यक्त-अंश[2] है।

"क" बाबू को मन से सब चिन्ताएँ दूर करके निश्चेष्ट-भाव से सोने तथा केवल स्वप्न की ओर ही ध्यान देने के लिए कहा। उन्हें यह भी कह दिया कि मैं स्वप्न का एक-एक अंश उन्हें सुनाऊँगा; मेरे कहने पर उनके मन में जिन भावों का उदय हो, उन्हें वे बिना विचार किए कह जाएँ। मैंने उनके सिर के पास बैठकर सब बातें लिख लीं।

स्वप्न को मैंने निम्नलिखित कई भागों में विभक्त किया :—

(१) तीन-तल्ला,

(२) स्टुडियो,

(३) पश्चिम-भाग, और

(४) टूटकर गिर पड़ा।

उन्हें एक-एक अंश सुनाए जाने पर उन्होंने जो कहा वह यह है:—

(१) तीन तल्ला—मेरा घर, म-बाबू का तीन-तल्ला मकान; फ-का मकान; मुरारी पुकुर; देश का मकान; इम्पीरियल-लाइब्रेरी; हाई-कोर्ट; एसप्लानेड; जल-पान नहीं हुआ।

---

१ स्वप्न देखने वाले का किसी बात को न बदलना चाहिए, इसलिए उन्होंने जो शब्द कहे थे, मैंने वही रक्खे हैं।

2 Manifest Content.

(२) स्टुडियो—स्काई-लाइट; बड़े भाई का लड़का; बड़े भाई की स्त्री; टेबिल, केमरा; टाली की छत; सीढ़ी; घुमावदार-सीढ़ी; बाबा; नदी; चरण; विनोद-दलाल; पूर्णबाबू।

(३) पश्चिम-भाग—स्टुडियो; बाहर की दीवार; कार्निश; स्टुडियो के पास भोजन बनाने की जगह; उत्तर की ओर टूटा हुआ आधा बना मकान; क्रिश्चियनों का क़ब्रिस्तान; डाक्टर घोष; सरकुलर रोड; जे० सी० घोष का मकान।

(४) टूटकर गिर पड़ा—कब्रिस्तान घर के सामने; टूटी हुई क़ब्र; लड़के खेलते हैं; छत के ऊपर खुली जगह; फ-के मकान के पास; बाबा देश के मकान में।

सब स्वप्न—"तीन-तल्ले की स्टुडियो का पश्चिम-भाग टूटकर गिर पड़ा।"—देखता हूँ, जैसे पढ़ गया है। नीचे के घर में बाबा है—ठीक नीचे के घर मे; पार्टिसन बरान्डा टूट गया है; वहीं खांई है; चौबे नीचे बैठे हैं; मौसी-मा को तकलीफ़ है; नानी-मा का घर खाली है; "फ"; ढाका; ओआरी; धूल, रास्ता।

अबाध-भावानुसङ्ग की सहायता से ये भाव पाए गए हैं। मामूली तौर पर देखे जाने से इनसे स्वप्न का अर्थ जानने की कोई सुविधा हुई नहीं जान पड़ती। परन्तु पाठक बाद में देखेंगे कि ये चिन्ता-धाराएँ पहले देखने में असम्बद्ध जँचती हैं, तो भी इन सब का अर्थ है।

"क" बाबू को आँखें खोलने के लिए कहा तथा जिन भावों का पता चला था, उनमें से कुछ को ले कर फिर प्रश्न किए। इन प्रश्नों से ये बातें मालूम हुईं:—

(१) मेरा घर—बाबा कहते हैं कि घर भाड़े पर देकर देश चला आ; मेरी जाने की इच्छा नहीं। इस बात पर बाबा से झगड़ा हो गया है।

म-बाबू का तीन-तल्ला मकान—इस में कारखाना होने से मोहल्ले वालों को तकलीफ हो गई। हम लोगों के घर-बार कपड़े

लगते धुँए से मैले होते हैं। म-बाबू से कहने पर भी कोई फल न हुआ।

फ-का मकान—तुम तो जानते हो कि यह मकान मैंने बनवाया था और इस सम्बन्ध में फ-के साथ रुपये-पैसों को लेकर कहा सुनी हो गई है। एक तरह से इस समय हम लोगों में बात-चीत बन्द है।

मुरारी पुकुर—यहाँ 'बम्ब' बना था। वह बगीचा मैंने देखा है। इस के पास की एक जमीन बेचने की चेष्टा करता हूँ। बेच सका तो कुछ लाभ होगा।

देश का मकान—इसका और क्या बताऊँ ?

जलपान न हुआ—आज की सारी दुपहरी इम्पीरियल लाइब्रेरी और हाईकोर्ट में काटी। दिन भर कुछ न खाया गया, बड़ा कष्ट हुआ।

(२) स्टुडियो[1], स्काईलाइट[2]—खराब हो रहे हैं। मरम्मत करनी पड़ेगी।

बड़े भाई का लड़का—शैतानी करता है। टेबिल गिराकर चीजें तोड़-फोड़ डाली हैं।

बड़े भाई की स्त्री—बाबा के सब घर वालों के बिना-मरज़ी के बड़े भाई ने शादी की है।

केमेरा—बेचना चाहता हूँ।

टाली की छत—कुछ याद नहीं आता।

सीढ़ी, घुमावदार-सीढ़ी, बाबा—चढ़ने में बड़ी तकलीफ होती है; बाबा गिर न पड़ें।

चरण, विनोद दलाल, पूर्ण बाबू—जमीन बेचने के सम्बन्ध में बड़ा झमेला लगाया है।

(३) स्टुडियो, बाहर की दीवार—मरम्मत करने की ज़रूरत है।

---

1 Studio

2 Sky-light

स्टुडियो, पास में भोजन बनाने की जगह, उत्तर की ओर टूटा हुआ आधा बना मकान, क्रिश्चियनों का कब्रिस्तान, डाक्टर घोष, इत्यादि—कुछ याद नहीं आता।

(४) टूट कर गिर पड़ा—बाबा ठीक स्टुडियो के नीचे, के कमरे में रहते हैं, स्टुडियो के गिर पड़ने पर बाबा दब जाएँगे।

क़ब्रिस्तान, घर के सामने टूटी हुई क़ब्र—विशेष कुछ याद नही आता।

ऊपर जो भाव पाए गए है, वे स्वप्न के अव्यक्त अंश हैं। पाठक शायद अब भी स्वप्न का अर्थ नहीं समझ सके हैं। किन्तु स्वप्न देखने वाले के मन की जो इच्छा इस स्वप्न में चरितार्थ हुई, वह अनेकों के मन में पाई जाती है। इसलिए जानकार आदमी बड़ी आसानी से उसका अर्थ समझ जायगा। पाठक अबाध-भावानुसङ्ग में (१) चिन्हित अंशों को दुबारा पढ़ने पर देखेंगे कि उसमें लड़ाई-झगड़े, झमेले और कष्ट का भाव वर्त्तमान है। बाप के साथ लड़ाई; फ-बाबू, इत्यादि के साथ झगड़ा; हाईकोर्ट और इम्पीरियल-लाइब्रेरी मे कष्ट, इत्यादि।

दूसरे अंश में विरोध का आभास है। भाई के साथ बाबा का विरोध, दलालों के साथ मतभेद, इत्यादि। पाठक देखेंगे कि इसी अंश में बाबा के सीढ़ी पर से गिर पढ़ने की बात है।

तीसरे अंश में टूटी हुई दीवार, फूटा मकान और क़ब्र की चर्चा है। इस में मौत का इशारा है।

चौथे अंश में "क" बाबू की चिन्ता-धारा विशेष कौतूहल-जनक है। "बाबा ठीक नीचे के घर में रहते हैं, स्टुडियो के गिर पड़ने से वे दब जाएँगे।" इसके बाद फिर क़ब्र का ज़िक्र है। इस चिन्ताधारा में बाप की मृत्यु का आभास है।

पहले अंश में बाप के साथ कलह, दूसरे अंश में दादा बाबा के साथ विरोध, तीसरे अंश में क़ब्र की चर्चा है और चौथे अंश में बाबा दब जाँएगे तथा दुबारा क़ब्र की बात उठी है।

फ्रयेड के मत से हम में से प्रत्येक के मन में कई असामाजिक और अन्यायपूर्ण इच्छाएँ हैं, ये इच्छाएँ रुद्ध अवस्था में रहने के कारण सहज में प्रकाशित नहीं होतीं। हमें उनके अस्तित्व का भी पता नहीं रहता। ये रुद्ध इच्छाएँ ही स्वप्न में काल्पनिक परितृप्ति प्राप्त करने की चेष्टा करती हैं। जैसे हम सब में बाप के प्रति प्रेम और भक्ति की इच्छा है, वैसे ही बाप के प्रति विरुद्ध-भाव भी हमारे मन में होता है। 'बाप मरे'—यह भाव बड़े आदमियों में अनेक समय प्रकाशित होता है। बाप को मार कर राजगद्दी लेने के दृष्टान्त इतिहास में अनेक पाए जाते हैं। जानवरों में भी बाप-बेटों में झगड़ा स्वाभाविक है। यह विरोध भाव आदिम युग से मनुष्य मात्र में चला आया है; केवल सुविधा-सुयोग पाते ही यह प्रकाशित होने की चेष्टा करता है। यह विरुद्ध-भाव मन में रुद्ध रहने के कारण हम आसानी से इस का अस्तित्व नहीं जान सकते; इतना ही नहीं, किसी के बता देने पर भी हम सहज में मानना नही चाहते। किन्तु इसके अस्तित्व के परोक्ष-प्रमाण मिलने कठिन नहीं हैं। बाप के प्रति यथेष्ट प्रेम होते हुए भी अनजान में उनके प्रति वैर-भाव का होना कोई विचित्र बात नहीं है। "क" बाबू के स्वप्न मे वही प्रकाशित हुआ है। उन्होंने स्वप्न में पिता की मृत्यु-कामना की है। ऐसे सीधे स्वप्न का ऐसा टेढा अर्थ हो सकता है, इस पर कोई झट से विश्वास न करेगा किन्तु बारम्बार विभिन्न स्वप्नों से ऐसी चिन्ता धारा का अस्तित्व प्रमाणित होने के कारण स्वप्न के ऐसे अर्थ को अस्वीकार करने के लिए जी नहीं चाहता। "क" बाबू भी स्वप्न का अर्थ सुन कर घोर आपत्ति करने लगे; बोले, "यह गँजेड़ी-पन है, विश्वास के सम्पूर्ण अयोग्य है। क्या मैं बाप की मृत्यु-कामना कर सकता हूँ!" मैं ने उन्हें समझाया कि सज्ञान अवस्था में ऐसी इच्छा उनके मन में थोड़े ही उठती है, निर्ज्ञान अवस्था में ही उठती है, "क" बाबू जरा चुप रह कर बोले, "आश्चर्य! मुझे अब अच्छी तरह याद आता है कि मैंने पहले एक बार बाबा जी की मृत्यु का स्वप्न देखा था"। मैं

"मेंढक खाता है, निमन्त्रण में जाता है, गंगा के घाट पर, सूर्य-ग्रहण, बहुत भीड़ हुई है, गाड़ी गई थी, ठाकुर के पास भीड़ हुई थी, साईकिल पर आफ़िस जाता हूँ, सुकिया एमहार्स्ट स्ट्रीट का मोड़, घोड़ा गाड़ी का अड्डा, गाड़ियों का अड्डा, रास्ते में जल भरा है, बरफ-बिक्री, रोशनी धुँधली है, साँप मेंढक खाता है, कबाब-रोटी, जूतों की दुकान, जूते खरीदने होंगे।"

उपरोक्त 'बरफ़-बिक्री' की बात मन में आने का यही कारण है कि उसी समय रास्ते में कुल्फी वाला हाँक लगाता हुआ जाता था। आँखे बन्द थीं। घर की रोशनी परीक्षाधीन व्यक्ति को धुँधली मालूम हुई, उसने वैसा ही कहा। इस परीक्षा के थोड़ी देर पहले मेरे एक दूसरे मित्र ने कहा था कि बरामदे में मेंढक आया है। हम देखते हैं कि बरफ़ की बात के बाद परीक्षाधीन व्यक्ति की चिन्ता-धारा आस-पास की चीज़ों और उस समय के प्रत्यक्ष की ओर गई है। इसलिए इस जगह ही भाव-प्रवाह को रोकना ठीक है। अधिकांश स्थलों पर परीक्षाधीन व्यक्ति स्वयं ही चुप हो जाते हैं; कहते हैं कि और कुछ भी उनके मन में नहीं आता। अभिज्ञ व्यक्ति अबाध-भावानुसङ्ग के समय विषयान्तर होते ही उसे जान सकता है। यहाँ परीक्षाधीन व्यक्ति की प्रथम चिन्ता ही है; 'मेंढक खाता है'। इस परीक्षा के थोड़ी देर पहले ही मेंढक की बात हो रही थी; उसे वह तब भी भूल न सके थे। उनका मन उस समय पूर्ण-रूप से निष्क्रिय नहीं हुआ था। परीक्षाधीन व्यक्ति की यह अबाध-भावानुसङ्ग की प्रथम चेष्टा थी। उन्होंने थोड़ी देर पहले ही अख़बार में सूर्य-ग्रहण और भीड़ की बात पढ़ी थी, वे चिन्ताएँ ही मन में उठी थीं। अबाध-भावानुसङ्ग की दृष्टि से इस परीक्षा का कोई मूल्य नहीं। कारण देखा जाता है कि परीक्षाधीन व्यक्ति सम्पूर्ण-रूप से निश्चेष्ट नहीं हुए। कुछ दिन अभ्यास करने पर इस विधि से मन के अन्तःस्थल की अनेक सुप्तचिन्ता-धाराओं का पता चल सकता है। प्रथम नये शिक्षार्थी को अबाध-चिन्ता द्वारा विशेष सफलता नहीं भी हो सकती है।

नाम याद करने का निश्चय किया। मन को निष्क्रिय करके जो मन में आने लगा, लिख लिया। पहले मन में आया—'वशिष्ठ' उस के बाद 'इन्द्रजित'। ये दो नाम याद आने पर भी मैंने सोचा कि इन दोनों में से एक भी उसका नाम नहीं है। तब भी दोनों नाम लिख लिए। उस के बाद मन में आया 'योगेश्वरी'। समझ न सका कि क्यों ऐसे अद्भुत नाम मन में आ रहे हैं। ये नाम ही बार-बार मन में आने लगे। जब इतना करने पर भी नौकर का नाम याद न कर सका, तब हार कर कोशिश छोड़ दी। सोचा कि कल नाम पूछ लूँगा। दूसरे दिन सवेरे नाम सुनते ही याद आया कि हाँ, मुनीश्वर ही है। पाठक देखेंगे कि पहले ही मेरे मन में 'वशिष्ठ' आया था—मुनियों में श्रेष्ठ-मुनि। मुनीश्वर की 'नी' आभास इन्द्रजित की 'इन' में हैं; केवल उलटी मात्रा है। इस के बाद 'मुनीश्वर' का 'ईश्वर' 'योगेश्वरी' में आकर पड़ा है। अतएव देखा जाता है कि जो चिन्ताएँ प्रथम असम्बद्ध जान पड़ती थीं; उन में भी एक श्रृङ्खला है। पाठक इसे आकस्मिक बात समझ सकते हैं; किन्तु यदि बार-बार ऐसा होता देखा जाय और बहु-संख्यक आदमियों के सामने इसी प्रकार की बात आए, तब तो बात को फिर हँस कर नहीं उड़ाया जा सकता है। इस तरह अर्थ निकालने का कष्ट 'कल्पना' कहना ठीक नहीं। इसलिए स्वप्न का अर्थ निकालने के लिए अबाध-भावानुसङ्ग की आवश्यकता है।

कभी-कभी देखा जाता है कि अबाध-भावानुसङ्ग में चिन्ता की धारा थमना नहीं चाहती। ऐसे स्थलों पर चिन्ता-धारा को बल-पूर्वक थमा देना पड़ता है। किन्तु यह अभिज्ञता सापेक्ष है कि कहाँ चिन्ता-धारा को थमाना चाहिए और कहां न थमाना चाहिए। साधारणतः जब परीक्षाधीन व्यक्ति की चिन्ता बाहर के विषयों की ओर जाने लगे, तभी बन्द कर देना चाहिए। मैंने एक मित्र को अबाध-भाव-प्रवाह में मन को छोड़ देने के लिए कहा तथा एक स्वप्नांश सुनाया। नीचे उनकी चिन्ता-

पान खाना बहुत पसन्द करता हूँ परन्तु मैंने निश्चय किया कि आज से पान न खाऊँगा। मैं पुस्तक पढ़ने में तल्लीन हो रहा हूँ, पास में पानों से भरा डिब्बा रक्खा हुआ है। यह मालूम नहीं होता कि कब पढ़ते-पढ़ते अन्यमनस्क दशा में डिब्बे से निकाल कर पान मुँह में डाल लिया। ख़याल होने पर देखा कि पान चबा रहा हूँ। इस स्थल पर पान लेना मेरी इच्छाकृत है, पर मैं उस इच्छा का अस्तित्व नहीं जानता। कब मेरे मन में वह इच्छा उदय हुई थी, यह चेष्टा से नहीं जाना जा सकता। पर काम देखने पर सन्देह नहीं रहता कि पान खाने की इच्छा थी।

यहाँ यह देखना है कि यह इच्छा अनुमान-सापेक्ष है, तथापि इसके अस्तित्व या सत्यता के सम्बन्ध में हमें सन्देह नहीं है। और भी देखना चाहिए कि इस प्रकार की इच्छा अपरिस्फुट होते हुए भी हम से परिस्फुट इच्छा के विरुद्ध काम करा सकती है। मन में तै किया था कि पान नहीं खाऊँगा। किन्तु पान खाने की इच्छा ने मुझे अन्यमनस्क पाकर मुझसे काम करा लिया।

(४) जिन इच्छाओं का अस्तित्व अनुमान-सापेक्ष है, किन्तु विश्लेषण से जिनकी प्रकृति का ज्ञान होने पर भी मन में उनका होना इतना असम्भव जँचता हो कि विश्वास न किया जा सके। जैसे, मैं व्यापारी हूँ। पावनेदारों ने रुपयों के लिए बिल भेजे हैं। खरे होने का मुझे घमंड है। पर सदा ही पावनेदारों के पावने रुपए भेजने में मेरी भूल होती है। मैं जहाँ तक समझता हूँ, इस स्थल पर यह अनुमान करना असङ्गत न होगा कि रुपये देने की मेरी इच्छा नहीं है। मेरे पावनेदार ऐसा ही समझते हैं, कहते हैं कि यदि देने की इच्छा होती तो देते; अतएव मुझे गाली देने में आगा-पीछा नहीं करते। मैंने उन्हें समझाया कि काम के झंझट में भूल हो गई है। उन्होंने कहा, "वाह साहब, आप अपने रुपये वसूल करना तो नहीं भूले"। काम के झंझट में भूल होना यह एक बहाना है। इसे मानने में कइयों को आपत्ति होगी,—ख़ास

इच्छा से है, किन्तु यह समझ में नहीं आता है कि मारते समय वह इच्छा मेरे मन में हुई थी या नहीं। थप्पड़ मारने, मच्छर उड़ाने, अन्यमनस्क भाव से काम करने जैसी परिस्थितियों में इच्छा के अस्तित्व को जानने के लिए मानसिक विश्लेषण का आश्रय लेना पड़ेगा। सारांश यह है कि इच्छा के अनेक प्रकार-भेद हैं। जैसे:—

(१) जो इच्छाएँ सर्वथा स्पष्ट हैं तथा जिन का अस्तित्व सरलता से जाना जा सकता है। जैसे, सैर करने के लिए इडेन गार्डन जाऊँ या परेशनाथ, इसी असमञ्जस में पड़ा हूँ; अन्त में स्थिर किया कि परेशनाथ जाऊँगा। इस स्थल पर स्पष्ट-रूप से परेशनाथ जाने की इच्छा मन में उदित हुई है।

(२) जो इच्छाएँ मन में अस्पष्ट-रूप में हैं, तथापि जिन के अस्तित्व के सम्बन्ध में सन्देह नहीं जैसे, प्रतिदिन के नियमानुसार सवेरे उठकर मुँह धोना। इस स्थल पर यह मालूम नहीं होता कि मुँह धोने की इच्छा होने से ही मुँह धोया है। किन्तु किसी के पूछने पर यह बात मालूम हो सकती है। सब प्रकार के अभ्यस्त कामों मे इस प्रकार की इच्छा का अस्तित्व वर्त्तमान होता है। यदि प्रथम पर्य्याय की इच्छा को केन्द्रस्थान में अवस्थित कहा जाय तो इसी द्वितीय पर्य्याय की इच्छा को ज्ञान के प्रान्त में अवस्थित कहा जा सकता है।

(३) जो इच्छाएँ अपरिस्फुट हैं और जिन का अस्तित्व सहज में जान लिया जाता हो जैसे, क्रोधित हो कर थप्पड़ मारना। यह नहीं कहा जा सकता कि यह इच्छा बिल्कुल ज्ञान के बाहर है। इस प्रकार की इच्छा का अस्तित्व जानने के लिए ज़रा मन को विश्लेषण करने की ज़रूरत है।

(४) जिन इच्छाओं का अस्तित्व केवल अनुमान सापेक्ष है। मन को विश्लेषण करने पर भी इस प्रकार की इच्छाओं के अस्तित्व का पता नहीं लगता। केवल काम देख कर या पहले ऐसी इच्छा हुई थी यह जान कर उसके अस्तित्व का अनुमान करना पड़ता है जैसे, मैं

की इच्छा की आलोचना करूँगा, वह हठात् सुनने पर अद्भुत और असम्भव मालूम होगी। कहने की ज़रूरत नहीं कि यह इच्छा हमारे ज्ञान के बाहर होने के कारण हम केवल अनुमान से ही उसका अस्तित्व जान सकते हैं। जैसे, यदि मैं कहूँ कि हम सब में ही मरने की इच्छा है, तब तो सभी इसे असम्भव बता कर हँसी में उड़ा देंगे। हम तो सदा-सर्वदा जीने के लिए मर रहे हैं; मरना चाहें—यह तो मन बिलकुल नहीं मानना चाहता। कैसे इस प्रकार की इच्छा के अस्तित्व का निर्णय हो सकता है, यह एक उदाहरण देकर समझाता हूँ। कल्पना कीजिए कि रामबाबू कई प्रकार के दुःख-कष्ट भोगने के कारण संसार से उदासीन हो गए। वे आत्म-हत्या करने के विचार से गङ्गा में कूद पड़े। इस स्थल पर इस विषय में कोई सन्देह नहीं रहता कि रामबाबू को मरने की इच्छा हुई थी। यह इच्छा प्रथम पर्याय की इच्छा की भाँति ही उनके ज्ञान के केन्द्रस्थल में अवस्थित थी। हम सभी वृद्धावस्था में मरने के लिए उत्सुक हो सकते हैं, अथवा दुःख-कष्टों की ज्वाला से यौवन में भी मृत्यु-कामना कर सकते हैं। इससे प्रतीत होता है कि हमारे सभी के मन में मरने की इच्छा सुप्त अवस्था में वर्त्तमान है। सुविधा-सुयोग पाते ही वह अविलम्ब प्रकाशित हो जाती है। जिस इच्छा का अस्तित्व न हो, वह कभी प्रकाशित नहीं हो सकती। हमारे सभी के पिल्ली है। स्वस्थ अवस्था में उसके अस्तित्व का बोध नहीं होता। किन्तु जो मलेरिया के बीमार हैं, वे उसे बख़ूबी जानने लगते हैं। मलेरिया नयी पिल्ली की सृष्टि नहीं करती—जो पिल्ली है उसे ही बढ़ने में मदद पहुँचाती है। इसी प्रकार हमारी मृत्यु-इच्छा केवल दुःख-कष्ट या बुढ़ापे में प्रकाशित होती है। एक और उदाहरण देता हूँ। हरीबाबू बिलकुल तैरना नहीं जानते। यह वे भली-भाँति जानते हैं कि जल मे गिरने पर डूब जाएँगे। कालवैशाखी का दिन, आकाश में घन-घटा, वे अकेले नाव पर चढ़े और बोले, कि ज़रा गङ्गाजी की सैर की जायगी। इस दशा में तूफान आया और वे नाव डूबने के कारण डूब

कर देनदारों को कि अनजान में मेरे मन में रुपये देने की इच्छा न होने के कारण ऐसा हुआ है। ऐसा अनुमान करना युक्ति-युक्त है या नहीं ? यदि किसी एक घटना से ऐसा अनुमान किया जाय, तो वह ठीक नहीं भी हो सकता है; किन्तु यदि देखा जाय कि मेरी वारम्बार रुपये देने में भूल होती हो और मेरे अन्यान्य व्यवहारों से भी रुपये न देने की इच्छा प्रकाशित होती हो, तब यह अनुमान करना बेजा न होगा कि रुपये न देने की इच्छा ही मेरे मन में है। यहाँ इसकी आलोचना न की जायगी कि कैसे प्रमाणों के आधार पर इस प्रकार की इच्छा का अस्तित्व स्वीकार करना चाहिए। हमें इस प्रकार की इच्छा का ज्ञान नहीं होता,—इतना ही नहीं यदि कोई उसका अस्तित्व प्रमाणित करता है तो भी हम उसे आसानी से स्वीकार करना नहीं चाहते। पाठक देखेंगे कि हम ऐसी इच्छा से जो काम करते हैं; उनके लिए कारण दिखाते हैं। जैसे, काम के झंझट में भूल होना। ऐसे कारण दिखाना इतना स्वाभाविक है कि मनोवैज्ञानिकों ने इसका एक नया नाम रक्खा है—Rationalization ; इसे हिन्दी में युक्त्याभास कहा जा सकता है। यह युक्त्याभास हठात् सुनने पर न्यायसङ्गत युक्ति जैसा मालूम होता है, किन्तु विचार में नहीं ठहरता। जैसे, बिल के रुपये न देने का कारण 'काम के झंझट में भूल होना' बताता हूँ तथा अपने पावने वसूल करने में मेरी बिलकुल भूल नहीं हुई। तर्क से परास्त होने पर भी युक्त्याभास दिखाने वाले कहेंगे कि भूल हो गई है, अन्यमनस्कता से हुआ है, ऐसा सभी से हो जाता है, इत्यादि। पाठक देखेंगे कि यह भूल या अन्यमनस्कता आकस्मिक नहीं, किसी नियम के अधीन है।

(६) ऊपर जिस इच्छा का ज़िक्र किया है, वह ज्ञान के वहिर्भूत होते हुए भी, अनुमान से उसका अस्तित्व निरूपित होने पर, वह इच्छा असम्भव ज्ञात नहीं होती। हमारी चेतना में किसी समय ऐसी इच्छा उत्पन्न हो सकता है। दूसरे को छकाने की इच्छा ऐसी कुछ विचित्र नहीं है कि उसे हम बिलकुल अस्वीकार करें। किन्तु अब मैं जिस प्रकार

भय-रूप में प्रकाशित होना अनेक समय देखते हैं। चोर को चोरी करने की इच्छा है, किन्तु वह सर्वदा शङ्कित रहता है कि कहीं उस का भन्डा-फोड़ न हो जाय। हमें किसी भी असत् इच्छा को छिपाने में पद-पद पर भय होता है, यह समझते हैं कि वह प्रकाशित हो जायगी। हरिबाबू वाले उदाहरण में उन की मृत्यु-इच्छा का अस्तित्व सिद्ध होते हुए भी यह देखा जाता है कि उनके ज्ञान में जीने की इच्छा ही प्रबल है। इस जगह यह कहना पड़ेगा कि मन में जीने की और मरने की दो विरुद्ध इच्छायें हैं। कभी दो विरुद्ध इच्छाएँ एक साथ मन में प्रकाशित नहीं हो सकतीं। अतएव सुख-इच्छा प्रकाशित होने में बाधा या भय-रूप में ज्ञान-गोचर होती है। पूर्व-कथित स्वप्न के उदाहरण में "क" बाबू को पिता की मृत्यु-कामना करते देखा गया था, यहाँ उसके सम्बन्ध में कुछ कहने की इच्छा है। जैसे हमारे मन की अगोचर मृत्यु-इच्छा छिपी हुई है, वैसे ही "क" बाबू की पिता की मृत्यु-कामना भी मन में अगोचर रूप से छिपी हुई थी। उन्होंने ज्ञान में उसका कुछ आभास नहीं पाया। लेकिन जब मैंने उन्हें उस इच्छा का अस्तित्व दिखाया, तो भी उन्हों ने उसे आसानी से स्वीकार न किया। बाप की मृत्यु-कामना तो दूर की बात है, उन के ज्ञान में यह आशङ्का ही प्रबल थी कि कहीं बाप की मृत्यु न हो जाय।

कर मर गए। इस स्थल पर यह कहना नितान्त असङ्गत नहीं है कि हरीबाबू के मन में भीतर ही भीतर मरने की इच्छा थी। यह सत्य है और मानना पड़ेगा कि उनके मन में मरने की इच्छा उदित नहीं हुई थी। यह कहना अनुचित नहीं है कि मृत्यु की सम्भावना होते हुए भी हम जब कोई विपद्-जनक काम करते हैं तो हम मृत्यु-इच्छा के वश ही वैसा करते हैं। यह सच है कि यह मृत्यु-इच्छा मन में सुप्त होने के कारण हम अपने कार्य्य के अन्य अनेक कारण दिखाया करते हैं। इस प्रकार का युक्त्याभास पूर्व पर्य्याय की इच्छा से किए गए कार्यों में भी देखा गया है। कई कवि शेली (Shelly) की मृत्यु को आकस्मिक समझते हैं। मेरे मत से वह एक प्रकार से आत्महत्या है। तूफ़ान आने वाला है, यह जानते हुए भी शेली दो अनाड़ी आदमियों के साथ नाव में बैठ समुद्र में चले गए और डूबकर मर गए। जो स्वेच्छा से युद्ध में जाते हैं, उनके मन में भी इस प्रकार की मरने की इच्छा होती है। इस मृत्यु-इच्छा की प्रेरणा सब स्थलों पर समान नहीं होती। जो जान-बूझ कर आत्म-हत्या करते है (जैसे, रामबाबू), उनकी मरने की इच्छा की अपेक्षा हरिबाबू—जो तैरना न जानते हुए भी तूफ़ान मे नाव पर सवार होते हैं—उन की मरने की इच्छा की प्रेरणा अपेक्षा-कृत कम है। जो युद्ध में जाते हैं, उन की मृत्यु-इच्छा और भी अप्रकाशित कही जा सकती है। जो गाड़ी-घोड़ों की भीड़ में पड़ते हैं, उन की भी इसी प्रकार की मरने की इच्छा है, कहना चाहिए। हम प्रतिदिन के कार्यों में प्रायः अपने को ही विपद में डाल देते हैं। अतएव प्रतिदिन ही हमारी मृत्यु-इच्छा नाना कार्यों में प्रकाशित होती है। किन्तु इस इच्छा के अस्तित्व का निर्णय केवल युक्ति और अनुमान से ही करना पड़ता है। इस इच्छा का एक लक्षण यह है कि वह हमारे ज्ञान में तो कभी इच्छा के रूप में प्रकाशित हो ही नहीं सकती, वरन् भय के रूप में दृष्टि-गोचर होती है। भीतर मरने की इच्छा है, किन्तु बाहर में भय है। इस इच्छा का

कुछ इच्छाएँ अज्ञात क्यों होती हैं

कि कार्य्य में बाधा होने से इच्छा परिस्फुट होती है। जो कार्य-बाधा-हीन होते हैं, उनमें इच्छा का अस्तित्व भी अप्रकाशित होता है। अभ्यास ही बाधा दूर करता है और इसके साथ-साथ इच्छा को भी अप्रकाशित करता है। बहुत-से मनोवैज्ञानिकों के मत से आदिम-जीव के प्रत्येक कार्य्य ही इच्छा-सम्भूत होते थे। क्रम-विवर्त्तन के कारण हृत्पिण्ड का स्पंदन और निश्वास-प्रश्वास, प्रभृति क्रियाएँ इच्छा के बहिर्भूत हो गईं। इसी प्रकार दैहिक कार्यों में भी किसी अज्ञात इच्छा को माना जा सकता है।

यदि किसी कार्य में बाधा अधिक हो, तो उस कार्य्य को करने की चेष्टा ही सम्भव नहीं होती। ऐसे स्थलों पर भी इच्छा नहीं देखी जाती। जैसे सर्वथा बाधा-हीन कार्य में इच्छा अप्रकाशित होती है, वैसे ही बाधा अलङ्घनीय होने से इच्छा प्रगट नहीं होती। जब मन में दो विरुद्ध इच्छाएँ वर्त्तमान होती हैं—जैसे, मरने की और जीने की—तब एक के पक्ष में दूसरी इच्छा-जनित बाधा अलङ्घनीय होती है, तथा वह इच्छा सर्वथा ज्ञान के बहिर्भूत हो जाती है। यह मेरा मत है। जहाँ पर बाधा लङ्घनीय है, वहाँ चेतना का आविर्भाव होता है। अन्यथा नहीं।

ऊपर इच्छा के कुछ विभागों की कल्पना की गई है। इच्छा को जिन ६ विभागों में विभक्त किया गया है, वह केवल समझाने की सुविधा के लिए है। वस्तुतः संज्ञात-इच्छा से लेकर निर्ज्ञात-इच्छा तक असंख्य भागों की कल्पना की जा सकती है। जितने भी विभाग किए जाएँगे, वे काल्पनिक होंगे। फ्रयेड ने इच्छा के तीन विभाग किए हैं:—

(क) जो इच्छा[1] ज्ञान के अधिकार के अन्तर्गत है।

(ख) जो इच्छा[2] चेष्टा के द्वारा ज्ञान में लाई जा सके; और

---

1 Concious

कुछ इच्छाएँ अज्ञात क्यों होती हैं ?

हमारे मन में ऐसी बहुत सी अज्ञात इच्छाएँ होती हैं, जिनके वश में हो कर हम अनेक कार्य करते हैं। अब यहाँ पर यह बतलाया जायगा कि ये इच्छाएँ क्यों हमारे ज्ञान के बाहर हो जाती हैं। इस विषय में मनोवैज्ञानिक एक मत नहीं हैं और न उन्होंने इस प्रश्न की विशद आलोचना की है। मैं यहाँ अपना मत ही प्रकाशित करूँगा। मैं साइकिल पर चढ़ना सीखता हूँ। 'गिर न पड़ूँ'—इसके लिए मुझे सचेष्ट रहना पड़ता है, पद-पद पर यथेष्ट इच्छा-शक्ति का प्रयोग करना पड़ता है। कुछ दिन बाद अभ्यास हो जाने पर मुझे फिर गिरने से बचने के लिए विशेष चेष्टा नहीं करनी पड़ती। कार्य आप से आप होता रहता है। सभी प्रकार के अभ्यस्त कार्यों में यह ख़ूबी होती है कि उनमें इच्छा के अस्तित्व का कुछ भी पता नहीं चलता। अभ्यास होने के पहले हम जिस इच्छा को ज्ञान में स्पष्ट-रूप से देखते थे, अभ्यास हो जाने पर हमें उस इच्छा का अस्तित्व मालूम नहीं होता—मालूम करने के लिए हमें अनुमान का आश्रय लेना पड़ता है। इच्छा करके कोई कार्य किया जाय तो उसके साथ किसी न किसी चेष्टा का रहना आवश्यक होगा और यदि ऐसी चेष्टा बार-बार हुई तो मन में क्लान्ति आ सकती है। यह अवश्य है कि कार्य में अभ्यस्त हो जाने पर ऐसी चेष्टा की आवश्यकता नहीं रहती। इसलिए अभ्यस्त कार्यों में क्लान्ति भी कम होती है। अतएव देखा जाता है कि इच्छा के ज्ञान के बहिर्भूत होने से एक लाभ है। कार्य्य की बाधा कम होने के साथ-साथ इच्छा भी ज्ञान के बहिर्भूत हो जाती है। इसलिए यह कहा जा सकता है

रुद्ध इच्छा किस प्रकार प्रकाश में आती है?

यह पहले कहा जा चुका है कि हमारे सम्पूर्ण अनजान में भी मन में कई प्रकार की इच्छाएँ उठ सकती हैं और इन इच्छाओं के वश में होकर हम अनेक प्रकार के कार्य किया करते हैं, किन्तु पूछे जाने पर हम उनका सही कारण नहीं बता सकते—एक मन-गढ़न्त कारण या युक्त्याभास प्रदर्शित करते हैं। यह भी बतलाया गया है कि क्यों इस प्रकार की इच्छा ज्ञानगोचर नहीं होती। मन की रुद्ध या अवदमित इच्छा कई प्रकार से प्रकाशित हो सकती है। स्वप्न-तत्व की आलोचना करने में यह प्रथम आवान्तर प्रतीत हो सकती है, किन्तु स्वप्न में मन की अवदमित इच्छा ही काल्पनिक परितृप्ति प्राप्त करती है, इसलिए इसकी आलोचना करना बहुत ज़रूरी है।

अवदमित इच्छा बाधा पाने के कारण ही ज्ञानगत नहीं होती, अतएव रुद्ध-इच्छा की अभिव्यक्ति समझने के लिए यह पहले जानना चाहिए कि संज्ञात-इच्छा बाधा पाने पर क्या होती है? संज्ञात-इच्छा बाधा पाने पर जिस-जिस प्रकार से व्यक्त होने की चेष्टा करती है, अवदमित इच्छा भी प्रकाशित होने के लिए प्रायः उन्हीं उपायों को काम में लाती है। अवश्य, प्रकाशकाल में संज्ञात-इच्छा का रूपान्तर होने पर हम उसका कारण जान सकते हैं। जैसे, यदि मुझे दूध नहीं मिल सके और मैं मट्ठा ही पी लूँ तो यह किसी से छिपा नहीं रहता कि दूध की साध मट्ठे से मिटाई जा रही है। किन्तु जब अज्ञात-इच्छा रूपान्तरित हो प्रकाशित होती है, तब हठात् कार्य्य देखकर यह नहीं समझा जा सकता कि वह ऐसी इच्छा का ही फल है। केवल

(ग) जो इच्छा[3] ज्ञान में न लाई जा सके।

किन्तु मैं चार विभागों का पक्षपाती हूँ:—

(१) संज्ञात-इच्छा[4], अर्थात् जो इच्छा ज्ञान के अधिकार के भीतर हो।

(२) असंज्ञात-इच्छा[5], अर्थात् चेष्टा द्वारा जहाँ ज्ञान का अधिकार विस्तृत किया जाय।

(३) अन्तर्ज्ञात-इच्छा[6], अर्थात् ज्ञान के अधिकार के बहिर्भूत होते हुए भी जिस इच्छा का किसी न किसी दिन मन में उठना सम्भव है।

(४) अज्ञात या निर्ज्ञात-इच्छा[7], अर्थात् जो इच्छा किसी दिन मन में न उठ सके; जिसका अस्तित्व केवल अनुमान सापेक्ष हो।

स्वप्न में इन सब प्रकार की इच्छाओं का अस्तित्व देखा जाता है। फ्रयेड का मत है कि ज्ञान के बहिर्भूत, अर्थात् निर्ज्ञात इच्छा ही मूलतः स्वप्न में काल्पनिक तृप्ति प्राप्त करने की चेष्टा करती है और अन्यान्य पर्याय की इच्छाओं के साथ संयुक्त होने के कारण अन्य प्रकार की इच्छाएँ भी स्वप्न में देखी जाती हैं। प्यास लगी है, स्वप्न देखा कि जल पीता हूँ। पाठक समझ सकते हैं कि इसमे परिस्फुट या संज्ञात-इच्छा ही परितृप्त हुई है। किन्तु फ्रयेड के मतानुसार विश्लेषण करने पर इस प्रकार के स्वप्न में भी किसी-न-किसी प्रकार की अज्ञात-इच्छा का अस्तित्व देखा जायगा।

---

3 Unconcious.

4 Concious

5 Fore-concious.

6 Sub-concious.

7 Unconcious.

है। जैसे दो विभिन्न शक्तियां विरोधी हो कर परस्पर बाधा पहुँचाती हैं; वैसे ही दो विरुद्ध इच्छाएँ भी एक दूसरे को बाधा पहुँचाती हैं, या एक दूसरे को परास्त कर सकती हैं।

(२) पीछे चीनी देखकर खाने की इच्छा हो, इसलिए मना कर दिया कि खबरदार, चीनी मेरे घर में न आने पाए। यह कुछ ऐसा है कि 'राधा काली है, उससे प्रेम न करूँगा।' पाठक यहाँ देखेंगे कि भीतर जिसके लिए इच्छा है, बाहर उसी के प्रति अनिच्छा प्रकट करता हूँ।

(३) किसी मित्र के घर गया हूँ। उन्होंने खाने के लिए छाना चीनी, फलमूल इत्यादि दिए। उन से कहा कि 'मैं चीनी नहीं खाता।' परन्तु बातें करते-करते अन्यमनस्क-भाव से चीनी खा गया।

(४) चीनी खाने की प्रबल इच्छा है परन्तु खाने का कोई उपाय नहीं। मन में बड़ा संताप हुआ; अनर्थक हाथ-पैर पटक कर नौकर-चाकरों को बकने लगा।

(५) चीनी खाने की इच्छा हुई। मन को समझाया कि संसार में चीनी ही ऐसा कौन पदार्थ है जिसे खाये बिना न सरेगा। नौकर से कहा कि 'सत्तू ला।' पेट भर कर सत्तू ही खा लिया।

(६) चीनी न खा सकने पर सैकरीन खा कर दूध की साध मट्ठे से मिटाई, या मीठे फल-मूलों का भक्त बन गया।

ऊपर के छहों दृष्टान्तों में किसी-न-किसी कार्य्य में चीनी खाने की इच्छा प्रकाशित हुई है। किन्तु अब जो उदाहरण दूँगा, उनमें इच्छा की अभिव्यक्ति कार्य्य में नहीं, कल्पना में होगी।

(७) चीनी खाने की इच्छा हुई। मन में कल्पना की कि खूब चीनी खाता हूँ। यह आकाश-कुसुम की कल्पना के समान है। ग़रीब मनुष्य भी कल्पना के रथ पर सवार होकर बड़ा आदमी बन जाता है।

(८) यदि चीनी खाने की इच्छा को अनुचित समझता होऊँ, तब मन में चीनी खाने की कल्पना करने में भी बाधा पहुँचेगी। उस

विश्लेषण के द्वारा ही ऐसे कार्य का यथार्थ कारण निर्णय करना सम्भव है।

कल्पना कीजिए कि मैं रोगी हूँ। मुझे चिकित्सक ने चीनी खाने के लिए निषेध किया है। किन्तु मैं चीनी खाना बहुत पसन्द करता हूँ। अतएव इस निषेध ने मुझे बड़ी उलझन में डाल दिया। एक ओर चीनी खाने की इच्छा और दूसरी ओर चिकित्सक का निषेध। मुझे सन्देह है कि मैं अन्य किसी अवस्था में ऐसा निषेध मानता या नहीं। किन्तु अब न मानने से रोग बढ़ने और मृत्यु तक की सम्भावना है। अतः आप ही बाध्य होकर चिकित्सक का निषेध मानना पड़ता है। यहाँ पाठक देखेंगे कि हम बाहर की बाधा या निषेध तभी मानते हैं जब हमारी किसी इच्छा के साथ उस का मेल होता है। यहाँ मेरे मन में जीने की इच्छा है, इसलिए चिकित्सक का निषेध मानता हूँ। इसी प्रकार, पीछे जेल में कष्ट उठाना पड़े और फलस्वरूप हमारे सुख में बाधा पहुँचे; इसलिए हम पुलिस का निषेध मानते हैं। अतएव आदि से अन्त तक यह सिद्ध हुआ कि मन की किसी इच्छा को बाधा देने या नष्ट करने के लिए दूसरी एक इच्छा की आवश्यकता है। मेरी चीनी खाने की इच्छा को बाहर की कोई भी बाधा नष्ट नहीं कर सकती; सकती है केवल मेरी इच्छा के पूरी होने के पथ में (जैसे, मेरे चीनी खाने में) बाधा देना। किन्तु स्मरण रखना चाहिए कि वह बाधा मेरी इच्छा की बाधा नहीं—इच्छा अनुयायी कार्य्य की है। चीनी खाने के लिए पैसे न होने से या किसी के जबरन चीनी खाना बन्द कर देने से, मेरी चीनी खाने की इच्छा नष्ट न होगी। ऊपर के उदाहरण में मेरी चीनी खाने की इच्छा में रोग से छुटकारा पाने की इच्छा बाधा पहुँचाती है। अब यहाँ यह बतलाने की चेष्टा करूँगा कि ऐसे स्थल पर मेरा आचरण कितने प्रकार का हो सकता है :—

(१) डाक्टर के निषेध करने पर भी चीनी खाऊँगा। यहाँ चीनी खाने के सुख की इच्छा ने, मेरी जीने की इच्छा को परास्त कर दिया

भोगना पड़ेगा। उसे देख मन में बड़ा कष्ट होता है, बेचारा चीनी खा-खाकर शरीर नष्ट कर रहा है, इत्यादि। यहाँ अपनी इच्छा दूसरे के सिर लादता हूँ और यह प्रमाणित करने की चेष्टा करता हूँ कि वह खराब है। इस प्रकार अपनी इच्छा दूसरे के सिर लादने और उसके दोष देखने की चेष्टा करने को प्रक्षेपण (Projection) कहा जाता है।

(१४) देवता को चीनी दान की है। जो वस्तु देवता को दान कर दी, उसे क्या फिर खा सकता हूँ? ऐसी इच्छा को मन में लाना ही पाप है, अतएव चीनी त्यागने के योग्य है।

(१५) कितने ही दीन-दरिद्र चीनी नहीं खा सकते। वे तो चीनी खाने के लिए तरसा करेंगे और मैं मज़े से चीनी उड़ाऊँगा। यह घोर स्वार्थ-परता है। अतएव चीनी खाने की पाप-पूर्ण इच्छा को कभी मन में भी स्थान न दूँगा, इत्यादि।

अन्य कोई इच्छा मेरी चीनी खाने की इच्छा की बाधक न होती तो वह स्पष्ट-रूप से तृप्त होने की चेष्टा करती। किन्तु बाधा पाने पर, इच्छा कितने प्रकार से प्रकाशित होने की चेष्टा करती है, ऊपर इस बात को कुछ-कुछ खुलासा किया गया है।

(१६) ऊपर जितनी चेष्टाओं का वर्णन किया गया है, वह हमारी जागृतावस्था की चेष्टाएँ हैं। स्मरण रखना चाहिए कि रुद्ध या अवदमित इच्छा केवल जागृतावस्था में ही नहीं, स्वप्न में भी नाना आकारों में प्रकाशित होने की चेष्टा करती है। जो उदाहरण दिये गए हैं, वे सभी स्वप्न में दीखने सम्भव हैं। स्वप्न में रुद्ध-इच्छा पूर्वोक्त अनेक प्रकार से विकृत होकर प्रकाशित होती है। पिछले अध्याय में "क" बाबू का जो स्वप्न उद्धृत किया गया है, उस में उनकी पिता की मृत्यु-कामना विकृत अवस्था में ही प्रकाशित हुई है।

दशा में मीठे फल-मूल या सैकरीन खाने की कल्पना करूँगा। यहाँ यह देखा जाता है कि जहाँ बाधा अधिक होती है, वहाँ कल्पना से निषिद्ध इच्छा को सीधे-रूप में नहीं लाया जा सकता।

(६) बाधा और भी अधिक होने पर कल्पना की सहायता से मीठे द्रव्य खाने का भी साहस न होगा। 'सत्तू या और कुछ खाऊँगा' मन में वैसी कल्पना करके चीनी खाने की इच्छा को भुलाने की चेष्टा करूँगा।

(१०) खुद चीनी नहीं खा सकता, इसलिए अन्य पाँच जनों को चीनी खिलाकर मन में यथेष्ट आत्म-तृप्ति प्राप्त की। इस जगह कल्पना में भी खुद को चीनी खाने का साहस नहीं। दूसरों की चीनी खाने की तृप्ति को देख केवल अपनी इच्छा को काल्पनिक-रूप से चरितार्थ करता हूँ। यदि कहूँ कि विधवाओं की दूसरों को मछली खिलाने की परितृप्ति इसी प्रकार की है, तब तो सम्भव है कि अनेक मुझ पर खड्गहस्त हो जाएँगे। शरद्‌बाबू के किसी उपन्यास में इसका आभास मिलता है। दूसरे के सुख से सुखी होने का अर्थ ही उसके साथ तदात्म्य होना है।

(११) चीनी खाने का कोई उपाय नहीं। मन को समझाया कि चीनी बहुत मँहगी है—न खाना ही अच्छा है। पास के बाज़ार मे भी अच्छी चीनी नहीं मिलती; कौन दूर से लाने का झंझट करे, इत्यादि। यहाँ चीनी खाने की स्वाभाविक बाधा अतिरञ्जित आकार मे देखी जाती है।

(१२) यही नहीं कि चीनी खाने की स्वाभाविक इच्छा ही अतिरञ्जित आकार में देखी जाती है। किन्तु चीनी खाने से पेट गरम होता है, पेट मे कीड़े हो जाते हैं, इत्यादि। चीनी में कई ऐब निकालता हूँ। यह 'अंगूर खट्टे' वाली कहावत के जैसा है।

(१२) चीनी बहुत खराब चीज़ है। मैं तो उसे खाता ही नहीं। चारु को चीनी से बड़ा प्रेम है, इसका फल उसे एक दिन अवश्य

इच्छाओं को मन में प्रकाशित नहीं होने देते। ऐसे स्थलों पर यह प्रहरी का कार्य्य करते हैं। जैसे, मेरे मन में किसी को मारने की इच्छा है। किन्तु किसी को मारना अन्याय, धर्म्म-विरुद्ध और निन्दनीय होने के कारण मैं ऐसी इच्छा को मन में नहीं उठने देता। हमें यह भी मालूम नहीं होता कि वह मारने की इच्छा हमारे मन में है। इस स्थल पर अनेक मनोवैज्ञानिक कहेंगे कि हमारा-धर्म्मज्ञान लोकाचार प्रभृति किसी को मारने का जैसी अनुचित इच्छा को मन में परिस्फुट नहीं होने देते, किन्तु यह व्याख्या पर्य्याप्त नहीं। हम क्यों किसी को मारना अनुचित समझते हैं, इस का सदुत्तर नहीं मिलता। कोई-कोई कहते हैं कि सदसत् विचार-बुद्धि या विवेक के कारण उचित-अनुचित का ज्ञान होता है। किन्तु यह मान लेने पर भी विवेक कैसे उत्पन्न होता है, यह मालूम नहीं होता। मेरे मत से विरुद्ध इच्छाएँ ही विवेक की उत्पादक हैं। किसी को मारने की इच्छा की विरुद्ध इच्छा, खुद मार खाने की इच्छा है। मार खाने की इच्छा मन में सुप्त रहने के कारण, हम उस का अस्तित्व नहीं जान सकते किन्तु यही 'किसी को मरूँगा'—इस इच्छा को बाधा देती है। तथा इसी के कारण हमारे मन में यह ज्ञान होता है कि किसी को मारना अनुचित है। सब प्रकार के विधि-निषेधों में ऐसी विरुद्ध इच्छाएँ वर्तमान होती हैं। इसलिए मेरे मत से अन्त तक यह सिद्ध हुआ कि प्रत्येक अज्ञात इच्छा के प्रकाशित होने में जो बाधा होती है, उस बाधा के मूल में उस की विरुद्ध इच्छा वर्तमान है। यह ज़रा देखना चाहिए कि किसी इच्छा की विरोधी इच्छा क्या है? किसी को न मारना—किसी को मारने का विरोधी नहीं। किसी को न मारने के हज़ार कारण हो सकते हैं। इसलिए केवल 'न मारना' कहने से यह मालूम नहीं होता कि विरोध कहाँ पर है। विरोध का तात्पर्य है परस्पर का प्रतिकूलता, विपक्षता या प्रति-द्वन्दिता। विरोध में दो पक्ष होने चाहिये। एक पक्ष जो चाहता हो

अज्ञात इच्छा किस प्रकार प्रकाशित होती है ?

हम देख चुके है कि ज्ञानगत इच्छा बाधा पाने पर अनेक प्रकार से परिवर्तित होकर प्रकाशित होने की चेष्टा करती है। मन की अवदमित इच्छाओं का सीधे-सादे रूप में चरितार्थ होना तो दूर रहा, उन के ज्ञानगत होने के पथ में ही बड़ी बाधाएँ हैं। अतएव ये अज्ञात रुद्ध इच्छाएँ पूर्वोक्त अनेक प्रकार से मन के प्रहरी को धोखा देकर विकृत अवस्था में प्रकाशित होती हैं। अवदमित इच्छाओं के आत्म-प्रकाश में उनकी विरुद्ध इच्छाएँ बाधा पहुँचाती हैं। जैसे, मरने की इच्छा को जीने की इच्छा नहीं पनपने देती।

जिस समय भी मरने की इच्छा हमारे मन में प्रकट होने की चेष्टा करती है, उसी समय जीने की इच्छा प्रकट होकर उस में बाधा पहुँचाती है। फलस्वरूप मरने की इच्छा सीधे-सादे रूप में मन में न उठ कर तरह-तरह से प्रकाशित होती है। संकट-पूर्ण परिस्थितियों में उतर कर बहादुरी दिखाने की इच्छा केवल मृत्यु-इच्छा का ही रूपान्तर है। इस इच्छा को ऐसे बदले हुए रूप में देख कर समझ नहीं सकते कि यह यथार्थ में मरने की इच्छा है। इसलिए वह मन में प्रकाशित होने में बाधा नहीं पाती। जीने की इच्छा को प्रहरी मान लेने पर हम कह सकते हैं कि इस प्रहरी के कारण ही मृत्यु-इच्छा अपने असली रूप में प्रकाशित नहीं हो सकती। किन्तु मृत्यु-इच्छा विपद्जनक कार्यों में वाह-वाही लेने की इच्छा का छद्म-वेष धारण कर लेती है और इस प्रकार इस प्रहरी को सहज में धत्ता बता सकती है। ऐसे ही हमारा धर्म-ज्ञान, सामाजिक-व्यवहार प्रभृति हमारी अनेक अनुचित

है, उसे मैं प्रतीक[6] कहूँगा। जैसे, मट्ठा दूध का प्रतीक है। चीनी खाने की इच्छा है, किन्तु खाने का कोई उपाय नहीं; उसके बदले मे सेकेरिन खाई है। इस स्थल पर सैकरीन चीनी का प्रतीक है। किन्तु यथार्थ में सैकरीन या मट्ठे को चीनी या दूध का प्रतीक नहीं कहा जा सकता। क्योंकि सैकरीन या मट्ठा चीनी या दूध के बदले में खाता हूँ, यह मैं जानता हूँ, यदि मैं चीनी तो खा न सकूँ, मीठे फलों का भक्त हो जाऊँ और यह न समझता होऊँ कि क्यों मुझे मीठे फल प्रिय हैं; तभी मीठे फलों को चीनी का प्रतीक कहा जा सकता है। प्रतीक यथार्थ में किसी वस्तु का निर्देश करता है, यह हम नहीं जानते। विश्लेषण किए बिना प्रतीक के स्वरूप का निर्णय करना असम्भव है। स्वप्न में मैंने घर देखा। विश्लेषण से जाना गया कि यह घर मेरा अपना शरीर है। यहाँ घर ही शरीर का प्रतीक है। अधिकांश प्रतीक विश्लेषण से भी नहीं जाने जाते, दूसरे उपायों से प्रतीक का अर्थ निकालना पड़ता है। ऐसे स्थल पर भाषा-ज्ञान, पुराण, जनश्रुति, प्रवाद इत्यादि प्रतीक के स्वरूप-निर्णय मे यथेष्ट सहायक होते हैं। हम शरीर को नौ द्वार का घर कहते हैं। शरीर-तत्व के अनेक भजनों में घर को शरीर के रूपक-रूप में वर्णन किया गया है। जब हम साधारण बात-चीत में कहते हैं कि घर में तकलीफ है, तब समझते हैं कि 'स्त्री बीमार' है। इस स्थान पर स्त्री के शरीर से घर की तुलना की गई है। संस्कृत में भी कहते हैं कि 'गृहिणी गृहमुच्यते।' इस प्रकार नाना विषयों की आलोचना द्वारा अनेक समय प्रतीक का यथार्थ अर्थ निकालना पड़ता है। आश्चर्य का विषय है कि प्रतीकों का अर्थ सब देशों में समान है। प्रतीक के सम्बन्ध में यथेष्ट ज्ञान होने पर अनेक समय स्वप्न का अर्थ प्रकट करना सहज हो जाता है।

---

6 Symbol

यदि दूसरा पक्ष भी वही चाहे, तभी विरोध होता है। इस विरुद्ध इच्छा को धोखा देकर प्रकट न हो सकने पर, अज्ञात इच्छा के लिए चरितार्थ होने का और कोई उपाय न हो। इसी कारण अज्ञात इच्छा को छद्म-वेश में प्रकट होना पड़ता है। यह मैं पहले ही सोलह उदाहरणों में बतला चुका हूँ कि यह छद्म-वेश कितनी प्रकार के हो सकते है।

मैं यहाँ कुछ परिभाषाओं का प्रयोग करता हूँ। इन्हें जान लेने पर पाठक आसानी से स्वप्न-तत्त्व समझ सकेंगे।

(१) जो इच्छा अज्ञात होकर स्वप्न से प्रकाशित होने की चेष्टा करती है, मैं उसे अवदमित-इच्छा या ऐषणा[1] कहूँगा।

(२) इस रुद्ध या अवदमित इच्छा के प्रकाशित होने मे जो अन्तराय हो, उसे बाधा या प्रतिबन्ध[2] कहा जायगा।

(३) मन के जो-जो भाव रुद्ध-इच्छा के प्रकाशित होने मे बाधा पहुँचाती हैं, उनका समष्टि का नाम प्रहरी[3] है। मेरे मत से यह प्रहरी होता है मूलतः रुद्ध-इच्छा की विरुद्ध-इच्छा। अन्यान्य मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि धर्म्म-ज्ञान, नीति-ज्ञान, पाप-पुण्य-बोध, प्रभृति से प्रहरी का उद्भव है।

(४) रुद्ध इच्छा जिस क्रिया से चरितार्थ होने की चेष्टा करती है, उस क्रिया को मैं प्रतीक क्रिया[4] और जिस आकार मे रुद्ध इच्छा प्रकाशित होती है, उसे प्रतीक-रूप[5] कहूँगा। दूध का साध मट्ठे से मिटाते समय मट्ठा खाने को प्रतीक-क्रिया और मट्ठा खाने की इच्छा को दूध खाने की इच्छा का प्रतीक कहूँगा।

(५) रुद्ध इच्छा प्रकाश में आने के समय जो छद्मवेश धारण करती

---

1 Unconcious wish or complex.

2 Resistance.

3 Censor.

4 Symbolic action

5 Symbolic Manifestation.

हैं कि सापेक्ष व्यापार (अर्थात् अमुक होने से अमुक होगा) स्वप्न में देखने का कोई उपाय नहीं। अब कल्पना कीजिए कि राम पास के मैदान में नहीं जायगा। इसे बायस्कोप में दिखाए जाने पर पहले राम का जाना दिखाकर उसे मिटा देना होगा इसके सिवाय इसे किसी दूसरी तरह से नहीं समझाया जा सकता। ऐसे ही स्वप्न में 'जाना' और 'न जाना' एक-सा होगा। स्वप्न में 'न' दीखना असम्भव है, बाहुल्यभय से और उदाहरण न देकर कह सकता हूँ कि हम स्वप्न में कोई विषय, अथवा ठीक उसका विपरीत विषय, एक ही तरह से देखते हैं। स्वप्न में कार्य-कारण विषय होने पर, प्रथम कार्य, बाद में उसका कारण या उसके विपरीत भी देखते है। स्वप्न में घृणा या हास्यरस का प्रकाश व्यङ्गचित्र के अनुरूप होता है। स्वप्न में किसी की बुद्धि की कमी को देखने के लिए देखूँगा कि उसके सिर में गोबर भरा हुआ है, किसी की मन की कुटिलता, शरीर की वक्रता के रूप में देखी जा सकती है, इत्यादि।

पाठक देखेंगे कि स्वप्न में सब वस्तुएँ दृश्यरूप में प्रकाशित होने के कारण स्वप्न का अर्थ निर्द्धारण करना कठिन है। इतना सब होने पर भी मन का प्रहरी सब समय धोखा नहीं खाता। इसलिए स्वप्न में और भी कितने ही परिवर्त्तन हुआ करते हैं। किसी व्यक्ति पर क्रोध है, स्वप्न में वह उस पर प्रकाशित न होकर स्वप्न-दृष्टि किसी दूसरे व्यक्ति पर प्रकाशित हो सकती है। इस 'ऊधो का दोष माधो के मत्थे' मढ़े जाने के कारण स्वप्न का अर्थ समझना सर्व-साधारण के लिए बहुत कठिन हो जाता है। स्वप्न में किसी यथार्थ भयजनक बात को देख कर नहीं डरा, और डर गया किसी मामूली चीज को देख, यहाँ एक विषय का भय दूसरे विषय में चला गया है। इसे अभिक्रान्ति[7] कहा जाता है। इसके अतिरिक्त स्वप्न में देखी हुई कोई एक ही वस्तु—दो या उस से अधिक वस्तुओं को बतला सकता है।

7 Displacement.

स्वप्न की विशेषता

अवदमित इच्छा केवल प्रहरी को धोखा देने के लिए छद्मवेश में प्रकाशित हो कर शान्त होती हो सो बात नहीं; वह और भी कई प्रकार से पाखण्ड-रूप धारण कर के अपने को प्रहरी की नज़रों से बचाने की चेष्टा करती है। हमारे स्वप्न में दर्शन-प्रतिरूप[1] ही अधिक होते हैं हम स्वप्न देखने की तुलना बायस्कोप देखने से कर सकते हैं। पाठक देखेंगे कि हमारी किसी इच्छा को सीधे-सादे रूप में बायस्कोप में दिखाये जाने पर उसे दर्शकों को समझाना कितना मुश्किल है। कल्पना कीजिए कि दर्शकों को यह समझाना चाहता हूँ कि मैं पास के मैदान में सैर करने को जाऊँगा। वहाँ बायस्कोप में दिखाना पड़ेगा कि मैं पास के मैदान में जाता हूँ। बायस्कोप में अन्य किसी प्रकार से इसे समझाने का उपाय नहीं। स्वप्न में भी ठीक ऐसे ही होता है, भविष्यत् काल वर्तमान में परिणत होता है। 'राम के आने पर यदु जायगा'—इस भाव को बायस्कोप में दिखाने के लिए पहले राम का आना दिखाना चाहिए, बाद में यदु का जाना दिखाना होगा। किन्तु इतना करने पर भी बिना व्याख्या किए दर्शकों को असली घटना नहीं समझाई जा सकेगी। पहले उदाहरण में हमने देखा है कि वर्तमान के सिवाय स्वप्न में दूसरे किसी काल की घटना नहीं दिखाई जा सकती; वैसे ही इस उदाहरण में देखते

---

1 Visual imagery.

हम देखते हैं कि कई उपायों से स्वप्न का यथार्थ अर्थ विकृत आकार में प्रकाशित होता है। जैसे—

(१) दार्शन-परिणति

(२) अभिक्रान्ति

(३) संक्षेपन

(४) नाटकीय-परिणति

इन्हें छोड़कर जागृतावस्था में वर्णन करते समय स्वप्न में थोड़ा बहुत उलट-फेर होना कुछ असम्भव नहीं। स्वप्न मे देखी हुई किसी असंलग्न घटना का वर्णन करते समय हम अनजान मे उस पर रंग चढ़ा कर उसे वर्णना के उपयोगी कर लेते हैं। जो स्वप्न सर्वथा अद्भुत होते हैं, उन का वर्णन करते समय जो वास्तविक स्वप्न में नहीं देखी हैं, ऐसी भी दो-चार बाते हमारे अनजान मे आ जाती हैं। इसे अनुयोजना[11] कहते हैं।

---

11 Secondary Elaboration.
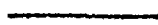
जैसे, मैंने स्वप्न में देखा कि मैं अपने घर पर हूँ, किन्तु घर के साज-सामान के साथ कालेज के साज-सामान का अपूर्वसामञ्जस्य है । यहाँ कालेज और मेरा घर दोनों एक ही वस्तु द्वारा निर्दिष्ट हुए हैं। इसे संक्षेपन[8] कहते हैं। इस संक्षेपन के कारण स्वप्न में बहुत बड़ा विषय भी बहुत छोटे आकार में प्रकाशित हो सकता। एक ही व्यक्ति अनेक व्यक्तियों का परिज्ञापक हो सकता है इत्यादि। और ऐसा भी हो सकता है कि एक व्यक्ति वैशिष्ट्य आदि विभिन्न व्यक्तियों पर आरोपित होकर उस व्यक्ति का यथार्थ परिचय प्रदान कर सकते हैं। जैसे, स्वप्न में देखा कि किसी जगह चार आदमी बैठे हुए हैं। उनमें से एक आदमी के सिर के बाल सफेद है, एक के दाढ़ी है, एक लम्बा है और एक नाटा है। यहाँ इन चारों व्यक्तियों का पृथक-पृथक प्रकाश न हो; एक छोटे कद के बुड्ढे लंगड़े व्यक्ति का निर्देश हो सकता है। ऐसे स्थलों पर अबाध-भावानुसङ्ग-क्रम की सहायता के बिना स्वप्न का अर्थ निर्णय करना असम्भव है। किन्हीं विभिन्न कारणों के समुदाय में कोई विशेष घटना होने पर स्वप्न में देखी गई वह घटना सब कारणों की परिचायक है। जैसे, बागबाजार में मेरा कोई प्रिय व्यक्ति रहता है और बागबाजार रसगुल्लों के लिए भी प्रसिद्ध है। इस जगह मेरा स्वप्न में बागबाजार देखने का अर्थ प्रिय व्यक्ति के पास जाना भी है और रसगुल्ला खाना भी है। इसे अतिलक्ष[9] कहते हैं।

उपन्यास में वर्णित किसी घटना को दृश्यरूप में दिखाने के लिए उसे नाटक के आकार में परिणत करना आवश्यक है। इस परिवर्त्तन के होने से बहुत समय घटनाओं में फेर-फार करना पड़ता है और वर्णित विषय का अर्थ समझाने के लिए नयी घटनाएँ भी जोड़ी जाती हैं। इसे नाटकीय-परिणति[10] कहते हैं।

---

8 Condensation.

9 Over-determination.

10 Dramatization.

स्वप्न की रुद्ध इच्छा

मन की जो अपूर्ण इच्छाएँ स्वप्न में काल्पनिक तृप्ति प्राप्त करने की चेष्टा करती है, उन्हें हम कुछ श्रेणियों में विभक्त कर सकते हैं :—

(१) जो इच्छाएँ ज्ञानगत है और हमें जिनके पूर्ण होने में कोई आपत्ति नहीं। जैसे, मन मे है कि पुस्तक लिखूँगा, किन्तु पुस्तक अब भी लिखी न गई।

(२) जो इच्छाएँ ज्ञानगत है और जिनके पूर्ण होने में मन में बाधाएँ हैं। जैसे, किसी की कोई अच्छी वस्तु देखकर उसे हड़प जाने की इच्छा हुई। ऐसी इच्छा मन में होते ही उसे अनुचित समझ कर मन से निकालने की कोशिश करूँगा।

(३) जिन इच्छाओं के अस्तित्व का हमें ज्ञान न हो। मैंने उन्हें अज्ञात रुद्ध इच्छा का नाम दिया है।

स्वप्न मे इन तीनों प्रकार की इच्छाओं का ही परिचय मिलता है। मामूली तौर पर देखने से यही मालूम होता है कि प्रथम दो प्रकार की इच्छाओं का अस्तित्व ही अधिकांश स्वप्नों के मूल में होता है। किन्तु विश्लेषण करने पर उन में अज्ञात रुद्ध या अवदमित इच्छा का भी पता चलता है। वास्तव मे यह अज्ञात रुद्ध इच्छा ही स्वप्न देखने का प्रधान कारण है। पूर्वोक्त तीन प्रकार की इच्छाओं के अतिरिक्त निद्रावस्था में क्षुधा, तृष्णा, काम प्रभृति शारीरिक प्रवृत्ति-गत जिन इच्छाओं का उदय होता है, स्वप्न में उनकी भी काल्पनिक परितृप्ति होती है। हमारे प्रतिदिन के जो कार्य असमाप्त रह जाते हैं, उनका भी किसी-न-किसी 'का आभास प्रायः प्रत्येक स्वप्न में ही देखा जाता है। इसी असमाप्त-

मन का प्रहरी

पहले कहा जा चुका है कि अज्ञात इच्छाओं की विरोधी इच्छाओं के समूह का नाम प्रहरी है। मूल इच्छा के प्रकाशित होने के मार्ग में बाधा होने के कारण ही स्वप्न में वह विकृत आकार में प्रकट होती है। वह रूपान्तरित इच्छा मन के प्रहरी को भुला कर ज्ञान में उपलब्ध हो सकती है। प्रहरी स्वप्न का अर्थ नहीं समझ सकता, इसलिए स्वप्न को प्रकाशित होने देता है। ज्यों ही स्वप्न का अर्थ समझ में आता है, त्यों ही स्वप्न टूट जाता है। इसके साथ-साथ मन में भय का सञ्चार होता है। हम जागृतावस्था में जिन भावों को मन में लाना नहीं चाहते—अनुचित या भयङ्कर होने के कारण दबाए रखते हैं—वे ही स्वप्न में प्रकाशित होने पर मन आतङ्क से काँप उठता है। पाठक देखते हैं कि भय के स्वप्न में भी इच्छा की पूर्णता प्राप्त करने की चेष्टा होती है।

मन का प्रहरी जितना सजग होगा, स्वप्न भी उतने ही विकृत आकार में प्रकाशित होगा। प्रहरी के कार्य में ढिलाई होने पर स्वप्न की मूल इच्छा मन में अविकृत अवस्था में प्रकाशित हो सकती है। साधारणतः ऐसा अविकृत स्वप्न देखने पर मन दारुण घृणा, लज्जा और भय से परिपूर्ण हो जाता है। मन का प्रहरी जागृतावस्था में सदा सजग रहता है। निद्रावस्था में प्रहरी के कार्य में शिथिलता आ जाती है। क्यों आती है, इस विषय में मनोवैज्ञानिक एक मत नहीं है। इस विषय में मैं अपना मत फिर व्यक्त करूँगा। जिस कारण से ही हो, प्रहरी की सतर्कता कम होने से ही स्वप्न का उदय होता है। पहले ही कहा जा चुका है कि स्वप्न की भूल ही हमारा स्वभाव है। पाठक यहाँ इस का कारण भी समझ सके होंगे। इस भूल जाने के मूल में प्रहरी की कार्य्य शील शक्ति वर्त्तमान है। स्वप्न को भुला देने पर प्रहरी निश्चिन्त हो जाता है। इस के साथ-साथ मन में भी शान्ति आती है।

इस लिए सुनने में वीभत्स होते हुए भी पाठक यह न समझलेंगे कि उन के मन में ऐसी इच्छाओं का अस्तित्व सर्वथा असम्भव है। हमारे प्रत्येक के मन में ही अनेक वीभत्स, कुटिल और अश्लील भाव भरे पड़े हैं। हम सब ओर से इस के प्रमाण पाते हैं।

यहाँ मैं जिन अज्ञात रुद्ध इच्छाओं का विवरण दूँगा उनके संबंध में मैं यदि यह बतलाने बैठूँ कि कैसे प्रमाणों के बल पर उनका अस्तित्व स्वीकार किया गया है तो पुस्तक का कलेवर बढ़ जायगा, इसलिए यहाँ प्रमाणों का उल्लेख न कर के केवल उन्हीं सिद्धान्तों के सम्बन्ध में लिखूँगा, जिन पर विभिन्न देशों के मनोवैज्ञानिक पहुँचे है।

विद्वानों ने देखा है कि अधिकांश अज्ञात रुद्ध इच्छाएँ कामज हैं। सर्व-साधारण की धारणा है कि काम-प्रवृत्ति केवल स्त्री-पुरुष की मिलनेच्छा में ही पर्य्यवसित है किन्तु यथार्थ में काम का अधिकार बहुत विस्तृत है। इस काम प्रवृत्ति के सम्बन्ध में कोई धारणा उत्पन्न हुए बिना, अज्ञात रुद्ध इच्छा के विषय में कुछ भी समझ में न आएगा। इसलिए काम-प्रवृत्ति के और विकास के सम्बन्ध में संक्षेप में कुछ कहना आवश्यक है।

काम मनुष्य की एक सहज-प्रवृत्ति है। वंश-रक्षा के मूल में इस प्रवृत्ति का अस्तित्व विद्यमान है। अधिकांश मनुष्यों की धारणा है कि काम-प्रवृत्ति प्रथम यौवन में ही उन्मेषित होती है, बाल्य या शैशव में उस का अस्तित्व नहीं होता। यह सच है कि जिस भाव से यौवन में काम प्रकाशित होता है, उस भाव से बाल्यकाल में नहीं होता। किन्तु मनोवैज्ञानिकों के मत से, काम बहुमुखी है, बहुत छोटी उमर मे भी यह कई रूपों में देखा जाता है। फ्रयेड कहते हैं कि काम-प्रवृत्ति का विश्लेषण करने पर, उस के तीन अङ्ग देखे जाते हैं :—

(१) कामानुभूति[1]

---

1 Sexual Feeling

कार्यजनित अतृप्त इच्छा का सहारा लेकर अन्यान्य अज्ञात रुद्ध-इच्छाएँ स्वप्न में प्रकाशित होने की चेष्टा करती हैं। इसलिए कुछ लोग यह समझते है कि दैनिक घटनाएँ ही हमारे स्वप्न देखने का कारण हैं और केवल उन्हीं का आभास स्वप्न में होता है। पहले यह दैनिक घटना-मूलक स्वप्न अति सीधे-सादे प्रतीत होते हैं, किन्तु विश्लेषण करने पर उनके मूल में भी अनेक अज्ञात रुद्ध-इच्छाएँ देखी जाती हैं।

पाठकों को इसका थोड़ा-सा आभास दिया जाता है कि स्वप्न में किस प्रकार की अज्ञात रुद्ध-इच्छाएँ प्रकाशित हुआ करती है। पहले कह आया हूँ कि क्षुधा-तृष्णा-कामजनित तथा अन्यान्य शारीरिक वृत्ति-गत अनेक इच्छाओं का अस्तित्व स्वप्न में प्रचुर परिमाण में होता है। नाना सद्-इच्छाओं का भी स्वप्न में दृष्टि-गत होना सम्भव है। जो इच्छाएँ हमारी दृष्टि में अनुचित है और जो जागृतावस्था में भी कभी-कभी मन में उठा करती हैं, वे भी स्वप्न में अभिव्यक्त होती हैं। इस श्रेणी की इच्छाएँ ऐसी कुछ वैचित्र्य-पूर्ण नहीं कि उनका विशेष परिचय आवश्यक हो। यह जानने के लिए पाठकों को स्वभावतः कौतूहल होगा कि कौन-कौन-सी अज्ञात रुद्ध-इच्छाएँ स्वप्न में प्रकाशित होती है। इन अज्ञात रुद्ध-इच्छाओं की विशेषता यह है कि हम साधारणतः उनके अस्तित्व को तो जानते नहीं, किन्तु किसी के जना देने पर भी हम उन्हे नितान्त अद्भुत, उत्कट, असम्भव, अश्लील इत्यादि विशेषणों से विशिष्ट करके मानना नहीं चाहते। अतएव इन अज्ञात रुद्ध-इच्छाओं का विवरण देने पर भी पाठक यह विश्वास करने को प्रस्तुत न होंगे कि वास्तव में वे स्वप्न में प्रकाशित हो सकती है। तथापि यहाँ यह कह देना आवश्यक है कि अनेक मनोवैज्ञानिक बहु-संख्यक व्यक्तियो के स्वप्नों का विश्लेषण कर के कुछ लोग इस सिद्धान्त पर पहुँचे है। वह सोचते है कि केवल मानसिक-विकार ग्रस्त व्यक्ति के मन में ही ऐसी उत्कट, अश्लील, बीभत्स भावनाओं का होना सम्भव है। किन्तु सम्पूर्ण स्वस्थ-चित्त व्यक्तियों के स्वप्नों में भी इन अज्ञात रुद्ध इच्छाओं का अस्तित्व देखा जाता है।

'काम-गन्ध-हीन' पवित्र प्रेम भी उसी आदि काम-भाव का ही रूपान्तर मात्र है। इसी प्रकार सखीत्व, बन्धुत्व आदि के मूल में भी काम-गन्ध है। साधारणतः देखा जाता है कि काम-वृत्ति विकसित होने पर पुरुष स्त्री से और स्त्री पुरुष से प्रेम करती है। प्रीति और काम एक है। इसी काम को चण्डीदास प्रभृति प्राचीन कवियों ने 'पिरीत (प्रीति) के नाम से वर्णन किया है किन्तु पुरुष-पुरुष में स्त्री-स्त्री में स्वामी-स्त्री के जैसी प्रीति भी विरला नहीं है। किसी पुरुष मित्र के उद्देश से लिखित कुछ चस्तुपदियो में शेक्सपीयर ने स्वामी-स्त्री के जैसा प्रेम-भाव व्यक्त किया है। इस सम्बन्ध में ओस्कर वाइल्ड का एक मनोज्ञ प्रबन्ध है। प्रभात कुमार की 'षोड़शी, पुस्तक की "प्रियतम" गल्प में भी दो सखियों के बीच ऐसे प्रेम-भाव का परिचय मिलता है। फ्रयेड कहते हैं कि ऐसे स्थल पर काम का केवल पात्र-भेद हुआ है। साधारण बन्धुत्व और सखीत्व को भी काम-प्रेरणा का रूपांतर कहें, तो कहा जा सकता है कि उसमें काम-पात्र और काम-चेष्टा—इन दोनों अङ्गों का प्रकार-भेद हुआ है। इस बन्धुत्व और सखीत्व-बन्धन में अति दूषणीय[1] समकामित से आरम्भ करके पवित्र-बन्धु भाव पर्यन्त, सभी प्रकार के स्तर देखे जाते हैं। इस से समझा जाता है कि समकामिता[2] और बन्धुत्व के मूल में एक ही भाव वर्त्तमान है। यहाँ पाठकों को इसका थोड़ा-बहुत आभास मिला है कि फ्रयेड ने काम का अधिकार कितने विस्तृत-भाव से दिखाया है। हम कह सकते हैं कि भ्रातृ-प्रेम, भगिनी-प्रेम, मातृ-प्रेम, सन्तान-प्रेम, पितृ-भक्ति, ईश्वर-भक्ति प्रभृति के प्रेम कामज है। हमारे शास्त्रकारों ने भी काम को 'आदिरस' के नाम से वर्णन किया है। इन पवित्र स्नेह-बन्धनों में भी काम-भाव हो सकता है, इस पर सम्भव है कि अनेक

1 Homo-Sexual Relationship
2 Homo-Sexuality.

(२) काम-चेष्टा[2], और

(३) काम-पात्र[3]

साधारण स्त्री-पुरुष के काम की आलोचना कर के मैं इन तीनों अङ्गों को समझाने की चेष्टा करूँगा। परस्पर के अनुराग और परस्पर के सङ्ग-लाभ में जो सुख है वही कामभाव या कामानुभूति है। परस्पर का आलिङ्गन, सहवास आदि की चेष्टा, अर्थात् कायिक या मानसिक उद्देश से जो काम-भाव विकम्पित होता है उस उद्देश की सिद्धि का प्रयास ही काम-चेष्टा है। पुरुष के लिए स्त्री और स्त्री के लिए पुरुष ही काम-पात्र है। फ्रयेड कहते हैं कि काम के इन तीनों अङ्गों का विकास विभिन्न रूपों में हो सकता है। रीति-सुख से आरम्भ कर स्त्री-पुरुष के परस्पर के कथोपकथन के आनन्द पर्यन्त सब प्रकार की अवस्थाओं में ही काम-भाव विभिन्न आकारों में प्रकाशित होता है। पाठक ध्यान देंगे कि स्त्री पुरुष के कथोपकथन का आनन्द रीति-सुख से भिन्न है। किन्तु ये सब प्रकार के सुख उसी एक ही कामानुभूति के रूपान्तर मात्र हैं। इसी प्रकार काम-चेष्टा भी विभिन्न आकारों की हो सकती है। स्त्री-पुरुष के मिलन का उद्देश्य, कभी परस्पर का सङ्गलाभ और कभी रीति क्रिया होता है। किन्तु इन विभिन्न प्रकार की चेष्टाओं के मूल में वही एक काम-प्रेरणा वर्त्तमान है। काम-पात्र भी सब समय एक नहीं हो सकते। पुरुष आज जिस स्त्री से प्रेम करता है, कल उस से प्रेम न कर के अन्य किसी स्त्री पर असक्त हो सकता है इसी प्रकार स्त्रियों के प्रेम-पात्र भी एकाधिक व्यक्ति हो सकते हैं। एक ही समय एक ही पुरुष या एक ही स्त्री, दो या दो से अधिकर व्यक्तियों पर आसक्त हो सकते हैं।

इस लिए देखा जाता है कि काम-वृत्ति का विकास किसी एक निर्दिष्ट घेरे के भीतर बँधा नहीं है। मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि

---

2 Sexual Aim.

3 Sexual Object.

अपने को पृथक समझने लगता है। बाद में विषय ज्ञान होने पर क्रमशः उसका मन परिणति प्राप्त करना है। यदि हम किसी व्यक्ति का प्रेम विश्लेषण करने पर देखें कि वह प्रेम के कारण ही प्रेम करता है, तब उसके प्रेम को स्वतः रति[1] कहा जा सकता है; यदि उसका मन प्रेम-पात्र के प्रति उत्सुक हुआ हो, तब उस प्रेम को विषय-रति और यदि उसका मन प्रेम जनित अपने सुख की ओर ही जाता हो, तब उसे स्व-रति[2] कह सकते है। एक मात्र सुख के लिए शिशु की जो आकाङ्क्षा है, वह स्वतः-रति है। इस स्थल पर शिशु किसी व्यक्ति या वस्तु से प्रेम नहीं करता, वह केवल सुख की खोज में ही व्यस्त है।

ग्रीक पुराण में लिखा है कि नर्सिसस ने दर्पण में अपना प्रतिबिम्ब देखकर अपने आप से ही प्रेम किया था। अपने सुख के लिए जो चेष्टा है, या अपने-आप से प्रेम करने की जो इच्छा है, उसे स्व-रति कहते हैं। वस्तु-ज्ञान होने के उपरान्त समलैङ्गिक व्यक्ति पर शिशु का जो प्रेम होता है उसे सम-कामिता[3] और विषय-लैङ्गिक व्यक्ति पर जो प्रेम हो, उसे ऐतर-कामिता[4] कहा जाता है। यह ऐतर-कामिता ही सब से बाद मे विकसित होती है। पहले स्वतःप्रीति, बाद में स्व-रति, उसके बाद सम-कामिता और सब के बाद में ऐतर-कामिता विकसित होती है। लड़का मा को शैशवावस्था में अपना ही सम-लिङ्ग समझता है। ज्ञान होने पर अपनी भूल जान सकता है। बहुत जाँच-पड़ताल करने के बाद इन सत्यों का निर्णय हुआ है। अनेक समय काम-प्रवृत्ति के उन्मेष पथ मे नाना प्रकार की बाधाएँ उत्पन्न हो जाती हैं; तब पूर्व चार प्रकार की प्रीतियों में से किसी-किसी का सम्पूर्ण विकास नहीं होता और कोई कोई अतिमात्रा में विकसित हो जाती है। जिन में

---

1 Auto-eroticism.

2 Object love.

3 Narcissism or Narcism.

4 Hetero-sexuality.

हठात् विश्वास न करेंगे। किन्तु संसार में ये पवित्र-बन्धन भी कभी-कभी कलुषित होते देखे गए हैं। मानव-मन के अन्तराल में कलुषित-भाव परिपूर्ण न होने पर, वह कभी पनप कर प्रकाशित होने का अवकाश ही नहीं पा सकता। मनुसंहिता (२ य अध्याय, श्लोक २१९) में लिखा है :—

"मात्रा स्वस्त्रा दुहित्रा वा न विविक्तासनो भवेत्।
बलवानिन्द्रिय ग्रामो विद्वांसमपि कर्षति॥"

अर्थात्, 'माता, भगिनी, या कन्या के साथ भी कभी निर्जन में मत रहो। कारण, इन्द्रिय ग्राम बलवान है; विद्वान व्यक्ति भी उसके द्वारा आकृष्ट हो सकते हैं' फ्रयेड कहते हैं कि हमारे प्रत्येक के मन में स्नेह-बन्धन के साथ काम-भाव लगा हुआ है। यह काम-भाव मन मे अज्ञात-भाव से रहने के कारण, हम किसी के दिखाने पर भी मानना नहीं चाहते। ऐसी इच्छा कभी कभी स्वप्न में प्रकाशित हुआ करती है और उसके कारण मन में दारुण क्षोभ, घृणा और लज्जा का सञ्चार होता है। यह कोई बात नहीं कि मनुष्य का काम-पात्र केवल मनुष्य ही होगा। हम कई प्रकार के जीव-जन्तुओं से प्रेम करते हैं। सभी प्रकार का प्रेम मूल मे एक है। इस विषय में भाषातत्व की गवाही देना है। हम एक शब्द 'प्रेम' ही सभी स्थलों पर व्यवहार करते हैं।

फ्रयेड कहते हैं कि शिशु के मन में सभी प्रकार की कामानुभूति का बीज वर्त्तमान है। उन्होंने शिशु को काम-बहुरूपी[1] कहा है। अर्थात् शिशु को जिस प्रकार के काम की शिक्षा दी जायगी, उस की प्रवृत्ति भी वैसी ही हो जायगी। शिशु में सब प्रकार के काम-भाव के उन्मेष की सम्भावना है। फ्रयेड के मत से, शिशु का स्तन्य-पान, अंगूठा-चुसना प्रभृति भी कामज हैं। शिशु के प्रेम का प्रथम कोई पात्र नहीं होता। वह अपनी भूख-प्यास आदि कम होने से ही सन्तुष्ट है। क्रमशः अपने सम्बन्ध में उसे ज्ञान होता है, तब वह बाह्य विषय से

---

1 Sexually polymorpho-perverce

उसके द्वारा निपीड़ित होना[1] भी काम-चेष्टा के रूप में प्रकाशित हो सकता है। रति-काल में चुम्बन, आलिङ्गन, दर्शन तथा प्रेम-पात्र या पात्री का अन्यविध निर्यातन स्वाभाविक है। इस सम्बन्ध में वात्सायन ने विशद आलोचना की है। ये सभी पीडनेच्छाप्रसूत हैं। दूसरी ओर प्रेम-पात्र या प्रेम-पात्री द्वारा निपीड़ित होना भी कभी-कभी सुखकर प्रतीत हो सकता है। यह सुख निपीड़ित होने की इच्छा से उद्भूत है। हम सभी में ये सब इच्छाएँ वर्त्तमान हैं। किन्तु यह परस्पर विरोधी भाव आदि—जैसे, प्रेमास्पद का रूप देखना या उसे अपना रूप दिखाना, उसे पीडन करना या उसके द्वारा निपीड़ित होना—चेतना में एक साथ प्रकाशित नहीं हो सकते। दो विरुद्ध भावों में से एक रुद्ध-इच्छा रूप में मन में रह जायगा। मोटे तौर पर यह कहा जा सकता है कि पुरुष की निपीड़ित होने की इच्छा, स्त्री की निपीड़न की इच्छा, पुरुष की रूप दिखाने की इच्छा और स्त्री की रूप देखने की इच्छा मन में अज्ञात-रूप में रहती है। इन दो श्रेणियों की इच्छाओं में से जो मन में रुद्ध हो जाती है, वे स्वप्न में प्रकाशित होने की चेष्टा करती हैं। केवल यही नहीं कि ये रुद्ध इच्छाएँ स्वप्न में ही प्रकाशित होने की चेष्टाएँ करती हों, हमारे अनजान में वे अनेक कार्यों में चरितार्थ होती हैं। दूसरे के अधीन नौकरी करने की इच्छा पुरुष की निपीड़ित होने की इच्छा का रूपान्तर मात्र है। स्त्री की आड़ से देखने की इच्छा रूप देखने की इच्छा का रूपान्तर है, वैसे ही स्वामी को वश में रखने की इच्छा भी स्त्री की पीडन इच्छा का रूपान्तर-मात्र है। दूसरी ओर कहा जा सकता है कि पुरुष की बाहुबल या वीरत्व दिखाने की इच्छा अपना रूप दिखाने की इच्छा का रूपान्तर है।

शिशु की काम इच्छा उन्मेषित होने पर वह पात्र की तलाश करने लगता है; तब प्रथम उस का वह पात्र—माता-पिता, भाई-बहन तथा अन्यान्य आत्मीय-स्वजन होते हैं। पहले ही कहा जा चुका है कि मातृ-

1 Masochism

स्वतः प्रीति प्रबल है, वे केवल सब प्रकार के सुखों के लिए ही लालायित होते हैं। वे इस सुख के नशे मे अपने शारीरिक अनिष्ट की ओर भी अक्षेप नहीं करते। जिनमें स्व-रति परिस्फुट होती है, वे आत्म-सुख-परायण होते हैं, किन्तु वे सुख की प्राप्ति के लिए ऐसा कोई कार्य नहीं करते, जिससे अपना कोई शारीरिक अनिष्ट होता हो। जिन में सम-कामिता अधिक होती है उन्हें बन्धु-बान्धवों से प्रेम होता है। जिनमें ऐतर-कामिता पूर्णमात्रा मे विकसित होती है, उन्हें अपनी गृहस्थी पर प्रबल आसक्ति होती है। पाठक स्मरण रक्खेंगे कि हम सब मे ही सब प्रकार की प्रीति थोड़ा बहुत है जब उनमें मे कोई एक प्रबल होती है तब उपरोक्त एक-देशी विशेषत्व देखा जाता है। जैसे, किसी व्यक्ति के मन में समकामिता प्रबल है, तब वह कभी स्त्री से प्रेम न कर सकेगा, इत्यादि।

ऊपर जिस चार प्रकार की प्रीति का या काम का वर्णन किया है वे सभी परस्पर थोड़-बहुत विरोधी हैं। अतएव उन सब का हमारे ज्ञान में एकदा और एकत्र समावेश सम्भव नहीं। मनुष्य में ऐतर-कामिता ही स्वभाविक है। किन्तु यह कोई बात नहीं है कि किसी में ऐतर-कामिता परिस्फुट होने पर उसमें अन्य काम न होंगे। अन्य काम आदि हमारे अज्ञात मन में रुद्ध-इच्छा रूप में रहेंगे। इस प्रकार की रुद्ध अवदमित-इच्छा प्रायः ही स्वप्न में प्रकाशित होने की चेष्टा करती है। स्वप्न में सम-कामिता, स्वरति और स्वतः-रति मूलक इच्छाओं का आभास प्रायः मिलता है।

अब यहाँ काम-चेष्टा के सम्बन्ध में और भी कुछ कहूँगा। काम-चेष्टा का अर्थ केवल रति-क्रिया ही नहीं है। प्रेम-पात्र को अपना रूप दिखाना[1] और उसका रूप देखना[2] भी काम चेष्टा-मूलक है। सम्भव है, बहुतों को यह सुनकर आश्चर्य हो कि प्रेमास्पद को पीड़न करना[3] या

1 Exhibitionisom.

2 Observationisom

3 Sadisom

लक्षण और प्रत्येक स्त्री के शरीर पर कई पुरुष-लक्षण देखे जाते हैं। शरीर-वैज्ञानिकों के मत से, प्रत्येक मनुष्य के शरीर पर स्त्री और पुरुष—दोनों प्रकार के लक्षण वर्त्तमान हैं। अवश्य, पुरुष-शरीर पर स्त्री-लक्षण और स्त्री-शरीर पर पुरुष-लक्षण उतने परिस्फुट नहीं होते। मनोविज्ञान की दृष्टि से देखने पर कहा जा सकता है कि प्रत्येक पुरुष के मन में नारी-भाव और प्रत्येक नारी के मन में पुरुष-भाव वर्त्तमान है। हमारी भाषा मे कहा जाने पर, नर की नारी होने की इच्छा और नारी की नर होने की इच्छा प्रत्येक के मन में अज्ञात-रूप से विद्यमान है। वह इच्छा स्वप्न में प्रकाशित होते देखी जाती है।

मोटे तौर पर यह कहा जा सकता है कि निम्नलिखित इच्छाएँ स्वप्न में प्रकाशित हुआ करती हैं:—

(१) स्वतः-कामेच्छा।
(२) स्व-कामेच्छा।
(३) समकामेच्छा।
(४) सादन-कामेच्छा।
(५) सर्पण-कामेच्छा।
(६) विलसन-कामेच्छा।
(७) ईषण-कामेच्छा।
(८) अजाचारेच्छा।

---

1 Auto-erotic wish.
2 Narcissitic wish.
3 Homo-sexual wish
4 Sadistic wish.
5 Masochistic wish
6 Exhibitionistic wish
7 Observationistic wish
8 Incenstuous wish.

भक्ति, पितृ-भक्ति इत्यादि के मूल में काम वर्त्तमान है। वयस के साथ-साथ कई कारणों से शिशु का आत्मीय-स्वजनों के प्रति जो काम-भाव होता है, वह भक्ति, स्नेह इत्यादि के रूपों में परिणत हो जाता है। अनेक मनोवैज्ञानिकों के मत से शिक्षा, सामाजिकता, शासन इत्यादि ही शिशु के काम-भाव को प्रिय-परिजनों पर प्रकाशित नहीं होने देते। स्वभावतः मनुष्य के मन में ऐसी कोई बाधा नहीं, जिस से वह आत्मीय-स्वजनों के प्रति काम-भावापन्न न हो सके। केवल शिक्षा इत्यादि के कारण ही उसे ऐसी इच्छा असत् जान पड़ती है। किन्तु इतना कहना ही पर्य्याप्त नहीं है। मेरे मत से, काम-इच्छा की विरुद्ध इच्छा ही हमे निकट-आत्मीयों के प्रति कामासक्त नहीं होने देती। पहले ही कहा है कि बाधा यदि केवल बाहर की होती है, तब इच्छा हम से अज्ञात नहीं होती; क्यों कि बाहर की बाधा मन की किसी इच्छा को निर्वासित नहीं कर सकती। निर्वासित करने के लिए दूसरी एक इच्छा की आवश्यकता है। जिस प्रकार से भी हो अधिकांश स्थलों पर हमारे मन में निकट आत्मीय-स्वजनों के प्रति काम-भाव प्रकाशित नहीं होता, अज्ञात रुद्ध-इच्छा के रूप में मन में रह जाता है। अनेक स्वप्नों में इस प्रकार की अवदमित इच्छा चरितार्थ होने की चेष्टा करती है। कभी-कभी यह इच्छा प्रहरी की असावधानता के कारण मन मे स्पष्ट-रूप से प्रकट हो जाती है और इस के कारण नींद टूटने के साथ-साथ मन में दारुण क्षोभ, घृणा या आतङ्क का सञ्चार होता है।

और भी एक प्रकार की अज्ञात-इच्छा प्रायः ही स्वप्न में प्रकाशित होने की चेष्टा करती है। जीव-तत्व की आलोचना करने पर देखा जाता है कि कई प्रकार के प्राणियों में लिङ्ग-भेद नहीं होता। एक ही शरीर में पुरुष और स्त्री दोनो प्रकार के लक्षण होते है। इन प्राणियों को उभय-लिङ्ग[1] कहते हैं। अनेकों के मत से विकास के कारण क्रमशः पुरुष और नारी प्रकृति पृथक हो गई। इसलिए प्रत्येक पुरुष के शरीर पर कई स्त्री-

1 Hermaphrodite

स्वप्न के उपादान

प्रायः ही देखा जाता है कि अज्ञात रुद्ध-इच्छा किसी के आश्रय से स्वप्न में प्रकाशित होती है। अवदमित इच्छा का यह आश्रय कई प्रकार का हो सकता है। दैनिक कार्यों में हमारी अनेक चिन्ताएँ, अनेक इच्छाएँ अतृप्त रह जाती हैं और वे सुप्तावस्था में हमारे मन में उठती हैं। उस चिन्ताधारा का आश्रय लेकर मन की अनेक अज्ञात रुद्ध-इच्छाएँ प्रकाशित होने का सुयोग प्राप्त करती हैं। पूर्व "क"—बाबू के जिस स्वप्न का जिक्र किया है, उस में "स्टुडियो के टूट कर गिर पड़ने" की बात है। "क"—बाबू ने जिस रात में उक्त स्वप्न देखा है, सम्भव है कि उस दिन, स्टुडियो की मरम्मत करने की बात उन के मन में उठी हो। अवश्य, इस स्थान पर इस का कोई प्रमाण नहीं है। किन्तु विश्लेषण करने पर प्रत्येक स्वप्न में ही किसी-न-किसी दैनिक कार्य या घटना का आभास मिलता है। दिन में अलीपुर का चिड़ियाखाना देखा, रात में स्वप्न देखा कि सिंह झपटा है। कई लोग समझ सकते हैं कि अलीपुर में सिंह का देखना ही ऐसा स्वप्न देखने के कारण के लिए यथेष्ट है। केवल सिंह देखने को ही कारण मान लेने पर, यह नहीं समझ में आएगा कि क्यों सिंह झपटा है? इस स्थल पर यह समझना होगा कि सिंह-देखने-रूपी वास्तविक घटना का आश्रय ले कर मन की किसी रुद्ध-इच्छा ने प्रकाशित होने की चेष्टा की है। जैसे दैनिक घटनाओं का आभास हमारे प्रत्येक स्वप्न में विद्यमान होता है,

(९) नर की नारी होने की और नारी की नर होने की इच्छा।

(१०) कई प्रकार की विकृत-कामेच्छाएँ; जैसे, त्रियोनिज-मैथुनेच्छा, तिर्यक-मेहनेच्छा, वस्तु-रति (Fetichism) इत्यादि।

पूर्वोक्त इच्छाओं के अतिरिक्त अन्य भी अनेक प्रकार की इच्छाएँ स्वप्न मे प्रकाशित हो सकती है। ये साधारणतः सम्पूर्ण अज्ञात न होने पर भी मन में अपरिस्फुट आकार में होती हैं। जैसे—

(११) पर स्त्री या पर पुरुष के प्रति कामेच्छा।

(१२) प्रिय-पात्र के प्रति शत्रुभाव।

(१३) जो इच्छाएँ मन में परिस्फुट हैं, तथा सामाजिक या नैतिक शासन के कारण चरितार्थ नहीं हो सकतीं।

(१४) सुप्तावस्था में शरीर-वृत्ति-मूलक तथा रति-वेग-जनित इच्छाएँ, शीत-ग्रीष्म आदि निवारण की इच्छाएँ, इत्यादि।

---

9 Opposite wish.

10 Perverse wishes.

11 Hetero-sexual wish.

में मौजूद होता है। अकस्मात् प्रकाशन की बाधा हट जाती है और उस सुयोग में सम्पूर्ण स्वप्न एक-साथ मन में जागरित हो जाता है। हम कभी-कभी स्वप्न में स्वप्न देखते हैं। संस्कृत में इस का नाम 'स्वप्नान्तिक' है। जब प्रहरी स्वप्न जान कर निश्चिन्त हो जाता है, तब अवदमित इच्छा प्रकाशित होने का सुयोग पाती है।

वैसे ही निद्रावस्था की अनुभूति भी थोड़े-बहुत परिमाण में स्वप्न के साथ लगी रहती है। घटना या निद्रावस्था की अनुभूति मन की रुद्ध-इच्छा के साथ मिल कर स्वप्न में विकृत हो सकती है। रुद्ध-इच्छा के प्रकाशन में सुविधा होने के कारण दैनिक घटना की इस प्रकार विकृति होती है। मन का प्रहरी सजग होने पर अवदमित-इच्छा भी सीधे-सादे रूप में स्वप्न में प्रकाशित नहीं हो सकती। कभी-कभी एक ही अज्ञात-इच्छा अनेक-रूपों में विभिन्न स्वप्नों द्वारा प्रकाशित हुआ करती है। मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि किसी एक रात में एक से अधिक स्वप्न देखने पर भी, सभी स्वप्नों में एक ही रुद्ध-इच्छा का परिचय मिलता है। सम्भव है, रात के प्रथम स्वप्न का विश्लेषण करने पर देखा जाय कि उस में उस रात के परवर्त्ती स्वप्न का अनुबन्ध वर्त्तमान है; अथवा एक ही भाव दो स्वप्नों में दो प्रकार से प्रकाशित हुआ है। एक ही रात में देखे गए दो या उस से अधिक स्वप्नों में मैंने दो अज्ञात इच्छाओं को स्वतन्त्र-रूप से परितृप्त होने की चेष्टा करते नहीं देखा। मानसिक व्याधिग्रस्त रोगी की चिकित्सा करते समय, कभी-कभी उस के अधिकांश स्वप्नों का विश्लेषण करना आवश्यक होता है; ऐसे स्थलों पर मैंने प्रायः ही देखा है कि रोगी ने उन कई रातों में जो स्वप्न देखे हैं, वे प्रथम देखने में सम्पूर्णतः विभिन्न प्रकार के होते हुए भी, उन में एक ही अज्ञात इच्छा का आभास वर्त्तमान है। हम कभी-कभी बहुत थोड़े समय में बहुत बड़ा स्वप्न देख सकते हैं। त्रैलोकनाथ मुखोपाध्याय की 'वीरबाला' गल्प के आख्यान-भाग जितना बड़ा स्वप्न देखना भी असम्भव नहीं। इस सम्बन्ध में बहुत आलोचना हुई है कि किस प्रकार इतना बड़ा स्वप्न इतने थोड़े समय में देखा जा सकता है। अधिकांश मनोवैज्ञानिकों के मत से, इस प्रकार के स्वप्न का सब माल-मसाला पहले से ही हमारे मन के अज्ञात प्रदेश

सार्वजनीन स्वप्न

कितने ही स्वप्न ऐसे हैं, जिन्हें प्रायः सभी देखते हैं, जैसे, उड़ने का स्वप्न। इस प्रकार के स्वप्न सामान्य परिवर्तित आकार में अथवा सम्पूर्ण अविकृत-रूप में थोड़े-बहुत दिन के आगे-पीछे प्रायः सभी व्यक्ति देख सकते हैं। ऐसे स्वप्नों को सार्व-जनीन स्वप्न[1] कहा जा सकता है। आकाश में उड़ने के जैसे अन्य भी अनेक स्वप्न प्रायः सभी देखते हैं। जैसे, ऊपर से गिरना, नग्न अवस्था मे घूमना, दाँत तोड़ डालना, प्रस्तुत हुए बिना परीक्षा देना, चोर-डाकू देखना, जीव-जन्तु से डर जाना, साँप देखना, जल मे डूबना या जल से निकाला जाना, प्रिय-परिजनों की मृत्यु, इत्यादि। इस प्रकार के स्वप्न प्रायः सब देशों के मनुष्य ही देखते हैं और उनके अर्थों में भी विशेष कोई अन्तर नहीं देखा जाता। अवश्य, जो विषय जीवन में नहीं जाने, नहीं सुने, उन विषयों के स्वप्न नहीं देखे जाएँगे। मैं यहाँ इन स्वप्नों का विश्लेषण नहीं करूँगा, केवल अर्थ आदि को ही समझाने की चेष्टा की जायगी। बहु-संख्यक मनोवैज्ञानिकों की समवेत चेष्टा से ये अर्थ आविष्कृत हुए हैं। इस प्रकार के किसी-किसी स्वप्न के दो-दो तीन-तीन अर्थ प्रकट हुए हैं। किन्तु अब भी यह नहीं कहा जा सकता है कि वे सभी स्थलों पर यथार्थ अर्थ प्रकट कर सके हैं।

आकाश मे उड़ने का स्वप्न

इस स्वप्न को सभी एक ही ढंग से नहीं देखते। कोई देखता है कि वह आकाश में उड़ता है और कोई देखता है कि उसका शरीर गुब्बारे

1 Typical dreams

स्वप्न में बाल्यस्मृति

दैनिक घटना और निद्रा-काल की अनुभूति की भाँति, बाल्यकाल की स्मृति भी अज्ञात-रुद्ध-इच्छा के आत्म-प्रकाशन में सहायता कर सकती है। विश्लेषण करने पर अधिकतर स्वप्नों में शैशव की किसी-न-किसी घटना की स्मृति का आभास मिलता है। परवर्त्ती काल में अवदमन[1] के कारण हम जिन इच्छाओं के अस्तित्व को भूल जाते हैं। बाल्यकाल में उन में से अनेक हमारे मन में स्पष्ट होती हैं। शैशव के घटना-समूह के साथ परवर्त्ती काल की रुद्ध-इच्छाएँ नाना रूपों से विजड़ित हैं; इसलिए स्वप्न में बाल्य-काल की घटनाओं का समावेश अधिक होता है। अनेकों ने लक्ष्य किया होगा कि वे शैशव में जिस मकान में रहते थे, स्वप्न में उसी के अधिक दृश्य देखते हैं, बाद में किसी अन्य मकान में रहने पर भी जिस मकान के साथ शैशव की स्मृति विजड़ित है, उसी मकान के स्वप्न अधिक देखा करते हैं।

---

1 Repression

ऊपर से गिरने का स्वप्न

आकाश में उड़ने के स्वप्न में आनन्द का भाव होता है। किन्तु इस मे होता है भय का भाव। इस प्रकार के स्वप्न के अर्थ के सम्बन्ध में भी मत-भेद है। किसी-किसी का यह मत है कि जब हमारे पूर्वपुरुष वानर थे, तब वे वृक्षों पर ही रहा करते थे। बीच-बीच में सोते हुए वृक्ष से गिर कर उन में से कई तो पञ्चत्व को प्राप्त होते थे और कई जमीन पर गिरने से पहले वृक्षों के डाल-पत्ते पकड़ कर जान बचा लेते थे। इस प्रकार बड़ी मुश्किल से आई हुई मौत के हाथ से छुटकारा पाना कोई मामूली बात न होती थी। इसलिए यह घटना उनके मन पर एक दृढ़रेखा बना लेती थी। उन्हीं वानरों के वंशधरों के, अर्थात् हमारे, मन में वंशपरम्परा से पतन की धारणा चली आई है। हम इसी कारण नींद में ऊपर से नीचे गिर जाते हैं, ऐसा स्वप्न देखते हैं; किन्तु कभी मृत्तिका स्पर्श नहीं करते। स्वप्न की यह व्याख्या जीव-विज्ञान-मूलक[1] है—मनोविज्ञान से इस का विशेष मूल्य नहीं। और किसी-किसी के मत से, हमारे नींद में दोनों पैर जरा सरक जाने से हम ऊपर से गिरने का स्वप्न देखते है। यह व्याख्या भी मनोविज्ञान-सम्मत नहीं है। अनेक मनोवैज्ञानिकों के मत से, स्वप्न में ऊपर से गिरना—हमारे नैतिक पतन का प्रतीक है। हमारे प्रत्येक के मन में नाना गर्हित कामों की इच्छाएँ भरी हुई है। ऊपर से गिरने के स्वप्न के स्वप्न में अधःपतन की इच्छा ही काल्पनिक-रूप से परितृप्त होती है।

नग्न अवस्था में भ्रमण करना

यह स्वप्न अनेक आकारों में दिखलाई पडता है। अविकृत अवस्था में स्वप्न इस प्रकार है,—'स्वप्न-द्रष्टा नग्न है; इस से वह विशेष लज्जित है। किन्तु नग्नता ढकने का कोई उपाय नहीं देखता।

---

1 Biological

की भाँति हलका हो गया है, वह सन् सन् करता हुआ पक्षी की भाँति उड़ता जा रहा है, इत्यादि। मनोवैज्ञानिक इस श्रेणी के स्वप्न के अर्थ के सम्बन्ध में एक मत नहीं हैं। बहुत सम्भव है कि आकाश में उड़ने का स्वप्न सब स्थलों पर एक ही अर्थ का निर्देश नहीं करता। ऐसे स्वप्न के साथ प्रायः एक आनन्द का भाव मिश्रित होता है। हम कई समय खेल के बहाने छोटे बालकों को ऊँचा उछाला करते हैं। इससे बालक बहुत प्रसन्न हुआ करते हैं। विश्लेषण करने पर देखा जाता है कि शैशव की ऐसे खेल-कूद की आनन्द स्मृति प्राय: आकाश में उड़ने के स्वप्न के साथ लगी हुई है। इसलिए कोई-कोई मानते है कि हमारी पुनः बाल्यजीवन प्राप्त करने की आकांक्षा, आकाश मे उडने के स्वप्न में चरितार्थ होती है। उच्चाभिलाषी व्यक्ति प्रायः ही इस प्रकार के स्वप्न देखा करते हैं। स्वप्न की झोंक में जन-साधारण को पीछे छोड कर आकाश में उड़ने के द्वारा, मन की उच्चाकांक्षा काल्पनिक भाव से परितृप्त होती है। और इसके विपरीत, कई कहते हैं कि कामज-इच्छा से ही ऐसे स्वप्न की उत्पत्ति है। कई बार देखा जाता है कि झूले में झूलते समय छोटे बालकों या वयस्क व्यक्तियों के मन में काम-भाव का सञ्चार होता है। पूर्व-समय मे वसन्तोत्सव पर झूला झूलने का बहुत प्रचलन था। वसन्तोत्सव का दूसरा नाम मदनोत्सव भी है। झूले का आनन्द, उछालने में बालकों का आनन्द और स्वप्न की झोंक मे आकाश में उड़ने का आनन्द सभी एक-जातीय हैं। मैंने कई आकाश में उड़ने के स्वप्नों का विश्लेषण कर के देखा है कि उन सब के मूल में गुरुजनों के प्रति काम-भाव विद्यमान है। भाषा की दृष्टि से देखे जाने पर भी यह प्रतीत होता है कि इस प्रकार के स्वप्न के मूल में काम-भाव है। जैसे, हम किसी का चरित्र-दूषित होने पर बोल-चाल की भाषा में कहते हैं कि 'वह आज-कल उड़ना सीख गया है।'

पाठ तैय्यार नहीं और परीक्षा देनी पड़ेगी

फ्रयेड कहते हैं कि जो पूर्व परीक्षा में फेल हो गए हैं, वे यह स्वप्न नहीं देखते। उनके मत से, हाथ में कोई कठिन कार्य्य होने से हम ऐसा स्वप्न देखते हैं। इस स्वप्न का उद्देश्य यह है कि स्वप्न द्रष्टा आप ही अपने को आश्वासन देता है—मन! तू जैसे पहले भी कई बार अनर्थक चिन्तित हुआ था, अब की बार भी तू वृथा ही चिन्तित होता है। स्वप्न में किए जाने वाले काम की सफलता का ही आभास होता है। किन्तु मैं इस प्रकार के स्वप्न के अर्थ के सम्बन्ध में फ्रयेड के साथ पूर्णतः एकमत नहीं हूँ। मैं ऐसे कई व्यक्तियों को जानता हूँ, जिन्होंने परीक्षा में फेल होने पर भी ऐसा स्वप्न देखा है। इसलिए वह कोई बात नहीं है कि इस प्रकार के सभी स्वप्नों में कार्य की सफलता का ही आभास होगा। जाड़े की रात में सोते समय पेशाब की हाजत होने पर, मन में कई बार यह द्वन्द्व उपस्थित होता है कि बिछौने छोड़कर उठूँ या नींद लूँ। इस से अशान्ति होती है। पेशाब करना जरूरी है, और किया नहीं जाता, यही भाव स्वप्न में प्रकाशित होता है—परीक्षा देनी पड़ेगी, और पाठ तैयार नहीं। शारीरिक वृत्तिगत इच्छा ही इस स्वप्न का मूल कारण है किन्तु मैंने अधिकांश स्थलों पर इस इच्छा के साथ काम-इच्छा को भी देखा है। ट्रेन फेल होने के स्वप्न का अर्थ भी पूर्वानुरूप है।

चोर-डाकू और हिंस्र जन्तुओं का स्वप्न

विश्लेषण करने पर चोर देखने के स्वप्न के मूल में पिता के प्रति वैर-भाव देखा जाना है। स्वप्न में डाकुओं के आक्रमण का अर्थ है—कामज आक्रमण। हिंस्र जन्तुओं के आक्रमण का भी यही अर्थ है। पुरुष के पक्ष में सम-कामिता ऐसे स्वप्न का मूल कारण है।

जल में डूबना या जल से निकाले जाने का स्वप्न

इस स्वप्न का अर्थ सन्तान पाने की इच्छा है। यह आश्चर्य की बात है कि अज्ञात-रूप में पुराणों, गल्पों और उपकथाओं में स्वप्न का

वह मनुष्यों में घूम रहा है, या उस के चारों ओर मनुष्य खड़े हैं। इस स्वप्न की विशेषता यह है कि स्वप्न-द्रष्टा नग्नता के लिए स्वयं लज्जित है, किन्तु अन्य व्यक्ति उस की इस परिस्थिति (नंगेपन) को ग्राह्य ही नहीं करते। कोई इस स्वप्न को इस प्रकार देखते हैं कि स्वप्न-द्रष्टा के वस्त्र आदि स्थानच्युत् हो रहे हैं उसे इसी अवस्था में दूसरों के सामने जाना पड़ा है। या जिस पोशाक में जहाँ जाना उचित नहीं, उसी पोशाक मे वह वहाँ गया है। फ्रयेड कहते हैं कि इस श्रेणी का स्वप्न न देखने वालों की संख्या बहुत कम है। किन्तु मैं तो समझता हूँ कि विलायत की तुलना में इस देश में बहुत अधिक व्यक्ति प्रायः ऐसा स्वप्न नहीं देखते। इस श्रेणी के स्वप्न की उत्पत्ति अपना रूप दिखाने की इच्छा से है। बालक स्वभावतः नङ्गे रहने से प्रेम करते हैं। समाज और शिक्षा के कारण यह नग्नता क्रमशः उनके मन में लज्जा के भाव का सञ्चार करती है। स्वप्न में नंगे होने का अर्थ यही है कि हम उसी बाल्य-काल की असङ्कोच नग्नता को पुनः प्राप्त करना चाहते हैं। इसी कारण स्वप्न-दृष्ट अन्यान्य व्यक्ति, अर्थात् गुरुजन, स्वप्न-द्रष्टा की नग्नावस्था को ग्राह्य ही नहीं करते। विलायत की तुलना में हमारे देश में अपना रूप दिखाने का सुयोग अधिक होने के कारण, इस इच्छा के रुद्ध होने की सम्भावना बहुत कम है।

दाँत तोड़ने का स्वप्न

यह स्वप्न भी विलायत की तुलना में हमारे देश में कम आदमी देखते है। स्वप्न-द्रष्टा खुद अपने दाँत तोड़ डालता है, या दूसरा कोई उसके दाँत तोड़ देता है, या अपने आप दाँत तोड़ लेता है, या अपने आप दाँत टूट जाते हैं। फ्रयेड कहते हैं कि इस श्रेणी के स्वप्न की उत्पत्ति अयोनिज काम-इच्छा से है। किन्तु स्त्री के पक्ष में ऐसे स्वप्न से सन्तान-लाभ की इच्छा सूचित होती है।

ज्ञानतः जिस से प्रेम करता हूँ, क्या यह सम्भव है, कि मन में उसके प्रति वैर-भाव हो? यह पहले ही कहा है कि स्वप्न में जो रुद्ध-इच्छाएँ चरितार्थ होने की चेष्टा करती हैं, उनमें से अधिकांश शैशवावस्था की होती हैं। आत्मीय-स्वजनों के प्रति शत्रु-भाव की उत्पत्ति भी शैशव में ही होती है। बालकपन में भाई-बहनों में हिंसा का भाव स्वाभाविक है; बालक-बालिकाओं को लक्ष्य करने पर यह बात समझ में आजायगी। हम में से बहुत से सोचते है कि मनुष्य जीवन मे शैशवावस्था ही सब से मधुर है, सोचते है कि इस सोने के शैशव में हिंसा-द्वेष और स्वार्थ का कोलाहल नहीं होता। यह बिना आँखों देखे विश्वास न होगा कि शिशु का मन कितना कुटिल हो सकता है। कोई-कोई यह कुटिलता देख कर भी नही देखते, बालकों का खेल कह कर उड़ा देते है। शिशु अपने सुख के लिए ही व्यस्त है। उसके आदर-यत्न या खिलौने का हिस्सेदार आने पर वह बहुत नाराज़ होता है। इसी कारण वह भाई-बहनों से ईर्षा रखता है। भाई-भाई में, या बहन-बहन में झगड़ा होने की बात तो सभी जानते हैं। मैंने ऐसा शिशु भी देखा है, जो अपने नवजात भाई को गला दबा कर मारने को तैयार हो गया है। शिशु मृत्यु के सम्बन्ध में विशेष कुछ नहीं समझ सकता। वह मौत को दूसरी जगह जाना समझता है। घर में किसी की मृत्यु होने पर शिशु को समझाया जाता है कि मृत-व्यक्ति स्वर्ग मे गया है। शिशु के निकट स्वर्ग एक भिन्न-देश मात्र है। उसकी भाई-बहन की मृत्यु-कामना का उद्देश्य उन्हें स्थानान्तर करना हो सकता है। मैं यह नहीं कहता हूँ कि शिशु के मन में केवल क्रूर-भाव होते है। शिक्षा, शासन और स्वभाव के कारण उसके मन में प्रेम आदि सद्गुणों का भी उन्मेष होता है। किन्तु किसी के प्रति भी वैर और प्रीति-भाव दोनों एक साथ नहीं हो सकते। इसलिए शैशव में जो भाई-बहनों के प्रति विरोध का भाव होता है, वह प्रेम का परिपन्थी होने के कारण क्रमशः उनके मन के अज्ञात प्रदेश में चला

अर्थ प्रकाशित होता है। पौराणिक उपकथाओं में देखा जाता है कि अनेक नायकों की उत्पत्ति जल से है; जैसे, कर्ण की। रवीन्द्रनाथ की 'मुक्त-धारा' में राजकुमार जल की धारा में ही मिला है।

प्रिय-परिजनों की मृत्यु का स्वप्न

हम प्रायः सभी किसी-किसी समय अपने निकट-आत्मियों की मृत्यु का स्वप्न देखा करते हैं। फ्रयेड ने इस प्रकार के स्वप्न की विशद आलोचना की है। इन स्वप्नों को दो श्रेणियों में विभक्त कर सकते है—(१) स्वप्न में पिता-माता या अन्य किसी आत्मीय की मृत्यु हुई, किन्तु इस दुर्घटना से स्वप्न-द्रष्टा के मन में किञ्चित भी शोक-दुःख का सञ्चार न हुआ। (२) आत्मीय-वियोग का स्वप्न देख कर मन में दारुण-शोक और दुश्चिन्ता का उदय हुआ। यहाँ तक कि जगने पर भी थोड़ी देर मन खराब रहा।

वास्तव में प्रथम श्रेणी के स्वप्न में कोई मृत्यु-इच्छा नहीं होती। व्यक्ति-विशेष के पत्त में ऐसे स्वप्न के नाना प्रकार के अर्थ हो सकते है। फ्रयेड ने एक बहुत अच्छा उदाहरण दिया है। 'एक स्त्री ने स्वप्न देखा कि उसकी बहन का लड़का मर गया, उसे शवाधार पर लिटाया गया है। किन्तु स्वप्न में किसी प्रकार के दुःख का भाव न था। विश्लेषण में देखा गया कि कुछ दिन पूर्व उसी बहन का अन्य एक बालक मर गया था, तब घर पर अनेक आत्मीय-बन्धु-बान्धवों का समागम हुआ था। उन व्यक्तियों में स्वप्न-दर्शन-कारिणी का प्रेमी भी उपस्थित था। उस घटना के बाद उसकी अनेक दिन से प्रणयी के साथ मुलाकात नहीं हुई थी। जैसे एक बार मृत्यु उपलक्ष पर प्रेमास्पद को देखने का सुयोग मिला था, वैसे ही फिर किसी की मृत्यु होने पर उससे साक्षात्कार होगा, यही इच्छा उक्त स्वप्न में प्रकाशित हुई थी। स्वप्न का उद्देश्य बालक की मृत्यु नहीं, प्रणयी से मिलने की आकांक्षा है। जिस मृत्यु के स्वप्न में दुःख का भाव विजड़ित हो, उसी के मूल में मृत्यु-कामना वर्त्तमान होती है। यहाँ यह प्रश्न उठ सकता है कि

कामना की थी। कई बार मा-बाप के बदले में हम दूसरे बड़े-बूढ़ों की मृत्यु का स्वप्न भी देखते हैं किन्तु अधिकांश स्थलों पर यह मृत्यु-दर्शन मूलतः मा-बाप की मृत्यु-कामना का ही रूपान्तर होता है।

जाता है। किन्तु यह वैर-भाव ज्ञान-गोचर न होने के कारण ही नष्ट भी हो जाता है, सो नहीं—वयस्क हो जाने पर भी अनुकूल घटना द्वारा वह पुनः प्रकाशित हो सकता है। यह कहना ही फिजूल है कि भाइयों में कितना उत्कट विरोध हो सकता है। इसलिए ऊपर के मन में प्रेम और भीतर के मन में सम्पूर्ण अनजान में वैर-भाव होना कुछ विचित्र नहीं है। यह वैर-भाव ही प्रहरी की आँखों में धूल झोंक कर, स्वप्न में आत्मीय-स्वजनों की मृत्यु-कामना के रूप में प्रकाशित होता है। किन्तु हम चेतना में देखते हैं कि आत्मीय-स्वजनों के प्रति प्रेम की इच्छा ही होती है। स्वप्न की मृत्यु-कामना इस प्रेम की विरोधी होने के कारण मन में इतना कष्ट होता है।

इस सम्बन्ध में भी आलोचना करना आवश्यक है कि मा-बाप के प्रति लड़के-लड़कियों का कैसा भाव हो सकता है। सम्भव है, बहुतों ने देखा हो कि लड़का मा से और लड़की बाप से ज़्यादा प्रेम करती है। बहुत छोटी उमर में भी इस ऐतर-कामिता का आभास मिलता है। बाप में, मा के प्रेम का अधिकारी होने के कारण लड़का बाप से ईर्षा करता है। इसी प्रकार मा, बाप के प्रेम की अधिकारिणी होने के कारण लड़की मा को ईर्षा की दृष्टि से देखती है। मा-बाप के मृत्यु के स्वप्न की आलोचना करने पर उसकी एक विशेषता सहज में हमारी नजरों में आती है। लड़के बाप की और लड़कियाँ मा की मृत्यु के स्वप्न अधिक देखती हैं। लड़के के लिए मा की और लड़की के लिए बाप की मृत्यु का स्वप्न देखना बहुत विरल है। अनेक समय मन का प्रहरी सजग रहने के कारण मा-बाप की मृत्यु का स्वप्न सीधे सादे-रूप में नहीं दीखता। जैसे, "क" बाबू ने अपने बाप की मृत्यु का स्वप्न अविकृत अवस्था में नहीं देखा। मेरे एक रोगी ने एक बार एक स्वप्न देखा कि वह नंगे पैर शरीर पर चादर डाले फिरता है। अबाध-भावानुसङ्ग-क्रम की सहायता से स्वप्न का विश्लेषण करने पर देखा गया कि यह अशौच का चिह्न है। उसने भी पिता की मृत्यु-

हुआ, फिर मकान कैसे शरीर के प्रतीक-रूप में व्यवहृत
फ्रयेड कहते हैं कि प्रतीक सहज-संस्कार की भाँति मनुष्य के मन में स्वतः ही स्फूर्त्त हुआ करता है। मैं इस व्याख्या का अनुमोदन नहीं कर सकता। कारण, मनोविज्ञान में जीव-विज्ञान-मूलक व्याख्या ठीक नहीं। यह एक आश्चर्य की बात है कि किस प्रकार सभी किसी एक प्रतीक को किसी एक विशेष अर्थ में व्यवहार करते हैं? आज भी इस प्रश्न का उचित उत्तर नहीं मिलता। बर्बर और आदिम अधिवासियों के भाषा-तत्व की आलोचना करने पर देखा जाता है कि उनकी चिन्ताधारा के साथ सभ्य-जाति की चिन्ता-धारा का पार्थक्य है। आदिम जाति रूपक या प्रतीक की सहायता से अनेक विषयों की चिन्ता करती है। शिशु की चिन्ता में भी रूपक का प्रभाव अधिक होता है। स्वप्ना-वस्था में हमारे मन की दशा अनेक विषयों में शिशुओं की जैसी हो जाती है। अतएव, शिशु की चिन्ता-धारा के विशेषत्व हमारे स्वप्न में प्रकाशित होते हैं। स्वप्न में प्रतीक के अति-आविर्भाव का यह भी एक कारण है।

रूपक और प्रतीक में थोड़ा अन्तर है। जब शरीर-तत्त्व के भजन में आत्मा को पक्षी और शरीर को पिंजरा कहा जाता है, तब वह रूपक-मात्र होता है। हम से इस रूपक का अर्थ छिपा हुआ नहीं। किन्तु यदि कोई साँप की उपासना करता है और क्यों साँप को देवता मानता है, यदि यह वह न जानता हो, तभी साँप को प्रतीक कहा जा सकता है। यह सत्य है कि हम सभी प्रतीकों की एक मनगढ़न्त व्याख्या करते हैं। प्रतीक की विशेषता यह है कि उस का यथार्थ अर्थ बतला देने पर भी मन उसे मानना नहीं चाहता। मनोवैज्ञानिक ने स्थिर किया है कि साँप पुलिङ्ग का प्रतीक है। स्वप्न मे साँप इसी अर्थ में प्रकाशित होता है। प्रतीक का अर्थ जान लेने पर देखा जायगा कि वास्तव में प्रतीक जिस वस्तु का

स्वप्न-प्रतीक

यह पहले ही कहा जा चुका है कि स्वप्न में अनेक वस्तुएँ सीधे-सादे रूप में न दिखलाई देकर प्रतीक[1] रूप में दीखती हैं। इस प्रतीक का अर्थ सहज में नहीं समझा जाता, इसलिए प्रतीक बड़ी आसानी से मन के प्रहरी को भुला सकता है। प्रतीक का अर्थ निर्द्धारण करना बहुत सीधा काम नहीं। किसी एक स्वप्न के विश्लेषण से इस के अर्थ का निर्णय करना असम्भव है। अनेक समय अनेक स्वप्नों का विश्लेषण करने पर भी प्रतीक का यथार्थ अर्थ प्रकट नहीं किया जा सकता। भाषातत्व, पुराण आदि की आलोचना द्वारा प्रतीक का अर्थ निर्द्धारण किया जाता है। प्रतीक सार्वजनीन है; उसके अर्थ में विशेष कोई तारतम्य नहीं होता। प्रतीक सभी के स्वप्नों में एक ही अर्थ में व्यवहृत होता है। इस नियम का कभी उल्लङ्घन नहीं होता, यह अवश्य नहीं कहा जा सकता है। इस लिए केवल प्रतीक का ही अर्थ जान कर स्वप्न की व्याख्या करना निरापद नहीं। फ्रयेड कहते हैं कि प्रतीक की धारणा किसी व्यक्ति-विशेष की अभिज्ञता पर निर्भर नहीं करती। कल्पना कीजिए कि मैं ने शरीर-तत्व का कोई भजन नहीं सुना है और यह भी किसी दिन नहीं सोचा कि शरीर के साथ घर का कोई सादृश्य हो सकता है। इस दशा में मैंने स्वप्न में मकान देखा। यहाँ भी मकान का अर्थ है—शरीर। यह समझना दुष्कर है कि यह शरीर और मकान का सादृश्य मेरे मन में किसी दिन उदित नहीं

---

1 Symbol.

भी वही। स्वप्न में जनता—स्वप्न-द्रष्टा के गुह्य-भाव या गुह्य-बात का निर्देश करती है।

स्वप्न में कई बार अधिक व्यक्तियों का समावेश होने पर, यह निर्णय करना कठिन हो जाता है कि उन में स्वप्न-द्रष्टा कौन है। ऐसे स्थल पर जो नायक है, या जिस के मन में दुःख-सुख, हर्ष-विषाद आदि की तरङ्ग उठती हैं, वही स्वप्न-द्रष्टा है। यहाँ यह कहना आवश्यक है कि स्वप्न आत्म-केन्द्रिक[1] है। द्रष्टा स्वयं किसी-न-किसी मूर्त्ति में अवश्य होता है। निपट दूसरों से सम्बन्ध रखने वाला स्वप्न हम कभी नहीं देखते। अनेक समय जो भाव या जो वस्तु स्वप्न के मूल में होती है, वह सम्पूर्ण-रूप से स्वप्न में प्रकाशित न होकर उस से सम्बन्ध रखने वाले किसी भाव के अंश विशेष का प्रकाशन मात्र होता है। यह वास्तव में प्रतीक न होने पर भी अधिकांश प्रतीक के समान है। "क" बाबू के स्वप्न में टूटी हुई दीवार के साथ कब्र की चिन्ता का संयोग था। इस लिए स्वप्न में टूटी हुई दीवार कब्र के प्रतीक के अनुरूप है।

---

[1] Ego-centric

निर्देश करता है, उस वस्तु के साथ उस की कई विषयों में समानता होगी। राजा—पिता का प्रतीक है। राजा का काम—शासन और पालन करना है। पिता का भी वही काम है। राजा और पिता दोनों ही अपराध के लिए दण्ड देते हैं; दोनों ही श्रद्धा-भक्ति के पात्र हैं। जैसे साधारण लोगों के लिए राजा का राजैश्वर्य कामना की वस्तु है, वैसे ही बालक के लिए पिता की गुणावली आकांक्षा की सामग्री है, इत्यादि। कई जगहों पर रूपक और प्रतीक का अन्तर जानना कठिन है। स्वप्न में रूपक और प्रतीक दोनों ही देखे जाते हैं। प्रतीकों के अर्थ ज्ञात होने पर स्वप्न का विश्लेषण करना उतना कठिन नहीं होता। साधारणतः स्वप्न में जो प्रतीक प्रकाशित हुआ करते हैं, यहाँ उन सब का अर्थ दिया जाता है :—

स्वप्न में राजा, शासनकर्त्ता, पुलिस इत्यादि पिता के प्रतीक हैं। इसी प्रकार—रानी माता की प्रतीक है। राजकुमार—स्वप्न-द्रष्टा स्वयं है। छड़ी, लाठी, छाता, साँप प्रभृति दीर्घ वस्तुएँ—पुं-जनन इन्द्रिय का निर्देश करती हैं। बक्स, पिटारा प्रभृति—स्त्री-जनन इन्द्रिय ज्ञापक हैं। घर—शरीर का प्रतीक है। चिकनी कोरी दीवारों वाला घर—पुरुष देह का व्यञ्जक है। जिसकी दीवारों पर चित्र या नक्काशी का काम किया गया है, ऐसा मकान—स्त्री शरीर को बताता है। पक्षी, मछली, इत्यादि—पुं-जनन इन्द्रिय ज्ञापक हैं। जटिल यन्त्रादि—स्त्री-चिन्ह के प्रतीक हैं। प्राकृतिक दृश्य—कभी पुं-चिन्ह और कभी स्त्री-चिन्ह ज्ञापन करते हैं। श्रेणी-बद्ध परस्पर दीवार संयुक्त मकान, अर्थात् जिस में एक से होकर दूसरे में जाया जाय—चरित्रहीनता को इङ्गित करता है। सीढ़ी पर चढ़ना या उतरना—रतिक्रिया का प्रतीक है। जल, सन्तान-जन्म की सूचना करता है। बहुत सम्भव है कि अग्नि भी वही सूचित करती है। चरखा, मकड़ी, इत्यादि—मा के प्रतीक हैं। नमक, विष औषध इत्यादि अनेक समय शुक्र के प्रतीक हैं। क्षत—स्त्री चिन्ह का ज्ञापक है, अँगूठी

नहीं चाहता, किन्तु यह ज़ोर देकर कह सकता हूँ कि प्रायः ही अलौकिक घटना के वर्णन करने में अतिरञ्जन का प्रयास देखा जाता है। स्वप्न में देखी जाने वाली कई विशेष-विशेष घटनाओं का उल्लेख करता हूँ, पाठक विचार करेंगे कि वे अति-प्राकृत है या नहीं।

कोई कोई स्वप्न में ऐसी घटना देखते हैं, जो बहुत पहले संघटित हुई थी; किन्तु स्वप्न-द्रष्टा उसे नहीं जान सकता था। मैं ने खुद कभी ऐसा स्वप्न नहीं देखा है और न इस प्रकार के स्वप्न का विश्लेषण करने का ही मौका मुझे मिला है। यह भी ज़ोर देकर नहीं कह सकता कि ऐसा स्वप्न दीखना सम्भव है या नहीं। किन्तु यहाँ मैं यह बतलाऊँगा कि स्वप्न में देखी गई अलौकिक घटना की परीक्षा करने के लिए किन-किन विषयों पर दृष्टि रखना उचित है। बहुत छोटी उमर की बहुत-सी घटनाएँ बिलकुल भूल जाने पर भी उन का मन के अज्ञात-प्रदेश में होना सम्भव है तथा शैशव की अन्यान्य घटनाओं के साथ संलग्न हो कर वे हमारे स्मृति-पथ में आ सकती हैं। एक हिस्टिरिया-रोग-ग्रस्त स्त्री आवेश के समय अनर्गल-रूप से विशुद्ध हिब्रू-भाषा बोला करती थी और स्वस्थ अवस्था में इस का कभी कोई लक्षण नहीं देखा जाता था कि वह हिब्रू-भाषा जानती है। इस लिए बहुतों ने घटना को 'भूतावेश' ठहरा लिया। किन्तु अनुसन्धान करने पर देखा गया कि वह स्त्री शैशव में एक पादरी के घर प्रति-पालित हुई थी। पादरी प्रतिदिन प्रातःकाल उच्चस्वर से हिब्रू-भाषा की बाइबेल का पाठ करता था। स्त्री की वह शैशव-स्मृति मन से सर्वथा निर्वासित नहीं हुई थी। स्वस्थ अवस्था में उस की स्मृति का पता नहीं चलता था, मूर्च्छा के समय वह प्रकाशित होती थी। मैं एक बार एक 'भूत लगी हुई' रोगिणी की चिकित्सा करने के लिए गया। लड़की अल्प-वयस्का थी। वह आवेश के समय बकने लगी, 'उसका नाम अमुक है, उस का गाँव अमुक है, इत्यादि; उसने स्वामी के साथ झगड़ा होने के कारण आत्म-हत्या की है, इस रोगिणी को

स्वप्न में अतिप्राकृत विषय

यह जानने के लिए सर्व-साधारण को कौतूहल है कि स्वप्न में अतिप्राकृत घटना का आभास मिलता है, या नहीं। कारण, हम में अति-प्राकृत घटना पर विश्वास करने की प्रबल प्रवृत्ति होती है। इस लिए हम कभी-कभी बहुत मामूली प्रमाणों के मिलने से ही किसी अलौकिक घटना पर विश्वास कर बैठते हैं। किसी भी घटना के सत्या-सत्य के सम्बन्ध में निःसंशय होने के लिए सतर्कता की आवश्यकता है। सम्भव है कि कई स्वप्न में देखी हुई भाँति-भाँति की अलौकिक घटनाओं के उदाहरण दे सकते हैं किन्तु वे धीर-भाव से विचार करके देखने पर जान जाएँगे कि उन में से अधिकांश विज्ञान की दृष्टि से ग्राह्य नहीं। कल्पना कीजिए कि मैं भूत पर विश्वास करता हूँ। अँधेरी रात में झाड़ी को देख डर गया हूँ; बैठकखाने में आ कर मित्रों से कहा कि 'अभी-अभी अपनी आँखों से भूत को देखा है।' यहाँ जान-बूझ कर झूठ न बोलने पर भी मेरी बात प्रामाण्य नहीं। भूत पर विश्वास होने के कारण मेरे देखने में भूल हुई है। हम रुद्ध-इच्छा के द्वारा परिचालित हो कर कैसी भूल कर सकते हैं, इसकी १२२८ साल के 'भारतवर्ष' की भाद्र संख्या के 'कारण-तत्व' शीर्षक प्रबन्ध में विशद-रूप से आलोचना की गई है। स्वप्न मे अज्ञात रुद्ध-इच्छा का प्रभाव अधिक होता है, इसलिए स्वप्न में देखी गई घटना का वर्णन करने में भी भूल होने की अधिक सम्भावना है और भी कई कारणों से अलौकिक घटना का वर्णन करने में भूल हो सकती है। जान-बूझ कर झूठ बोलने की आलोचना करना

घटना के वास्तविक रहस्य का निर्णय होता या नहीं, कुछ नहीं कहा जा सकता।

पाठकों ने देखा है, यह कोई बात नहीं है कि किसी घटना का सन्तोष-जनक कारण न बता सकने से वह घटना अलौकिक प्रमाणित हो जायगी। उपरोक्त दोनों घटनाओं के मूल में स्मृति-रोध वर्त्तमान है। अतीत-घटना स्वाभाविक अवस्था में मन में न आने के कारण, दोनों रोगिणियों का आचरण अलौकिक जान पड़ा था।

अन्य भी एक प्रकार का स्मृति-विभ्रम[1] देखा जाता है। ऐसे स्मृति-विभ्रम के कारण जो विषय या घटना वास्तव में सर्व-प्रथम देखी या सुनी जाती है, ऐसा मालूम होता है कि वह पहले भी कभी देखी या सुनी है। कल्पना कीजिए कि एक व्यक्ति पहले कभी विलायत नहीं गया, किन्तु प्रथम ही लण्डन की विक्टोरिया स्टेशन पर उतरते ही उसके मन में हुआ, कि यह स्थान उसने पहले भी कभी देखा है। क्यों ऐसा स्मृति-विभ्रम होता है, इसके सम्बन्ध में बर्गसन—प्रमुख बड़े बड़े मनोवैज्ञानिकों ने विस्तार-पूर्वक आलोचना की है। सब प्रकार के स्मृति-विभ्रम का रहस्य इस समय भी नहीं जाना गया है। यहाँ मैं अपना मत ही व्यक्त करूँगा।

जैसे, मैं रविवार के दिन शाम को अजायब घर देखने के लिए गया। दूसरे दिन इस घटना की स्मृति मेरे मन में उठी। केवल अजायब घर देखने की घटना ही मेरे मन में नहीं उठी। यह भी मुझे याद आ गया कि किस जगह और किस समय अजायबघर देखा था। अतएव देखा जाता है कि स्मृति में अतीत-घटना के अतिरिक्त स्थान और काल का भी निर्देश होता है। और एक उदाहरण देता हूँ। बहुत दिन बाद किसी परिचित मित्र को देखा। मित्र की पूर्व की मूर्ति मेरे मन में उठी और वही मूर्त्ति मेरे सामने खड़ी है, यह भी

---

1 Paramnesia

अशुचि अवस्था में पा कर इसे लगी हूँ।' यह आश्चर्य का विषय है कि रोगिणी के पिता ने Postal guide देख कर उस गाँव का पता लगाया और वहाँ के पोस्ट-मास्टर को लिखने पर मालूम हुआ कि दरअसल ही कोई चार-पाँच वर्ष पहले उस गाँव में उसी नाम की एक स्त्री ने स्वामी के साथ झगड़ा कर के आत्म-हत्या की थी। रोगिणी के पक्ष में उस आत्म-घातिनी का नाम-धाम जानने की सम्भावना न थी; इसलिए पहले 'भूतावेश' ठहराया गया और उसकी ओझा-द्वारा चिकित्सा हुई। रोगिणी के एक आत्मीय भूत पर अगाध विश्वास करते थे; उन्हों ने मुझ से प्रथम ही पूछा, "यदि आप इसे हिस्टिरिया कहें, तब उक्त आश्चर्य-जनक घटनाएँ कैसे हुईं?" मैं रोगिणी से स्वस्थ अवस्था में कई बार प्रश्न करने पर भी कुछ पता न लगा सका। सच कहता हूँ कि मैं कई दिन तक इस का असली रहस्य न जान सका। हठात् एक दिन रोगिणी के आवेश का समय उपस्थित हुआ। दौरा निकल जाने के इन्तजार में बैठा था। घर की एक दीवार-आलमारी में 'बङ्गवासी' की कुछ पुरानी संख्याएँ पड़ी थीं। समय काटने के लिए उनके पन्ने उलटने लगा, दैवात् उन में रोगिणी के मुँह से सुने हुए उसी गाँव का उल्लेख देख कर कौतूहल हुआ। पढ़ने पर मालूम हुआ, 'बङ्गवासी का सम्वाददाता लिखता है कि "अमुक नाम की स्त्री ने स्वामी के साथ झगड़ा होने के कारण आत्म-हत्या की है।" यह पढ़ने पर मेरी समझ में सब बातें साफ-साफ आ गईं। हिस्टिरिया-ग्रस्त रोगिणी ने जरूर किसी दिन इस सम्वाद को पढ़ा है और अनजान मे इस घटना ने उस के मन पर प्रभाव डाला है। वह आवेश के समय कल्पना में अपने को उस आत्म-घातिनी की प्रेतात्मा द्वारा अभिभूत समझती है। आवेश की समाप्ति पर मैंने रोगिणी को 'बङ्गवासी' दिखाया। इस के बाद उसे फिर कभी दौरा न हुआ। दैवयोग से अखबार मिल गया था, इसलिए असली रहस्य प्रकाशित हो गया, नहीं तो दूसरे किसी तरह से इस

अन्यमनस्क हो देखने पर, उसकी प्रथम दर्शन की स्मृति तत्क्षणात् मन से लुप्त हो सकती है और दूसरे ही क्षण यह मन में होना सम्भव है कि उसे पहले भी कहीं देखा है। यहाँ प्रथम उदाहरण को देखिए। क्लान्त परिश्रान्त अवस्था में, कई मानसिक उद्वेगों के बीच प्रथम लण्डन की विक्टोरिया स्टेशन पर उतरा, साथ-साथ स्टेशन की प्रथम स्मृति की छाप मन से लोप हो [illegible] लिए दूसरे क्षण ही यह मन में हुआ कि इसे पहले भी कभी देखा है। इस प्रकार स्मृति-विभ्रम उत्पन्न होता है। इसलिए यदि कोई कुछ देखने या सुनने के बाद यह कहे कि उसने उसे पहले ही स्वप्न में देखा था तब उस पर आस्था स्थापन नहीं की जा सकती।

मैं यह नहीं कहता हूँ कि अज्ञात अतीत-घटना कभी मन में नहीं उठ सकती। तथापि साधारणतः ऐसी घटनाओं का जो विवरण मिलता है वह विचार-पूर्ण नहीं है, यही कहता हूँ। कोई अतीत घटना, जैसे—आत्मीय-वियोग आदि—सुनने के बाद यदि मेरे मन में हो कि उसे स्वप्न में पहले देखा था, तो उसमे अलौकिकत्व आरोप करने का कारण नहीं—ऐसा होना स्मृति-विभ्रम के कारण सम्भव है।

समझता हूँ। किन्तु कभी-कभी ऐसा भी होता है कि किसी को देख कर जान पड़ा, यह परिचित व्यक्ति है, किन्तु यह सब कुछ भी याद नहीं आता कि यह कौन है, इसे कहाँ देखा है। इस स्थल पर स्मृति में स्थान और काल-निर्देश में व्याघात हुआ है। तब भी वह परिचित है, इतना अब भी याद है। यह कौन है, हठात् याद आया; अर्थात् पूर्व परिचय के साथ स्थान और काल का भी संयोग हो गया।

सर्व-साधारण की धारणा है कि काल के व्यवधान के साथ साथ स्मृति की विकृति होती है। प्रथम हम भूल जाते हैं कि पूर्व-परिचित व्यक्ति कौन है, उसे कहाँ देखा है; क्रमशः उसकी मूर्ति भी स्मृति-पथ से लुप्त हो जाती है; तब उसे दुबारा देखने पर, यह याद नहीं आता कि उसे कहाँ देखा है। किन्तु यह कोई बात नहीं है कि यह स्मृति-विलोप केवल काल के व्यवधान से ही सम्भव है। और भी कई मानसिक कारणों से ऐसा हो सकता है। मैं आज जिससे परिचित हूँ, कल ही उसे भूल सकता हूँ। कोई कोई बहुत जल्दी नाम भूल जाते हैं, कोई सूरत भूल जाते हैं, इत्यादि। मेरा ध्यान किसी दूसरे काम में लगा हुआ है। मेरे पास दो व्यक्ति बैठे हुए बातचीत कर रहे हैं। उनकी बातें मेरे कानों में पड़ने पर भी मेरा मन उधर नहीं। कल्पना कीजिए कि मैं जिसे नहीं जानता—ऐसे किसी व्यक्ति के सम्बन्ध में वे बातें कर रहे हैं और उस अनजान व्यक्ति का नाम भी कुछ अद्भुत है, जैसे, सोमसुन्दर है। थोड़ी देर बाद कोई दूसरा व्यक्ति आकर सोमसुन्दर का नाम ले, तब मेरे मन में यह हो सकता है कि यह नाम परिचित है, और यह याद न आएगा कि कहाँ यह नाम सुना है। इसी प्रकार हम यदि अन्यमनस्क अवस्था में कुछ प्रत्यक्ष करते हैं और बाद में वह दुबारा हमारे नयन या श्रुति-गोचर होता है, तब हम उसे परिचित समझते हैं और यह नहीं याद आ सकता कि पहले उसे कहाँ देखा है। उपरोक्त उदाहरणों में प्रथम और द्वितीय बार देखने या सुनने में काल का व्यवधान है। कोई विषय

उस स्वप्न को भावी-घटना निर्देशक समझ लिया। कहने की आवश्यकता नहीं है कि ऐसे स्वप्न में भी किसी-न-किसी प्रकार की अज्ञात-इच्छा देखी जाती है। दूसरे एक रोगी ने स्वप्न देखा कि उसे (appendicitis) हो गया है। दूसरे दिन देखा गया कि उसके पेट में थोड़ा दर्द हुआ है। इस जगह भी दर्द स्वप्न में (appendicitis) रूप में दिखाई पड़ा था। बुख़ार का स्वप्न देखकर जगने पर सचमुच बुख़ार का अनुभव करना बहुत मामूलीबात है।

मान लीजिए कि मेरा कोई आत्मीय विदेश में है, प्रति सप्ताह उसकी चिट्ठी आया करती है। किन्तु यह न था कि सभी समय चिट्ठी नियमित-रूप से आती थी। चिट्ठी आने का समय निकल जाने पर मेरे मन में विपद्-आपद् की आशङ्का का होना स्वाभाविक है। इस आत्मीय की मृत्यु-कामना भी अज्ञात-रूप से मेरे मन में हो सकती है। इसलिए इसमे कोई आश्चर्य की बात नहीं कि मैं उसकी किसी कठिन व्याधि या मृत्यु का स्वप्न देखूँ। हम इन स्वप्नों को प्रायः भूल जाते हैं और बाद में कुशल समाचार मिलने पर ऐसे अमङ्गल-जनक स्वप्न के याद आने का भी कोई कारण नही होता। किन्तु यदि वास्तव में ही अस्वस्थता के कारण चिट्ठी देने में देर हुई हो और बाद में उसकी बीमारी का समाचार पाता हूँ, तब स्वप्न की बात उसी समय याद आ जायगी और भावी घटना स्वप्न में देखने के कारण आश्चर्य भी होगा। स्वप्न की भविष्य सूचनाओं की प्रामाणिकता देखनी हो तो स्वप्नों का विवरण लिख लेना चाहिए। स्वप्न लिखने का अभ्यास करने पर पाठक देखेगे कि कितने अशुभ स्वप्न झूठे साबित होते हैं। और एक दृष्टान्त देता हूँ। ज्योतिपी के फलादेश की जो बातें मिल जाती हैं, वे ही हमें याद रहती हैं और उन्हीं का हम लोगों से जिक्र किया करते हैं। जो नहीं मिलतीं, उन्हे हम बिलकुल भूल जाते हैं, यही हमारा स्वभाव है। ज्योतिषी ने हिसाब लगा कर बता दिया कि अमुक के लड़का होगा और अमुक

स्वप्न में भावी घटना का आभास

यह कई बार कहा जा चुका है कि स्वप्न में हमारी कई अतृप्त इच्छाएँ चरितार्थ होती हैं। मेरे मन में विलायत जाने की इच्छा होने पर स्वप्न में यह देखना कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि मैं विलायत जा रहा हूँ या विलायत गया हूँ। सम्भव है कि जिस इच्छा ने मुझे विलायत जाने का स्वप्न दिखाया, वही कालान्तर में मुझे विलायत ले जाय। इसलिए स्वप्न मे भावी-घटना का आभास मिलना बहुत मामूली बात है। बहुत समय कई इच्छाएँ अज्ञात होने के कारण स्वप्न में ही प्रकाशित होती हैं और ये इच्छाएँ किसी कारण से मन में उदित होकर हमारे तदनुरूप कार्य करा सकती हैं। ऐसे समय पर भी स्वप्न में भावी घटना की सूचना मिलती है। इसलिए हम कहा करते हैं कि जब स्वप्न देखा था, तब तो नही जानते थे कि वह कार्य करना पड़ेगा। मैं एक रोगी की बात कहता हूँ, उसने स्वप्न देखा कि उसके हाथ में वात-व्याधि हो गई। सचमुच ही थोड़े दिन बाद उसके हाथ में वात-व्याधि देखी गई। जागते समय कई कार्यों में मन लगा रहने के कारण हम शरीर की थोडी-बहुत पीड़ा का अनुभव नहीं कर सकते। सोते समय मन में इस तकलीफ़ की बात उठ सकती है। सम्भव है कि वात की व्यथा पहले से ही थोड़ी-बहुत थी। दिन में काम के झंझट में रोगी को उसका कुछ ध्यान न हुआ। रात में उसी व्यथा के कारण वात-व्याधि का स्वप्न देखा और दिन में फिर उसका अस्तित्व भूल गया। उसे बाद मे व्याधि के बढ़ने पर स्वप्न की बात याद आई। स्वप्न की वात-व्याधि वास्तव में परिणित होते देखकर उसे आश्चर्य हुआ, उसने

के लड़की होगी। गणना निष्फल होने पर ज्योतिषी की बात बिलकुल याद नहीं आती किन्तु मिल जाने पर ज्योतिषी की गणना की तारीफ किया करते हैं। इस प्रकार का मेल ज्योतिषी के कृतित्व का प्रमाण नहीं हो सकता। यदि मैं ज्योतिषी बन कर सभी स्थलों पर कहूँ कि लड़का होगा, तो देखा जायगा कि प्रायः सौ में से पचास जगह मेरी बात सच होगी। कारण, लड़की होने की जितनी सम्भावना है, लड़का होने की भी उतनी ही है। इसलिए सौ में से पचास से अधिक जगहों पर मेरी गणना का मेल न होने पर गणना-शक्ति को नहीं माना जा सकता। गणना या स्वप्न में देखे गए किसी विषय का सच्ची घटना से मेल होने के कारण ही उसे अद्भुत आश्चर्य की बात नहीं माना जा सकता। प्रवासी आत्मीय-स्वजनों की विपद्-आपद् के स्वप्न हम प्रायः ही देखा करते हैं और दैवात् वह किसी जगह सच हो जाय, तो यह नहीं कहा जा सकता कि वह भविष्य-निर्देशक है। ऐसे स्थल पर संभाव्य-गणित[1] के सूत्रानुसार प्रमाण स्थिर करना चाहिए। एक उदाहरण देकर इसे समझाता हूँ। कई लोगों की धारणा है कि वायु-तिथि के हिसाब से घटती-बढ़ती है। स्मरण रखना चाहिए कि वायु दूसरे किसी कारण से या अपने आप भी घट-बढ़ सकती है। इसलिए यह कहना मुश्किल है कि वह तिथि के प्रभाव से बढ़ी है या आपने आप बढ़ी है। हम अमावस के पहले दिन या दूसरे दिन रोग बढ़ने पर भी उसके मूल में अमावस तिथि का प्रभाव मान लेते हैं और अमावस के दिन बढ़ने की तो बात ही क्या है। वैसे ही एकादशी और पूर्णिमा के समय तीन दिन तिथि का प्रभाव मानते हैं। इससे देखा जाता है कि हम मोट में १५ दिनों के बीच ६ दिनों में रोग बढ़ने पर तिथि के प्रभाव का ही उसका कारण समझते है, जो रोग अपने आप घटता-बढ़ता है, उसका भी इन दिनों में घटना-बढ़ना सम्भव है। इसलिए तिथि के प्रभाव को साबित

---

1 Law of Probability.

स्वप्न में मृतव्यक्ति की आत्मा के साथ साक्षात्कार

हमारी आलोचना का यह विषय नहीं है कि मृतव्यक्ति की आत्मा होती है या नहीं और उसे देखा जा सकता है या नहीं। यहाँ इसकी आलोचना की जायगी कि हम स्वप्न मे ऐसी कोई घटना देखते हैं या नहीं जिसकी व्याख्या की जाने पर मृत-व्यक्ति की आत्मा का अस्तित्व स्वीकार कर लेना पड़े। मैं यह नहीं कहता हूँ कि ऐसी घटना कभी हो ही नहीं सकती। किन्तु आज तक इस बात का भी कोई सन्तोष-जनक प्रमाण नही मिला है कि पहले कभी ऐसी घटना हुई है। फ्रयेड की Interpretation of Dreams नामक पुस्तक में एक शिक्षा-प्रद उदाहरण मिल गया है। किसी व्यक्ति का लड़का मर गया। प्रचलित रीति के अनुसार मृत-बालक के चारों ओर मोमबत्ती जलाई गई। रात में मृत-शरीर के पहरे पर एक मनुष्य नियुक्त था। पिता पास के कमरे में सो रहा था। दोनों कमरों के बीच के दरवाज़े ज़रा खुले हुए थे। पिता ने स्वप्न में देखा कि मृत-बालक उनके पास खड़ा हुआ कह रहा है, 'बाबा! बाबा! देखता नहीं, मैं जल रहा हूँ।' पिता की नींद टूट गई, उसने जल्दी से पास के कमरे मे जाकर देखा कि जो व्यक्ति पहरे पर था, वह गहरी नींद में सो रहा है। एक जलती हुई मोमबत्ती गिर जाने के कारण कफन मे आग लग गई है और उससे मृत-बालक का एक हाथ जल गया है।

सम्भव है, कई व्यक्ति यह कहें कि मृत-बालक की आत्मा ने आकर पिता को सावधान कर दिया था। किन्तु इस प्रकार के स्वप्न मे भी यह प्रमाणित नहीं होता कि वास्तव मे ही मृत-व्यक्ति की आत्मा

करने के लिए यह दिखाना जरूरी है कि प्रति पक्ष के उक्त ६ दिनों में अधिक स्थानों पर रोग बढ़ा है। नहीं तो तिथि का प्रभाव प्रमाणित न होगा। यह सिद्ध करने के लिए नियमानुसार हिसाब रखने की आवश्यकता है कि स्वप्न में भावी घटना का आभास मिलता है। अतीत-घटना की भांति, स्वप्न में अज्ञात वर्त्तमान और भविष्यत् घटना का आभास मिलना भी सर्वथा असम्भव नहीं है।

के लड़की होगी। गणना निष्फल होने पर ज्योतिषी की बात बिलकुल याद नहीं आती किन्तु मिल जाने पर ज्योतिषी की गणना की तारीफ किया करते हैं। इस प्रकार का मेल ज्योतिषी के कृतित्व का प्रमाण नहीं हो सकता। यदि मैं ज्योतिषी बन कर सभी स्थलों पर कहूँ कि लड़का होगा, तो देखा जायगा कि प्रायः सौ में से पचास जगह मेरी बात सच होगी। कारण, लड़की होने की जितनी सम्भावना है, लड़का होने की भी उतनी ही है। इसलिए सौ में से पचास से अधिक जगहों पर मेरी गणना का मेल न होने पर गणना-शक्ति को नहीं माना जा सकता। गणना या स्वप्न में देखे गए किसी विषय का सच्ची घटना से मेल होने के कारण ही उसे अद्भुत आश्चर्य की बात नहीं माना जा सकता। प्रवासी आत्मीय-स्वजनों की विपद्-आपद के स्वप्न हम प्रायः ही देखा करते है और दैवात् वह किसी जगह सच हो जाय, तो यह नहीं कहा जा सकता कि वह भविष्य-निर्देशक है। ऐसे स्थल पर संभाव्य-गणित[1] के सूत्रानुसार प्रमाण स्थिर करना चाहिए। एक उदाहरण देकर इसे समझाता हूँ। कई लोगों की धारणा है कि वायु-तिथि के हिसाब से घटती-बढ़ती है। स्मरण रखना चाहिए कि वायु दूसरे किसी कारण से या अपने आप भी घट-बढ सकती है। इसलिए यह कहना मुश्किल है कि वह तिथि के प्रभाव से बढ़ी है या आपने आप बढ़ी है। हम अमावस के पहले दिन या दूसरे दिन रोग बढ़ने पर भी उसके मूल में अमावस तिथि का प्रभाव मान लेते हैं और अमावस के दिन बढ़ने की तो बात ही क्या है। वैसे ही एकादशी और पूर्णिमा के समय तीन दिन तिथि का प्रभाव मानते हैं। इससे देखा जाता है कि हम मोट में १५ दिनों के बीच ९ दिनों में रोग बढ़ने पर तिथि के प्रभाव का ही उसका कारण समझते हैं, जो रोग अपने आप घटता-बढ़ता है, उसका भी इन दिनों में घटना-बढ़ना सम्भव है। इसलिए तिथि के प्रभाव को साबित

---

1 Law of Probability.

आई थी। कारण, पास के कमरे में कफन में आग लगने से उसकी रोशनी सोते हुए पिता की आँखों में पड़ जाने से आग लगने के स्वप्न की सृष्टि कर सकती है। शोकार्त पिता के लिए मृत-बालक को पुनर्जीवित देखने की इच्छा स्वाभाविक है। यह अनुमान करना असङ्गत न होगा कि इस इच्छा के कारण ही स्वप्न में बालक का आविर्भाव हुआ है। सम्भव है कि दायित्वहीन व्यक्ति पहरे पर होने के कारण इस दुर्निमित्त कल्पना ने पहले से ही पिता के मन में स्थान कर लिया हो। आज तक मृत-व्यक्ति की आत्मा को देखने के जितने स्वप्नों का विश्लेषण किया गया है, उनमें से एक में भी मृत-व्यक्ति की आत्मा के आविर्भाव को स्वीकार करने की आवश्यकता नहीं हुई।

स्वप्न में मृतव्यक्ति की आत्मा के साथ साक्षात्कार

हमारी आलोचना का यह विषय नहीं है कि मृतव्यक्ति की आत्मा होती है या नहीं और उसे देखा जा सकता है या नहीं। यहाँ इसकी आलोचना की जायगी कि हम स्वप्न मे ऐसी कोई घटना देखते हैं या नहीं जिसकी व्याख्या की जाने पर मृत-व्यक्ति की आत्मा का अस्तित्व स्वीकार कर लेना पड़े। मैं यह नहीं कहता हूँ कि ऐसी घटना कभी हो ही नहीं सकती। किन्तु आज तक इस बात का भी कोई सन्तोष-जनक प्रमाण नही मिला है कि पहले कभी ऐसी घटना हुई है। फ्रयेड की Interpretation of Dreams नामक पुस्तक में एक शिक्षा-प्रद उदाहरण मिल गया है। किसी व्यक्ति का लड़का मर गया। प्रचलित रीति के अनुसार मृत-बालक के चारों ओर मोमबत्ती जलाई गई। रात में मृत-शरीर के पहरे पर एक मनुष्य नियुक्त था। पिता पास के कमरे में सो रहा था। दोनों कमरों के बीच के दरवाज़े ज़रा खुले हुए थे। पिता ने स्वप्न में देखा कि मृत-बालक उनके पास खड़ा हुआ कह रहा है, 'बाबा! बाबा! देखता नहीं, मैं जल रहा हूँ।' पिता की नींद टूट गई, उसने जल्दी से पास के कमरे में जाकर देखा कि जो व्यक्ति पहरे पर था, वह गहरी नींद में सो रहा है। एक जलती हुई मोमबत्ती गिर जाने के कारण कफन में आग लग गई है और उससे मृत-बालक का एक हाथ जल गया है।

सम्भव है, कई व्यक्ति यह कहें कि मृत-बालक की आत्मा ने आकर पिता को सावधान कर दिया था। किन्तु इस प्रकार के स्वप्न मे भी यह प्रमाणित नहीं होता कि वास्तव मे ही मृत-व्यक्ति की आत्मा

को कपड़े के दाम बताने लगता है, त्यों ही सुनता है कि जैसे कपड़े के खरीददाम किसी ने उसे बतला दिए हैं। इसलिए व्यापार में मुनाफा करना उसके लिए असम्भव हो गया है।

आदमी समझदार था। मामला ख़याली है यह वह खुद भी जानता था। किन्तु जब वैसा होता था, तब बात यथार्थ ही जान पड़ती थी। इस आदमी का अपने आप बात सुनना और जागृत या स्वप्नावस्था में प्रत्यादेश सुनने में विशेष अन्तर नहीं है। उक्त रोगी से कई बार पूछने पर मालूम हुआ कि वह 'कोकीनखोर' है। बहुत दिन चिकित्सा करने पर उसका वह कुअभ्यास दूर हुआ था, उसने रोग के हाथ से भी छुटकारा पा लिया था किन्तु यह नहीं कहा जाता है कि इस प्रकार प्रत्यादेश सुनने के मूल में सब जगह कोकीन या गाँजा का नशा होता है। एक प्रकार के पागल होते हैं, वे क्या जागते र क्या स्वप्न में ऐसे ही अपने आप कोई बात या प्रत्यादेश सुना ते हैं। इस श्रेणी के पागलों की संख्या बहुत कम नहीं है। एक बार पागल ने मुझसे आकर कहा था कि मा-काली उसे दुनिया के ापियों को मार कर टुकड़े-टुकड़े कर डालने के लिए लगातार र करती हैं। किन्तु वह यह न समझ सकने के कारण बड़ी-भारी । में पड़ गया था कि कौन पापी है और कौन पुण्यात्मा है। मैं क पागल को जानता हूँ, उस में और कोई पागलपन न होने पर सब समय सुनता था कि जैसे कोई उसे अश्लील बातें कहने बराबर तंग कर रहा है। सम्पूर्ण स्वस्थ अवस्था और पागलपन निर्दिष्ट सीमा-रेखा नहीं खींची जा सकती। इसलिए किसी ; अन्य सब आचरण स्वाभाविक जान पड़ने पर भी वह किसी पय में पागल हो सकता है और इस कारण उसे कई प्रकार कृ भ्रान्ति, अभ्यास या विभ्रम[1] होना कुछ विचित्र नहीं है।

स्वप्न में प्रत्यादेश

प्रायः ही सुना जाता है कि स्वप्न में अमुक को अमुक कार्य करने के लिए आदेश मिला है। साधारणतः यह आदेश किसी देवता या किसी मृत-व्यक्ति की आत्मा की ओर से मिला करता है। कभी केवल 'अमुक काम कर' यही आदेश भर मिलता है। स्वप्न में इस बात का कुछ पता नहीं चलता कि किसने आदेश दिया है। यहाँ इसकी आलोचना न की जायगी कि स्वप्न में देवता या मृत-व्यक्ति की आत्मा किसी प्रकार का आदेश दे सकती है या नहीं। यह देखा जाना चाहिए कि बिना देवता का आविर्भाव माने प्रत्यादेश के स्वप्न की व्याख्या की जा सकती है या नहीं। मैं ऐसे किसी प्रत्यादेश के स्वप्न की बात नहीं जानता हूँ, जिसमें देवता का आविर्भाव निर्विवाद-रूप से सिद्ध हो गया हो। जहाँ तक मैं जानता हूँ, कोई कोई जीवन में केवल एक बार ही प्रत्यादेश का स्वप्न देखते है और कोई कोई फिर प्रायः ही देखा करते हैं। इन शेषोक्त श्रेणी के स्वप्न देखने वालों की संख्या ही अपेक्षाकृत अधिक है। यही नहीं है कि हम केवल स्वप्न में ही देवता का आदेश पाते हों। मैं ऐसे व्यक्तियों को भी जानता हूँ, जो जागृतावस्था में भी कई प्रकार के प्रत्यादेश पाया करते है, कोई कोई सचमुच प्रत्यादेश न पाने पर भी कहा करते हैं कि न मालूम कौन चुपचाप अक्सर उनके कान में कोई बात कह जाता है। कुछ वर्ष पहले एक भला आदमी मेरे पास चिकित्सा कराने के लिए आया। घर-घर फेरी कर के शोख़ रंग के कपड़े-लत्ते बेचना उसका पेशा था। उसने मुझसे कहा कि वह बड़ी मुश्किल में पड़ गया है, कैसे व्यापार करे? वह ज्यों ही ग्राहक

है, वहाँ ऐसी चेष्टा अधिक होती है। जिस रोगी के मन में क्रमागत अश्लील बातें उठने की चेष्टा करती हैं, उसे रात-दिन श्री भगवान् का नाम स्मरण कर के उस अश्लील-भाव को दबा देना पड़ेगा। इस प्रकार के रोगी के लिए स्वप्न में श्री हरिनामसंकीर्त्तन का आदेश पाना कुछ विचित्र नहीं है। और कभी-कभी हमारी कई अवैध और उत्कट इच्छाएँ धर्मानुष्ठान के आवरण मे चरितार्थ होती हैं। कई मनोवैज्ञानिकों के मत से, धर्मानुष्ठान के मूल में वीभत्स इच्छाएँ वर्त्तमान होती हैं। भारतवर्ष के कई पुण्यतीर्थों में मन्दिरों पर अश्लील मूर्त्तियाँ खोदी हुई हैं। शास्त्रकारों ने भी मन्दिरों पर अश्लील मूर्त्तियाँ बनवाने का आदेश दिया है। किन्तु ऐसा करने से उद्देश्य या सार्थकता के सम्बन्ध कोई सन्तोष-जनक व्याख्या नहीं मिलती। कई प्रकार की असत् प्रवृत्तियों के अवदमन से ही धर्म्मानुष्ठान की उत्पत्ति है। इसे मान लेने पर क्यों मन्दिरों पर अश्लील मूर्त्तियाँ होती हैं, यह आसानी से समझ में आ जायगा। जैसे शत्रु-विजय के स्तम्भ पर शत्रु और विजेता दोनों की ही मूर्त्तियाँ खोदी हुई देखी जाती हैं, वैसे ही धर्म्म की मूलगत असत् प्रवृत्तियों का प्रतीक और देवता दोनों ही मन्दिर में प्रतिष्ठित होते हैं, किसी किसी स्थल पर देवता की (जैसे महादेव जी की) मूर्त्ति ही लिङ्ग मूर्त्ति है।

पाठकों ने यह देखा है, यह कोई बात नहीं है कि मन में असत् प्रवृत्तियों के होने से असत् कार्य्यों का ही प्रत्यादेश होता हो, उसके कारण धर्म्मानुष्ठान का प्रत्यादेश मिलना भी सम्भव है। असत् कार्य्य-मूलक प्रत्यादेश की बात साधारणतः हमारे कानों तक नहीं पहुँचती, इसलिए जन-साधारण की धारणा है कि प्रत्यादेश केवल सत्-कार्य्य-मूलक होते हैं।

मनोविकार प्रायः वंश-गत होता है। इसलिए अनुसन्धान करने पर पागल के आत्मीय-स्वजनों या पूर्व-पुरुषों में कई प्रकार की मानसिक व्याधियों का परिचय मिलता है। यदि स्वप्नादिष्ट व्यक्ति के वंश परिचय की आलोचना की जाने पर किसी मानसिक व्याधि का परिचय मिले, तो स्वप्न-द्रष्टा का भी उस मानसिक विकार से ग्रसित होना सम्भव है, इस बात को भूलना न चाहिए। इसलिए ऐसे स्थलों पर प्रत्यादेश देवता के मुँह से निकला हुआ नहीं हो सकता। कई अवरुद्ध इच्छाएँ कार्य में परिणित होने के लिए मन पर प्रभाव डाल सकती हैं और ऐसी इच्छाओं का प्रत्यादेश-रूप में और स्वप्न में प्रकाशित होना सम्भव है। पाठक शायद आपत्ति करेंगे कि असामाजिक इच्छाएँ ही तो अवरुद्ध होती हैं, किन्तु हम जो प्रत्यादेश पाते हैं वे पुण्यकर्म-मूलक होते हैं। यहाँ यह स्मरण रखना चाहिए कि प्रत्यादेश केवल अच्छे कामों के लिए ही नहीं मिलते। ऊप[illegible] एक रोगी की बात आई है, उसे केवल अश्लील बातें कहने का ही प्रत्यादेश मिलता था। अनुकर्षी-वायु[1] नामक एक प्रकार की मानसि[illegible] व्याधि है। इस रोग से आक्रान्त होने पर रोगी के मन में कि[illegible] कार्य-विशेष को करने की दुर्दमनीय इच्छा हुआ करती [illegible] रोगी वास्तव मे ऐसी इच्छा को दमन करने के लिए [illegible]रते चेष्टा करता है। किन्तु सब समय कृतकार्य नहीं हो सक[illegible] जैसे, चलते समय विचार हुआ कि रास्ते में पड़ने-वाले [illegible] गैस-पोस्ट को छूकर चलना चाहिए। और किसी को [illegible] हो गया कि १०८ गिने बिना चलने पर जरूर किसी तकलीफ़ [illegible] जाऊँगा। रोगी को कहीं जाने की ताकीद होने पर भी उस का[illegible] नहीं, वह १०८ गिने बिना नहीं जा सकता। रोगी हज़ार [illegible] करने पर भी ऐसे कार्य से अपने आपको छुटकारा नहीं [illegible] सकता। जिन स्थलों पर कार्यगत इच्छा असामाजिक [illegible]

1. Compulsion Psychoneurosis

केवल विश्वास के बल पर ही किसी रोग का आरोग्य होना सम्भव है—इसे सभी जानते हैं। इसलिए कोई कारण नहीं कि रोग मिटने के मूल में स्वप्नाद्य औषध की कार्य-कारिता स्वीकार ही करनी पड़े। अनुसन्धान करने पर पाठकों को मालूम हो जायगा कि कई स्थलों पर स्वप्नाद्य औषध से कोई फल नहीं होता। हम बातें करते समय इन घटनाओं को भूल जाते है। मैं ऐसी घटनाएँ भी जानता हूँ, जिन में श्री तारकनाथ जी की औषध प्राप्त हुई है तथा नियम पालन किये जाने पर भी कुछ फल न हुआ। स्वप्नाद्य औषध से रोग मिटना बहुत मामूली बात होने पर भी यदि वास्तव में ही स्वप्न में औषध हस्तगत होते देखा जाय, तब उसे अतिप्राकृत-घटना ही माननी पड़ेगी। पाठक भूलेंगे नहीं कि देवताओं से भी व्यापार किया जाता है। देवस्थान का महात्म्य प्रचार करने के उद्देश्य से भी अनेक समय महन्त या देवता के अधिकारी छल-कला का आश्रय लेते हैं। चिन्ता-पीड़ित उपवास-क्लिष्ट श्रान्त-क्लान्त निद्रित-रोगी के हाथ में औषध देकर कृत्रिम स्वप्नादेश दिखाना सर्वथा असम्भव नहीं। अत्यन्त निद्रातुर व्यक्ति के कान में कुछ कह उसके हाथ में औषध देने पर उसे जगने पर यह मालूम होना सम्भव है कि उस ने स्वप्न में प्रत्यादेश सुना है। विशेषतः वह यदि प्रत्यादेश की आशा रखता हो, तब इस प्रकार के भ्रम की सम्भावना ही अधिक है। जागृतावस्था में हाथ में औषध देख कर उसे और भी दृढ़ विश्वास हो जायगा। इस बात के बहुत प्रमाण मिलते है कि हम सुप्तावस्था मे दूसरों की बातें सुन सकते है। पाठक स्मरण रक्खेंगे कि सभी स्थलों पर इस प्रकार औषध पाने के मूल में चातुरी होती है, मेरे कहने का मतलब यह नहीं है।

चातुरी की बात को छोड़ देने पर भी स्वप्न में कोई वस्तु पाना या उस का पता लगना सम्भव है, अब यहाँ इसे ही समझाऊँगा।

स्वप्न में द्रव्यलाभ

कोई कोई कहते हैं कि उन्होंने स्वप्न के आवेश में कई-बार कई वस्तुएँ प्राप्त की हैं। स्वप्न में देखा कि अमुक वस्तु अमुक स्थान पर है। जगने पर स्वप्न-द्रष्टा ने वहाँ जा देखा कि वास्तव में स्वप्न-दृष्ट वस्तु वहाँ है। रोगी ने देवता के स्थान पर 'हत्या दी'; स्वप्न देखा कि देवता ने उसके हाथ में औषध दी है। रोगी ने जगने पर देखा कि उसके हाथ की मुट्ठी में कोई औषध है। स्वप्न में प्राप्त औषध आदि पर कई मनुष्यों को विश्वास है। जो बिना मूल्य या मूल्य के बदले में स्वप्नाद्य औषध आदि वितरण करते हैं, वे सम्पूर्णतया स्वप्न में प्राप्त हुई होती हैं, सो नहीं। औषध की मध्यस्थित औषधियों के नाम स्वप्न में प्राप्त होने के बाद में स्वप्नाद्य औषध तैयार की जाती है। स्वप्न में किसी औषध का नाम मालूम होना बहुत मामूली बात है। इसलिए स्वप्नाद्य औषध के सम्बन्ध में विशेष आलोचना करने की कोई जरूरत नहीं। यह बात मैं भी मानता हूँ कि स्वप्नाद्य औषध से रोग मिटता है। सम्भव है, कई पेटेन्ट औषधियों के व्यवसायी यह स्वीकार करेंगे कि केवल जल में जरा-सा नमक मिला उसे 'सर्व्व-व्याधि-हर अव्यर्थ औषध' के रूप में प्रचार करके उन्होंने प्रचुर अर्थोपार्ज्जन तो किया ही है, साथ साथ अनेक गण्यमान्य व्यक्तियों से रोग-आरोग्य के उत्तमोत्तम प्रशंसापत्र भी प्राप्त किए है। साधारण-जनता की धारणा है कि दैवदुर्विपाक से रोगों की उत्पत्ति है और औषध सेवन आदि से वे मिट जाते है। रोग आप-से-आप मिट जाने पर भी औषध की प्रशंसा होती है। किसी औषध-विशेष पर प्रबल विश्वास होने पर

पड़ी हुई है। यह घटना उसके मन से लोप हो गई। कुछ दिन बाद स्वप्न में देखकर उसी मूर्ति का उद्धार करना सम्भव है। नींद की झोंक में चलना-फिरना या काम-काज करना बहुत मामूली बात है। इसे नींद में बहकना या स्वप्न-विचरण[1] कहते हैं। नींद की झोंक में जो कुछ किया जाता है, उसे हम बिलकुल भूल जाते है। निद्रित-दशा में कोई वस्तु लाये या कहीं रख दी, उसी दिन या और किसी दिन उसके सम्बन्ध मे स्वप्न देखना असम्भव नहीं है। स्वप्न मे औषध पाने के मूल में अनेक स्थलों पर ऐसा स्वप्न-विचरण भी सम्भव है।

स्वप्न में अति-प्राकृत घटना के समावेश के सम्बन्ध में बहुत-कुछ कहा जा चुका है, किन्तु इस सम्बन्ध में सच्ची बातों का पता लगाने के लिए बहुत खोज-पड़ताल और छान-बीन करने की ज़रूरत है और यह किसी एक व्यक्ति के किये से होने की नहीं। मोटे तौर पर कहा जा सकता है कि स्वप्न में अतिप्राकृत विषय का अस्तित्व सर्वथा असम्भव न होने पर भी वह आज तक निःसंशय प्रमाणित नहीं हुआ है।

---

1 Somnambulism.

मैं एक हिस्टिरिया-रोग ग्रस्त स्त्री की चिकित्सा के लिए बुलाया गया। स्त्री प्रायः दश वर्ष से बीमार थी। उसे प्रायः ही बेहोशी होती थी और बहुत देर तक वह बेहोश पड़ी रहती थी। एक कवच धारण करने से उस का रोग मिट गया था। वह प्रायः तीन वर्ष तक अच्छी ही थी। हठात् एक दिन कवच खो गया, साथ साथ रोग भी दुबारा दिखाई पड़ा इस प्रकार कुछ दिन चलता रहा, बाद में मुझे चिकित्सा का भार सौंपा गया। कुछ दिन चिकित्सा करने पर रोगिणी ने स्वप्न देखा कि भंडार में एक पुरानी हाँडी में उसका खोया हुआ कवच पड़ा है। सचमुच ही दूसरे दिन उस हाँडी में कवच मिला और उसे धारण करने से रोग फिर मिट गया। मैं ने रोगिणी के स्वामी से कहा कि रोग मिटा नहीं है, केवल कुछ दिन के लिए दब गया है। इसलिए चिकित्सा जारी रखना उचित है। चिकित्सा जारी रही। कुछ दिन बाद पुनः मूर्छा के आक्रमण के पूर्व-लक्षण दिखाई पड़े। मैंने रोगिणी के स्वामी से कहा कि फिर कवच खो जाने की सम्भावना है, कारण, कवच पर विश्वास होने से कवच धारण की अवस्था में दौरा न होगा और मालूम होता है कि दौरा ज़रूर होगा। कवच पर विश्वास बना रहने के लिए केवल यही हो सकता है कि वह फिर खो जाय। मेरी बात सच हुई। कुछ दिन बाद फिर कवच खो गया—साथ-साथ रोग भी दिखाई पड़ा। यह बात न थी कि रोगिणी ने जान-बूझ कर कवच खो दिया था। उसे किसी अज्ञात-इच्छा ने ही असावधान करके कवच खोने का मौक़ा दिया था। ऐसे स्थल पर खोया हुआ कवच कहाँ है, उसे रोगिणी का अज्ञात-मन जानता था। मैंने विशेष उपाय से रोगिणी की लुप्त-स्मृति को जगाने की चेष्टा की, उससे कहा कि तुम स्वप्न में यह फिर जान जाओगी, कवच कहाँ है। वही हुआ। कवच फिर मिल गया। स्वप्न में खोई हुई वस्तु का पता मिलना या किसी नई वस्तु के सम्बन्ध में ज्ञान होना असम्भव नहीं। किसी ने अन्यमनस्क-भाव से देखा कि किसी स्थान पर कोई देव-मूर्ति

उसके विरह में दुखी होता है ? बछड़ा मर जाने पर गाय को जो कष्ट होता है, वही कैसे सम्भव है ? बहुत दिन न देखने के बाद हठात् मालिक को देखकर कुत्ता उसे पहचान लेता है, वह स्मृति की सहायता से नहीं। प्रतिदिन मालिक को देखने से कुत्ते को एक अभ्यास हो जाता है। मालिक को देखने-रूपी अभ्यस्त उद्दीपक[1] का अभाव अनुभव करके उसे कष्ट होता है। यह अनुमान करने का कोई कारण नहीं कि मालिक की मूर्ति मन मे उठने से उसे कष्ट होता है। बहुत दिन बाद मालिक को देखते ही अभ्यस्त उद्दीपक पाकर उसका मन आनन्द से भर जाता है। मनुष्य जिस प्रकार परिचित व्यक्ति को पहचान सकता है, यह बात वैसी नहीं है। प्रतिदिन पुलाव खाने का अभ्यास होने से, पुलाव न मिलने पर कष्ट हो सकता है और फिर उसे पाने से आनन्द होना सम्भव है—तथापि ऐसे समय कष्ट और आनन्द के साथ सभी समय पुलाव का प्रति-रूप नहीं लगा होता। यह सत्य है कि बछड़े के वियोग में गाय के दारुण-शोकचिन्ह प्रकाशित होते है, किन्तु उस अवस्था में यदि उसके सन्मुख चमड़े में भूसा भर कर एक नक़ली बछड़ा खड़ा किया जाय, तो उसी समय उसका शोक दूर हो जायगा, वह नक़ली बछड़े को असली जान कर आनन्द से उसका शरीर चाटने लगेगी। यदि उस नक़ली बछड़े का चमड़ा फट जाने से कहीं से भूसा निकलता हो, तो वह उस भूसे को भी बड़ी ख़ुशी से खाने लगेगी। इस प्रकार की घटना से मनोवैज्ञानिक अनुमान करते हैं कि दूसरे प्राणियों के मन मे प्रति-रूप उदित नहीं होते। दूसरे प्राणियों की जिस बुद्धि का परिचय मिलता है, वह भी मनुष्य की बुद्धि के अनुरूप नही है। कारण, दूसरे प्राणियों के बुद्धि-प्रसूत कार्यों में भी किसी प्रति-रूप-संयुक्त चिन्ता का अस्तित्व प्रमाणित नहीं होता। सरकस के जीव-जन्तु बुद्धिमानी के जो खेल दिखाते है, वे भी सच्ची बुद्धि के परिचायक नहीं हैं। अभ्यस्त कार्यों के सामान्य परिवर्तन मे उनकी बुद्धि काम नहीं करती।

---

1 Stimulus.

दूसरे प्राणियों के स्वप्न

इस सम्बन्ध में मनोवैज्ञानिक एकमत नहीं हैं कि मनुष्यों के अतिरिक्त दूसरे प्राणी भी स्वप्न देखते हैं। अधिकांश मनोवैज्ञानिकों के मत से दूसरे प्राणी प्रत्यक्ष की अनुभूति द्वारा चालित होते हैं। खाने की वस्तु को देख खाने को दौड़ते हैं। शत्रु को देखकर या उसके पैरों की आहट पाकर भाग जाते हैं। अनेक स्थलों पर मनुष्य के कार्य भी इसी प्रकार के होते हैं, किन्तु वह साधारणतः चिन्ता-द्वारा नियन्त्रित होता है। भूख के समय भोजन न मिलने पर वह कैसे मिलेगा, कहाँ जाना होगा, इत्यादि चिन्ताएँ मनुष्य के मन में उदित होती हैं। विश्लेषण करने पर देखा जाता है कि दार्शन, श्रावण, आदि प्रति-रूपों से उसकी चिन्ता गठित है। किसी वस्तु या घटना के अवर्त्तमान में मन में उसके प्रति-रूप की कल्पना करके चिन्ता करना ही मनुष्य की विशेषता है। मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता कि दूसरे प्राणियों के मन मे भी इसी प्रकार प्रति-रूप उठते है। जिस विषय में निर्दिष्ट प्रमाण न मिलें, वैज्ञानिक उसे मानने के लिए तैयार नहीं। दूसरे प्राणियों के मन में प्रति-रूप न उठने के कारण, उनका स्वप्न देखना असम्भव है। इतना ही नहीं, प्रति-रूप के अभाव में स्मृति तक नहीं हो सकती। ज्योंही किसी विषय की स्मृति हमारे मन में होती है, त्योंही उस विषय का प्रति-रूप हमारे मन में उदित होता है। यह आपत्ति उठेगी कि जब दूसरे प्राणियों के मन में प्रति-रूपों के अभाव के कारण स्मृति का अस्तित्व न माना जायगा, तब कैसे कुत्ता बहुत दिन बाद अपने पुराने मालिक को देख पहचान लेता है? कैसे वह

नहीं जगते ? सोते हुए कुत्ते को देखने पर कई बार ऐसा आचरण देखा जाता है कि उससे धारणा होती है, उसके मन में ख़ास-ख़ास प्रति-रूप उठते हैं। इस अवस्था में मैं यह कहने को तैयार नहीं कि दूसरे प्राणी स्वप्न नहीं देखते। सम्भव है कि उनके स्वप्न मनुष्यों के स्वप्नों की भाँति जटिल न हों। भूखा कुत्ता खाने का स्वप्न देख सकता है, सम्भवतः वह भय का स्वप्न भी देखता है किन्तु इस सम्बन्ध में कुछ भी निश्चित-रूप से कहने का उपाय नहीं है।

किन्तु मैं सर्वांश में इस मत का समर्थन नहीं कर सकता। यह भी तो नहीं कहा जा सकता कि मनुष्य की चिन्ता में सभी स्थलों पर प्रतिरूप उठता है। हम किसी दूसरे के मन की कोई बात प्रत्यक्ष-रूप से नहीं जान सकते। व्यवहार या भाषा से वह जो व्यक्त करता है, केवल उसी से उसके मन के भावों का अनुमान किया जा सकता है। किसी को उत्तेजित अवस्था में दूसरे किसी व्यक्ति को मारते देखकर यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि वह क्रोधवश ही ऐसा करता है। उसकी बात पर ही निर्भर हो कहना पड़ता है कि उसे क्रोध आया था। यह बात या भाषा में भाव-प्रकाशन अन्ततः एक आचरण-मात्र है। भाषा के द्वारा मन के यथार्थ भावों का निरूपण करना भी अनुमान सापेक्ष है और भाषा के बिना अन्य आचरणों से भी मन के भावों का अनुमान किया जाना सम्भव है, किन्तु किसी स्थल पर भी निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता। किसी मनुष्य ने परिचित मित्र को देखकर नमस्कार किया और कुत्ते ने पुराने मालिक को देखकर पूँछ हिलाई। ये दोनों आचरण एक समान हैं। मनुष्य के मन में स्मृति जगी और कुत्ते के मन में नहीं जगी—यह बात ठीक नहीं भी हो सकती है। कोई व्यक्ति सन्तान-वियोग से शोकाभिभूत हुआ। गुरु ने आकर उसे बाल-गोपाल की सेवा दी। बाल-गोपाल की मूर्ति को पाकर उसका पुत्र-शोक प्रशमित हुआ। यह घटना और नक़ली बछड़ा देखकर गाय का शोक-प्रशमन क्या एक ही नहीं है? बाल-गोपाल की मूर्ति का रंग उतर जाने पर रंग करने वाले को बुलाकर उसका संस्कार कराना और गाय का नक़ली बछड़े के अन्दर का भूसा खाना—एक ही प्रकार का आचरण है। यदि पशु के ऐसे आचरण में प्रति-रूप के अस्तित्व का अभाव मानेंगे तो फिर मनुष्य के सम्बन्ध में ही उसका अस्तित्व निश्चयपूर्वक कैसे मान लेंगे? कभी-कभी कुत्ता काल्पनिक शत्रु पर आक्रमण करता है, क्यों विपद के कारण को प्रत्यक्ष किये बिना ही वह भयभीत होता है। कौन कह सकता है कि उसके मन में प्रति-रूप